aj Foundation Che

नामदेव रचनावली

गोविंद रज

ain. Gurukul Kangri C

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोविंद रजनीश

नामदेव रचनावली

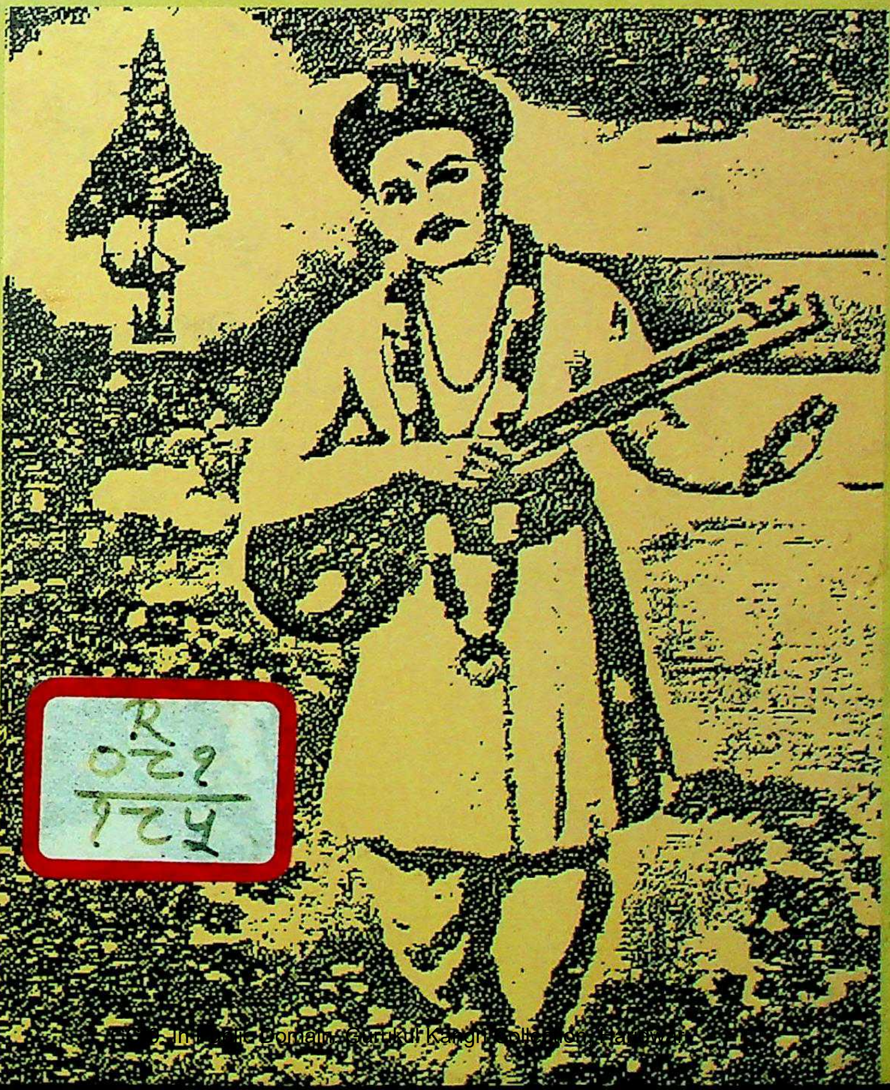

R
0२१
१८५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R
०८१
१८५

135466

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० गोविंद रजनीश

जन्म

10 सितंबर, 1938 को राजस्थान के वैर कस्बे में

शिक्षा

राजस्थान विश्वविद्यालय से एम०ए०
आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० और डी०लिट्०

सैंतीस वर्षों तक विश्वविद्यालयों में अध्यापन
1 जुलाई, 1999 को प्रोफेसर-पद से सेवानिवृत्त

इस दौरान उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा-सलाहकार तथा क० मुं० हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ के निदेशक रहे। जाने-माने साहित्यकार। तीस पुस्तकें प्रकाशित। पत्र-पत्रिकाओं के लिए नियमित लेखन

प्रमुख रचनाएँ

आलोचना

...न हिंदी कविता की संवेदना', 'साहित्य का सामाजिक यथार्थ', ...मसामयिक हिंदी कविता : विविध परिदृश्य', 'रांगेय ...' 'नयी कविता : परिवेश, प्रवृत्ति और अभिव्यक्ति'

संपादन

...वली', 'रैदास रचनावली', 'नामदेव ... रचनावली', 'हिंदी की आदि ...याँ'

...र्वी अंचल

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R
079
185
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या ....
आगत संख्या 135466

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामदेव रचनावली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरसत्य प्रकाशन
प्रीत विहार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामदेव रचनावली

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

संपादन

डॉ० गोविंद रजनीश

135466

135466

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ISBN—81-88466-27-1

© डॉ० गोविंद रजनीश

प्रकाशक
अमरसत्य प्रकाशन
109, ब्लाक बी, प्रीत विहार
दिल्ली-110092

प्रथम संस्करण
2003

आवरण
रवि शर्मा

मूल्य
दो सौ रुपये

मुद्रक
बी०के० ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

NAAMDEV RACHANAVALI (Hindi)
Ed. by Dr. Govind Rajneesh
Price : Rs. 200.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

जीवन-वृत्त ... 17
प्रस्तुत संस्करण ... 27
नामदेव की आध्यात्मिक मान्यताएँ ... 38
नामदेव : समकालीनों व परवर्ती रचनाकारों की दृष्टि में ... 50

पद-संग्रह : राग टोड़ी **53-67**

1. हरि नांउं हीरा हरि नांउ हीरा ... 53
2. रांम नांम खेती रांम नांम बारी ... 53
3. रांम सौ धंन ताकै कहा अब थोरौ ... 53
4. मंझा प्रांन तू बीठला ... 54
5. रांम रमें रंमि रांम संभारै ... 54
6. रांम बोलै रांम बोलै ... 54
7. रांम सनांमां रांम हीं नांमां ... 54
8. जन नांमदेव पाया नांउं हरी ... 55
9. रांम नांम जपिबौ श्रबननि सुनिबौ ... 55
10. धिग्र ते बकता धिग्र ते सुरता ... 55
11. आपनां पयांनां रांम आपनां पयांनां ... 55
12. तू अगाध बैकुंठनाथा ... 56
13. सबै चंतुरता बरतैं अपनीं ... 56
14. तेरी तेरी गति तूं हीं जांनैं ... 56
15. मैं अपराधी बाप मैं अपराधी ... 56
16. लोग एक अनंत बांणीं ... 57
17. लोग कहै लौकांइ रे नांमां ... 57
18. का करौं जाती का करौं पाती ... 57
19. अैसैं मन रांम नांमैं बेधिला ... 58

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

20. का नाचीला का गाईला ... 58
21. रांम ची भगति दुहेली रे बापा ... 59
22. जौ लग रांम नांमैं हित न भयौ ... 59
23. काहे कूं कीजै ध्यांन जपनां ... 59
24. भगत भला बाबा काडला ... 59
25. साच कहूं तौ जीव जग मारै ... 60
26. साईं मेरौ रीझै साचि ... 60
27. रतन पारिखू नीरा रे ... 60
28. कोन कै कलंक रह्यौ रांम नांम लेत ही ... 61
29. रांम नांम नरहरि श्री बनवारी ... 61
30. रांम जुहारि न और जुहारूं ... 61
31. जा दिन भगता आईला ... 61
32. संत सूं लीणां संत सूं दीणा ... 62
33. परहरि धंधाकार सबैला ... 62
34. माइ तूं मेरे बाप तूं ... 62
35. माइ गोब्यंदा बाप गोब्यंदा ... 62
36. हिरदै माला हिरदै गोपाला ... 62
37. अब न बिसारूं रांम संभारूं ... 63
38. रांम राइ उलगूं और न जांचू ... 63
39. बीहूं बीहूं तेरी सबल माया ... 63
40. बाजी रची बाप बाजी रची ... 63
41. तूं न बिसारि तू न बिसारि ... 63
42. बाप मंझा समझि न परई ... 64
43. कैसैं तिरत बहु कुटिल भर्‌यौ ... 64
44. काल भै बाण सह्या न जाई ... 64
45. गरुड़ मंडल आव ... 65
46. सहजैं सहजैं सब गुण गईला ... 65
47. कैसैं न मिलै रांम रूढा मोटा ... 65
48. कहा करौं जग देखत अंधा ... 65
49. चूकि भजीला चूकि भजीला ... 66
50. रांमैं नांमैं केलि अंम्रित बांनी ... 66

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

51. ऐहडी भगति चै निरबांण ... 66
52. कांइ रे बकबादु लाइओ ... 66
53. तीनि छंद खेलु आछै ... 67

राग गुंड 67-77

54. देवा तेरी भगति न मोपैं होइ जी ... 67
55. भगति आपि मोरे बाबुला ... 67
56. संसार समंदे तारि गोब्यंदे ... 68
57. तुझ बिन क्यूं जीउं रे ... 68
58. बंदे की बंदि छोडि बनवारी ... 68
59. देवा मेरी हीन जाती हो ... 69
60. हरि नांउं गाजै हरि नांउं राजै ... 69
61. इतना कहत तोहि कहा लागत ... 69
62. बोलि धूं त्रिबांणैं पद रांम नांम ... 70
63. सेविये गोपाल राइ अकल निरंजन ... 70
64. अैसैं रांम हिं जानूं रे भाई ... 71
65. अैसैं रांम अैसैं हेरौ ... 71
66. पांनियां बिन मीन तलपै ... 72
67. अनबोलता चरन नहीं छाडूं ... 72
68. जत्र जांऊं तत्र बीठल भैला ... 72
69. कांइ मन बिषिया बनि जाइ ... 73
70. अपने रांम कूं भजि रे मन आलसिया ... 73
71. मन थिर होइ बारे न होइ ... 74
72. देव्वा बेनु बाजै गगन गाजै ... 74
73. देवा गगन गूडी बैठी ... 75
74. जोगी जन न्याइ जुगे जुगि जीवै ... 75
75. लटकि न बोलूं बाप बर्तमान गाढा ... 75
76. देवा तेरा नींसांण बाज्या हो ... 76
77. संत प्रवेनी भगति आपिला ... 77
78. सुनि भाई महिमां नांम तनी ... 77
79. पायौ मैं राम सजीवनि मूरि ... 77

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राग सोरठि 78-81

८0. याही गोब्यंदा चरन मेरौ जीयरौ बसै रे ... 78
८1. मोकउ मिलिओ रामु सनेही ... 78
82. देवा नटणीं कौ तन मन ... 78
83. भाई रे भरंम गया भौ भागा ... 79
84. जहां तहां मिल्यौ सोई ... 79
85. बीठल भंवरा कंवल न पावै ... 79
86. रे मन पड़सि भोला पंजरै ... 80
87. जाबा न देख्यूं हौ नृहरी ... 81
88. नादि समाइलो रे ... 81
89. हमरै बेढी प्रान अधारा ... 81

राग गौड़ी 82-85

90. अद्‌भुत अचंभा कथ्या न जाइ ... 82
91. देवा आज गुडी सहजि ऊडी ... 82
92. देवा पाहन तारीअले ... 82
93. काहे रे मन भूला फिरई ... 83
94. रांम नामैं बोलि त्रिबांण बांणीं ... 83
95. मेरी कौंन गति गुसांई ... 83
96. डोल चै डोला कांन्हां ... 83
97. अैसे जग थैं दास नियारा ... 84
98. ऐकै बिठूला सरणैं जाइ रे ... 84
99. येबड़ी सीमूंनैं बुधि आवड़ी ... 85

राग मालवा 85

100. कहि मन गोब्यंद गोब्यंदा ... 85

राग रामगरी (रामकली) 85-95

101. सुमरि हरि हरि सूं चित लाइ ... 85
102. लाधो तौ लाधौ रे, मैं रांम नांम लाधौ ... 86
103. बाद छाडि रे भगता भाई ... 86
104. हरि लै हरि लै हरि लै हरी ... 86

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

105. छाडि छाडि रे मुगध नर कपट न कीजै ... 87
106. रांम भगति बिन गति न तिरन की ... 88
107. कांइ रे भूले मूंढे जनां ... 88
108. तुम्ह देवा हरि तुम्ह देवा ... 89
109. तू आव कलंद्र केसवा ... 89
110. बैश्नौं ते मैं मैं ते बैश्नौं ... 90
111. माधौ भीतरि मार दुहेली ... 90
112. अवधू बेली बिरधि करैली ... 91
113. अनेक मरि मरि जांहिगे रे अवधू ... 91
114. बैरागी रांमहि गाऊंगा ... 91
115. पावैंघे पावैंघे सहजैं मुरारी ... 92
116. पुरिष हाजिर बरन नांहीं ... 93
117. देवा पातुरि बाजै मांदल नाचै ... 93
118. आज कोई मिलिसी रे मूनैं रांम सनेही ... 93
119. नांरांइण सूं मन नहीं रंजै ... 94
120. मन मंझा तूं गोब्यंद चरन चित लाइ रे ... 94
121. पांडे देह अरथ लगाइ ... 94

राग आसावरी 95-96

122. जोगिया जिनि खरचसि दांमां ... 95
123. झिलि मिलि झिलि मिलि झिलि मिलि तारा ... 95
124. त्रिवेणी पिराग करहु मन मंजन ... 95
125. माधौ जी माया मिलण न देई ... 96
126. धीरैं धीरैं खाइबौ कथन न जाइबौ ... 96
127. संसार साग्र विष कौ बना ... 96

राग वसंत 96-98

128. माधौ माली एक सयांनां ... 96
129. काल न्याइ बिचारि हौ ... 97
130. तेरी भगति न छोडउ भावै लोगु हसै ... 97
131. जैसे पनकत थ्रू टिटि हांकती ... 97

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राग ललित 98-99

132. जांणौं नैं जांणौं नैं बेद पुरांना ... 98
133. जब तब रांम नांम निस्तारै ... 98
134. बाप जी एतलौं अंतरौ कीधौं ... 99

राग भैरव 99-107

135. नांमदेव प्रीति नरांइण लागी ... 99
136. नांइ तिरूं तेरे नांइ तिरूं ... 99
137. भगवंत भगता नहीं अंतरा ... 100
138. रांम रांम रांम रांम जपिबौ करै ... 100
139. जिभ्या बोलहि तौ रांमहि बोलि ... 101
140. जपि रांम नांम मंत्रावला ... 101
141. मैला मलिता सब संसार ... 101
142. जागि रे जीव कहा भुलांना ... 101
143. छांडि रे मन हमिता ममिता ... 102
144. हरि भजि हरि भजि हरि भजि मूल ... 102
145. जे न भजैं नर नारांयणां ... 102
146. आन न जांणौं देवी न देवा ... 103
147. पांडे मोहि पढ़ावहु हरी ... 103
148. रांम नांम मेरे पूंजी धनां ... 103
149. रांम नांम मैं प्यंड पखाल ... 103
150. हरि दरजी का मरम न पाया ... 104
151. दूधु पीउ गोबिंदे राइ ... 104
152. भले निंदउ भले निंदउ ... 104
153. जिउ रामु राखै तिउ रहीऐ रे भाई ... 104
154. हीनड़ी जाति मेरे जादभ राइआ ... 105
155. पापी का घरु अगने माहि ... 105
156. नामा सुलताने बाधिला ... 105
157. सति सति सति सति सति गुरदेव ... 106
158. रंगीले जिहबा हरि कै नाइ ... 107

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राग कानड़ौ 107-109

159. तूं मेरौ ठाकुर तूं मेरौ राजा ... 107
160. द्रुबल गरीबा रांम कौ ... 108
161. तुम्हारी क्रिपा बिना न पाईये ... 108
162. तिहि गावै दास नांमां ... 108
163. ऐसो रांम राइ अंतरजामी ... 109

राग मारू 109

164. राजा राम जपत को को न तरिओ ... 109

राग मारू खमाइची 109

165. धनि दिहाड़ौ धनि घड़ी ए ... 109

राग प्रजिपौ 110

166. लागी जनम जनम नीं प्रीति ... 110

राग कल्याण 110

167. नाचि रे मन राम कै आगैं ... 110

राग केदारौ 110-111

168. माधौ कैसें कीजै जोग ... 110

राग मालीगोड़ा 111-113

169. हमारै गोपाल राजा गोपाल राजा ... 111
170. जपि रांम महामंत्र रांम महा ... 111
171. गुड़ मीठा रांम गुड़ मीठा ... 111
172. रांम गोब्यंदा कमौदनी चंदा ... 112
173. सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ... 112
174. धनि धनि ओ राम बेनु बाजै ... 112
175. मेरो बापु माधउ तू धनु केसौ ... 113

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राग सारंग 113-114

176. बदहु कीन होड माधउ मो सिउ ... 113
177. दास अनिंन मेरो निज रूप ... 113
178. भइया कोई भूलै रे रांम नांम ... 114

राग मल्हार 114-115

179. मो कउ तूं न बिसारि ... 114
180. गोब्यंद राखहु चरननि तीर ... 114

राग धनाश्री 115-119

181. कपटै नहीं मिलै रे, गोब्यंदौ गुण साग्र गोपाल ... 115
182. हो बाल सनेही गोब्यंदा, अब जिनि छाडौं मोहि ... 115
183. हमारै करता रांम सनेही ... 116
184. तेरा नामु रुड़ो रूपु रुड़ो ... 116
185. पहिल पुरसाबिरा, अथोन पुरसादमरा ... 117
186. पाछे बहुरि न आवनु पावउ ... 118
187. मेरे माथे लागीले धूरि गोबिंद चरनन की ... 118
188. कहा लै आरती दास करै ... 118
189. आरती पतिदेव मुरारी ... 119

राग प्रभाती 119-120

190. बेधीअले गुपाल गोंसाई ... 119
191. गोबिंदु गाजै सबदु बाजै ... 120
192. जीअ की जोति न जानै कोई ... 120

राग आसा 120-121

193. सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है ... 120
194. झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना ... 121

राग रामकली 121

195. रांम कोइ न किस ही केरा ... 121

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राग गूजरी 121-122

196. तूं हरि भजु मन मेरे पद निरबानु ... 121
197. कउणु कहै किणि बूझी ए ... 122

राग तिलंग 122-123

198. मैं अंधुले की टेक तेरा नाम खुंदकारा ... 122
199. हले यारां हले यारां खुसिखबरी ... 123

राग बिलावल 123

200. राम नाम बिनु जीवनु मन हीना ... 123

राग गोंड 123-124

201. ऐसे रामा ऐसे हेरउ ... 123
202. मोकउ तारि ले रामा तारि ले ... 124
203. हरए नमसते हरए नमह ... 124
204. हउ तउ एक रमईआ लैहउ ... 124

राग बिलावल गोंड 125

205. आजु नामे बीठलु देखिआ ... 125

स्फुट पद 125

206. भाई रे इन नैननि हरि पेखो ... 125
207. अस मन लाव रांम रसना ... 125

राग रामकली 126-130

208. तत्त कहन को रांम है, भजि लीज्यौ सोई ... 126
209. सावध सावध भज ले राजा ... 126
210. ज्यों कोई वसुधा दान दे आवे ... 127
211. जहाँ तुम तरुवर तहां मैं पंछी ... 127
212. हम तो भूले, ठाकुर जाने ... 127
213. भले बिराजे लंबकनाथ ... 128

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

214. राम विट्ठला देव विट्ठला ... 128
215. राम नाम बीन और नहीं दूजा ... 128
216. पारब्रह्म जे चित सी आसा ... 128
217. पंढरीनाथ विठाई बतावो ... 128
218. तेरी हरी बिन कौन सहाय करेगो ... 129
219. आरती कीजे राजा राम रीझे ... 129
220. तू सुख सागर नागर दाता ... 129
221. मैं को माधव मलमूत्रधारी ... 130
222. राम विट्ठला, हम तुमहारे सेवक ... 130
223. माधो जी कहा करूं या मन कौ ... 130

राग टोड़ी 130-133

224. पाया पडौ दे पाया पडौ दे देवा रामा ... 130
225. मोर पिया बिलम्यो परदेस ... 131
226. रूखडी न खाइयो स्वामी ... 131
227. नामा तूं हि तू झूठा रे ... 131
228. हीन दीन जात मोरी पंढरी के राया ... 132
229. आ भडै रे नौआ आ भणै रे ... 132
230. उठि रे नांमदेव बाहरि जाइ ... 133

राग पट नाराईण 133-139

231. पद निरखत किन जाई रे दिना ... 133
232. रांम नीसाण बागा ... 134
233. रुंडा रांम जी सूं रंग लगाया रे ... 134
234. सहज बोलणे बोल बोलिजै ... 134
235. कुनूं क्रपा तुझी होइ ज्यौ आवरी ... 134
236. तैसी चूक लीजै रे जगजीवनां ... 135
237. तुम ती बरजाउं माई है ... 135
238. झिलिमिलि झिलिमिलि नूरा रे ... 136
239. जागौ न बैरागी जोगी ... 136
240. जपी रांम नांम नृ लै उरी ... 136
241. नको नको रे संसार महा जड ... 136

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

242. रसना रंगीलै हरि नाम ... 137
243. इन औसर गोबिंद भजि रे ... 137
244. नहीं ऐसो जन्म बार बार ... 137
245. गाइ मन गोविंद गाइ रे गाइ ... 137
246. गावै तौ गाइ भावै मति गावै राम ... 138
247. अभिमान लीखा नर आयौ रे ... 138
248. ऐसे ही मना रे मेरे ऐसे ही मनां ... 138
249. तू मुझा मुंगा भी तुझा तुंगा ... 139

राग कनड़ा 139

250. हरि नांम अमृत पखालि मुखा थैं ... 139

राग रामकली 139

251. हरि हरि दोन्यूं अखिरे उचारि ... 139

राग परज्यो 140

252. न होइ ज्यौ तीरथ व्रत अस्नान करिता ... 140

राग तिलंग 140

253. देखो यारो देखो लोको ... 140

राग बिलावल 141

254. टाली बाजैवा टाली बाजैवा ... 141

राग सोरठ 141–143

255. बोवालने जाये परब्रह्म बोबालने जाये ... 141
256. उत्तरा आरती चरण मुरारे ... 141
257. गोविंद गुना गोपाल गुना ... 141
258. देवा तेरी भक्ति न छांडूं ... 142
259. बिनती सुन जगदीश हमारी ... 142
260. राम रतन धन पाया माया ... 142
261. जहाँ देखो तहां नरहरि नरहरि ... 143

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोग 143

262. नंदनंदन जी को भोग लागे ... 143

शयन 143

263. शयन करो नारायण देवा ... 143

राग रामकली 144

264. सजल जल नीर नदी सै डौला ... 144

साखियाँ 144-146

शब्दार्थ 147-160

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-वृत्त

महाराष्ट्र के पंढरपुर में जन्मे और ज्ञानदेव के समकालीन, संत नामदेव, अपने समय के प्रसिद्ध संत एवं रचनाकार हुए हैं, जिनके मराठी-अभंगों का गायन शताब्दियों से महाराष्ट्र में होता रहा है। उनका नाम वहाँ के प्रसिद्ध 'संत पंचायतन' अर्थात् पाँच प्रमुख संतों के समुदाय में लिया जाता रहा है। अन्य चार संतों में ज्ञानदेव, एकनाथ, समर्थ रामदास और तुकाराम की गणना की जाती है। संत तुकाराम ने उन्हें अपना आदर्श भी माना है। किंवदन्ती रही है कि नामदेव ने तुकाराम के रूप में और ज्ञानदेव ने एकनाथ के रूप में जन्म लिया था।

नामदेव के पूर्वज यदु शेट (यदु सेठ) शिंपी यानी छीपी जाति के थे और दर्जी का काम करते थे। ये कृष्णा नदी के किनारे, कहाड़ के पास, नरसी बामणी गाँव के रहने वाले थे। यदु शेट की वंश-परंपरा में दामा शेट हुए। उनका विवाह उसी जनपद के कल्याण नामक गाँव के एक दर्जी की पुत्री गोणाई या गौणा बाई से हुआ। दामा शेट माता-पिता के भक्त और परम भागवत थे। ये प्रतिवर्ष पंढरपुर की यात्रा किया करते थे। इनके आऊ नामक बेटी थी। अपने इष्टदेव विट्ठल के प्रति आस्था होने तथा पुत्र-कामना से ये पंढरपुर में रहने लगे थे।[1]

पंढरपुर में ही कार्तिक शुक्ला एकादशी, शके सम्वत् 1192 (रविवार, 26 अक्टूबर, 1270 ई०) को नामदेव का जन्म हुआ। अपने एक अभंग में नामदेव ने अपनी जन्म-तिथि का उल्लेख भी किया है।[2] परिवार की दासी और संत जना बाई के एक अभंग से इनके जन्म-स्थान की पुष्टि होती है।[3] संत एकनाथ और

---

1. द्वारकेहुनी विठू पंढरीये आला, नाम याच्या पूर्वज दामाशेटी वहिला ॥ 1 ॥
   दामा आणि गोणाई नवसी विठूली, पुत्र देई आम्हा देवा भक्त राशी ॥ 2 ॥
   तोचि नामदेव जन्में शिंपियाचें कुली, भक्ता तें पाहुनी वेघला बनमाली ॥ 3 ॥
   एका जनार्दनी परंपरा कथियेली, धन्य धन्य विठू अनाथाची माउली ॥ 4 ॥ (*एकनाथ*)
2. शुक्ला एकादशी कार्तिकी रविवार, प्रमोद संवत्सर शालिवाहन शके।
   प्रसावली माता मजमल मूत्री, लेव्हां जिन्हेवरी लिहिलें देवें ॥
3. लाहो लागला अंबेचा, विठा बाई आनंदी चा।
   अधिष्ठान पंढरपुर, नांदे कान्हाई सुंदर ॥
   गोणाई ने नवस केला, देवा पुत्र देई मला।
   देखोनिया शुद्ध भाव, पोटा आले नामदेव ॥
   दामा शेटी हरषला, दासी जनिस आनंद झाला ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नामदेव परिचयी' के लेखक अनन्तदास[1] ने भी इनका जन्म-स्थान पंढरपुर माना है। गोरा कुम्हार, सावंता माली, नरहरी सुनार, बिसोबा खेचर, चोखा मेला, परिसा भागवत, बंका महार आदि तत्कालीन संतों के अभंगों से भी उपर्युक्त जन्म-तिथि व जन्म-स्थान की पुष्टि होती है।

शैशव से ही नामदेव विट्ठल की भक्ति करने लगे। विट्ठल के नाम का निरंतर जाप, भजन व कीर्तन करते-करते विट्ठलमय हो गये। उनके द्वारा मूर्ति को दूध पिलाने का प्रसंग मिलता है। इससे मिलती-जुलती अनेक चमत्कारपूर्ण घटनाओं, जैसे, सुलतान के द्वारा वध की गई गाय को जीवित करना, विट्ठल से छान छवाना, मंदिर के दरवाजे का नामदेव की ओर घूम जाना आदि के भी उल्लेख मिलते हैं जो संतों के साथ प्रायः जोड़ दिए जाते रहे हैं। इन घटनाओं से नामदेव की अनन्य हरि-भक्ति का बोध होता है।

पाँच वर्ष की अवस्था में इन्हें पढ़ने के लिए बैठाया गया, किन्तु पढ़ने में मन नहीं लगा। आठ वर्ष की आयु में गोविंद शेट की पुत्री राज बाई के साथ इनका विवाह हो गया। इनके चार पुत्र—नारायण, महादेव, गोविंद और विट्ठल हुए। इनकी एकमात्र पुत्री का नाम किंबा बाई था। जना बाई ने इनके पूरे परिवार की सूची एक अभंग में प्रस्तुत कर दी है—

गोणाई राजाई दोघी सासुसूना, दामा नामा जाणा बाप लेक ॥ 1 ॥
नारा महादा गोंदा विठा चौघे पुत्र, जन्म ले पवित्र त्यांचे वंशीं ॥ 2 ॥
लाडाई गोडाई येसाई साखराई, चौथी सुना पाही नामयाच्या ॥ 3 ॥
लिंबाई ते लेकी आऊ बाई बहिणी, वेडी पिसी जनी दासी त्याची ॥ 4 ॥

(गोणा बाई सास, राजा बाई बहू, दामा सेठ पिता, नामदेव पुत्र; नारायण, महादेव, गोविंद व विट्ठल चार नामदेव के पुत्र; इन्होंने बड़े ही पवित्र कुल में जन्म लिया। लाडा बाई, गोडा बाई, येसा बाई, साखरा बाई ये चारों पुत्रों की पत्नियाँ, लिंबा बाई नामदेव की लड़की, आऊ बाई नामदेव की बहिन और दासी जना बाई।)

नामदेव की विट्ठल भक्ति जैसे-जैसे बढ़ती गई, वैसे-वैसे सांसारिकता से उनका मन उचटता गया। कपड़ा सींकर बेचने का व्यवसाय ठप्प हो चला था। दरिद्रता ने घर में स्थायी वास कर लिया था। परिवार अभावों से जूझ रहा था। पिता ने कहा—"मैं वृद्ध हुआ, गृहस्थी चलाना अब तेरा कर्त्तव्य है। तू बाजार जाकर व्यापार कर।" किन्तु नामदेव का भक्ति-प्रवण मन व्यवसाय में न रम सका।

---

1. पंढरपुर जहाँ नगर सकल भोग कराती।
नामदेव को पिता बसै बैरोजा माही।
जाकौ पुत्र पुनीत नामदेव सच विधि पूरौ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

14 व्यक्तियों के परिवार का दायित्व अकेले नामदेव पर था। लौकिक दृष्टि से वे पागलपन की सीमा तक पहुँच चुके थे। वृद्ध माता ने दुखी होकर नामदेव से कहा—"नामदेव! तू मेरे पेट से उत्पन्न बालक है, इसलिए तुझसे कहती हूँ। तूने संसार त्यागकर निःसंग का साथ किया है। तू उससे क्या माँगता है और वह तुझे देगा भी क्या? वह शीघ्र ही बैकुंठ ले जाएगा। देख! पड़ोसियों के लड़के अपने गृहस्थ-जीवन को किस प्रकार चलाते हैं और तू कुल का नाश करने वाला पैदा हुआ है। तुझ अभागे का चित्त पांडुरंग में ही लगा हुआ है। तूने सीने-पिरोने को त्याग दिया है। तू घर की ओर देखता ही नहीं। यह तेरी कैसी भक्ति? घर-गृहस्थी को तो तूने आग में झोंक दिया है।"[1]

माँ ने आत्महत्या का विचार किया। पत्नी राजा बाई भी घोर दरिद्रता से ऊब चुकी थी। उसकी व्यथा उसके एक अभंग में व्यक्त हुई है—"औरों की पत्नियाँ स्वर्ण के अलंकार धारण करती हैं, मेरे गले में कुछ भी नहीं है। हमारे घर में तो अठरा विश्व दारिद्र्य समा गया है। मैं किससे कहूँ? स्त्रियाँ सुंदर वस्त्र पहनती हैं। मेरे लिए तो पुराने जीर्ण-शीर्ण वस्त्र हैं।"

"मेरी कुटिया टूटी-फूटी है, जिससे गर्म-ठंडी हवाएँ छेदती-भेदती रहती हैं। मुझे अत्यंत कष्ट होता है परंतु मैं किससे कहूँ? मुझे यह मालूम तक नहीं है कि सुंदर पलंग और सुंदर ओढ़ने-बिछाने के कपड़े कैसे होते हैं? मेरे पास तो केवल एक फटी गुदड़ी है। घर में अन्न नहीं, परंतु मेरे पति निर्लज्ज होकर भगवान के सामने नाचते रहते हैं। घर में चौदह आदमी हैं। वे बिचारे अन्न के लिए घर-घर घूमते हैं।[2]"

---

1. गोणाई म्हणे नाम्यांवचन माझे ऐक, पोटीचें बालक म्हणोती सांगे ॥ 1 ॥
महीमेचा संसार सांगेनी आपुला, संग त्वा धरिला निःसंगाचा ॥ 2 ॥
या काय मागसी तो काय देईल, शीहर ची नेईल बैकुंठा सी ॥ 3 ॥
सवित्या की लेंकुरें वर्ततताती कैसीं, तू मज झाला सी कुल क्षय ॥ 4 ॥
धन्य धान्य पुत्र कलत्रे नांदती, तुज अभाग्याचे चिर्ती पांडुरंग ॥ 5 ॥
शिवण्या टिपण्या घातलें से प्राणी, न पाहाती परतोनी घराकडे ॥ 6 ॥
कैसी तुजी भक्ती लौकिका वेगलो, संसाराची होली कयाली नाम्या ॥ 7 ॥

2. सदैवांच्या स्त्रियाँ अलंकार मंडित, मणब्री नाहीं शीत काय करूँ ॥
दरिद्रे विश्रांती धातली हो कैसी, सांगो कोणापासी माऊलिये ॥
एकी दिव्य वस्त्रे तेयल्या परिकर, मज खंडे जर्जर मिलालेसे ॥
मोड के खोपाट वारा ये तो भर भराट, बहु होती कष्ट कोणा सांगो ॥
कैसी सुमन शेज कसे पटकुल, फाटकी वाकल अंथरूणा ॥
वस्त्र पात्र नाहीं खाया जेवापासी, नाचे अहर्निशि निल्लज सा ॥
चवदा मनुष्यें आहेत माझे धरीं, हिंडता दारोदारी अन्नसाठीं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरीबी से तंग आकर पत्नी ने भी बच्चों के साथ आत्महत्या करने का प्रयास किया, किंतु नामदेव निर्लिप्त रहे। उनका पूरा समय भजन-कीर्तन में व्यतीत होने लगा। पाँवों में घुँघरू बाँधकर, हाथों में करताल और कंधे पर वीणा रखकर वे रात-दिन भजन करते, अभंग रचते और साधना में इतने तल्लीन हो जाते कि भूख-प्यास को भी भूल जाते। परिवार ने भी विवश होकर अभावों, दरिद्रता, दुखों व कष्टों में जीना सीख लिया था। नामदेव इस दौरान निवृत्तिनाथ, ज्ञानदेव, सोपानदेव और मुक्ताबाई के संसर्ग में आए। ये सभी भाई-बहिन नाथ-पंथी योगी व अद्वैतवादी संत थे। बड़े भाई निवृत्तिनाथ ने गैनीनाथ से नाथ-पंथ में दीक्षा ली थी और निवृत्तिनाथ ने अपने भाइयों व बहिन को दीक्षा दी थी। इनमें ज्ञानेश्वर या ज्ञानदेव अपनी 'ज्ञानेश्वरी' और काव्य-गुण संपन्न अभंगों के लिए मराठी के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार माने गए हैं। इन सभी में अद्वैतानुभूति के साथ साकार ब्रह्म के प्रति उत्कट भक्ति थी। संत ज्ञानदेव और नामदेव में अभिन्नता थी।[1]

ज्ञानदेव ने संत-मंडली के साथ तीर्थ-यात्राओं की योजना बनाई। उनके अनुरोध पर अन्य संतों के साथ नामदेव भी तीर्थ-यात्रा पर गए। नामदेव ने इस पूरी तीर्थ-यात्रा का वर्णन 'तीर्थावली' के 59 मराठी अभंगों में किया है। ये संत औढ़ा नागनाथ, पैठण, प्रयाग, अयोध्या, काशी, मारवाड़, कोलायत, बीकानेर, बीजापुर, घट प्रभा, मल प्रभा, ऋष्यमूक पर्वत, किष्किंधा नगरी, तुंगभद्रा होते हुए कुमारतीर्थ आए। फिर तिरुपति, मल्लिकार्जुन, सेतुबंध रामेश्वर पहुँचे। वहाँ से भ्रमण करते हुए पंढरपुर लौट आए।

किंवदन्तियाँ हैं कि इसी यात्रा में औढ़ा नागनाथ के मंदिर का दरवाजा नामदेव की ओर घूम गया था, नामदेव ने, कुएँ का पानी सतह पर लहरा दिया था तथा गोरा कुम्हार ने थप्पी से बजाकर नामदेव को कच्चा-भक्त (गुरुविहीन) होने की घोषणा की थी। इतना सत्य है कि ज्ञानदेव और मुक्ताबाई के आग्रह पर उन्होंने विसोबा खेचर से दीक्षा ली थी। कहा जाता है कि आकाश में उड़ने का सामर्थ्य

---

1. नामदेव और ज्ञानदेव की प्रथम भेंट पंढरपुर में हुई थी। तीर्थ-यात्रा के दौरान ज्ञानदेव नामदेव से मिलने गये। इस भेंट का उल्लेख एक अभंग में इस प्रकार हुआ है—
नामायाचे भेटी ज्ञानदेव आले। लोटांगण धातलें नामदेवे ॥ 1 ॥
देउनि आलिंगन प्रीतिच्या पडिवारें। पूजिलें आदरें यथाविधी ॥ 2 ॥
धन्य तो अवसरु संत समागम। करिति संभ्रमु आवडीचा ॥ 3 ॥
नामदेव म्हणे सफल माझें जिणें। स्वामिच्या दर्शनें धन्य झालों ॥ 4 ॥
पूर्व पुण्य माझें फलोन्मुख झालें। प्रत्यक्ष भेटले पांडुरंगा ॥ 5 ॥
(ज्ञानदेव जी नामदेव जी से मिलने गये। नामदेव जी ने आदरपूर्वक, आलिंगन कर, यथाविधि संत-पूजा की। नामदेव कहते हैं, आज मेरा जन्म सफल हो गया। पूर्व-पुण्यों के फलस्वरूप ज्ञानदेव रूपी पांडुरंग के मुझे दर्शन हो गये।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
0121
१८५

प्राप्त होने के कारण ये खेचर कहलाए। पंढरपुर से पचास कोस दूर औंढिया नागनाथ नामक प्राचीन शिव-क्षेत्र में रहते थे और सन् 1309 में समाधिस्थ हुए थे। नामदेव ने अपने मराठी-अभंगों और हिंदी-पदों में विसोबा खेचर की महिमा का वर्णन किया है।[1]

विसोबा खेचर से दीक्षा लेने, ज्ञानदेव, निवृत्तिनाथ, सोपान देव और मुक्ताबाई के संसर्ग में आने के पश्चात् नामदेव की दिशा ही बदल गई। सगुणोपासक नामदेव अपनी मूल चेतना से हटकर अद्वैत और योग-मार्ग की ओर प्रवृत्त हुए।

घटना-चक्र ऐसा घूमा कि एक-एक कर निकट-जन बिछुड़ते चले गए। सबसे पहले सन् 1296 में ज्ञानदेव ने आलंदी में समाधि ली, उसके तुरंत बाद त्र्यंबकेश्वर क्षेत्र में योग-क्रिया द्वारा निवृत्तिनाथ ने, ज्ञानदेव की समाधि के एक माह पश्चात् सोपानदेव ने और पाँच माह पश्चात् मुक्ताबाई ने समाधि ले ली।

ज्ञानदेव और नामदेव ज्ञान और भक्ति के साकार रूप थे। एक-दूसरे के पूरक थे। दोनों में इतनी घनिष्ठता और लगाव था कि ज्ञानदेव द्वारा समाधि लेने पर नामदेव के शोक का घनत्व उनके अभंगों के माध्यम से फूट पड़ा—"प्राण व्याकुल हैं। पानी बिन मछली की तरह मन तड़प रहा है। दसों दिशाएँ सूनी और उदास हैं। मन मसोसकर रह जाता है। प्राण कंठ तक आ गए हैं। ज्ञानदेव के लिए जी तिलमिला रहा है। भगवान को भी कष्ट हो रहा है क्योंकि योगी की विभूति जा रही है—

135466

कासाबीस प्राण मन तलमली, जैसी कां मासोली जीवनावीण।
दाही दिशा वोस वाटती उदास, करिताती सोस मनामाजीं॥
घातियेली घोण प्राण आला कंठीं, ज्ञानेश्वरा साठीं तलमली।
नामा म्हणे देवा वाटतसे खंती, चाल ली विभूती योगियांची॥

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

---

1. सुखाचा सुखतरु सदगुरु खेचर। स्वरूप साक्षात्कार दाखविला॥ 1॥
(सदगुरु खेचर स्वामी कल्पतरु के समान हैं। उन्होंने मुझे मेरे स्वरूप का ज्ञान कराया है।)

× × ×

मन मेरी सुई तन मेरा धागा। खेचर जी के चरण पर नामा शिंपी लागा।
आ-खेचर के उपदेश से सम्बन्धित एक अभंग का भाव है—
नाम और रूप दोनों जिसे नहीं हैं, वही ईश्वर है और सब मिथ्या हैं।
जल-थल-काष्ठ-पाषाण-पिंड-ब्रह्माण्ड-अणु-रेणु, सब में ही स्वयं साक्षी है।
यह जानकर फिर जो अपने-आपको पहचानता है, खेचर कहता है सब-कुछ ईश्वर है।
कानों में यह बात कही, मस्तक पर हाथ रखा, पद-पिंड-विवर्जित किया नामदेव को॥
(बिसोबा खेचर ने 'पद-पिंड-विवर्जित' किया यानी ब्रह्म-भाव और जीव-भाव ये दोनों भेद मिटाकर उसे केवल ब्रह्म-रूप बना दिया।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामदेव के 'समाधि के अभंग' करुणा और शोक की अद्‌भुत रचनाएँ हैं—"इस संसार में क्या फिर ज्ञानदेव दिखाई पड़ेगा? ज्ञानदेव के वियोग से मुझे हृदय-रोग हो गया है। हे देव! उससे मिलने का उपाय करो। मेरा ज्ञानदेव मुझे इसी समय दिखाओ। उसके बिना जी तिलमिला रहा है। सखा का अंतराय हुआ। वह दूर चला गया। अब मैं पंढरपुर कैसे रहूँ? तुम्हारा दर्शन ज्ञान-कृपा-दान था। पंढरपुर में इसीलिए आता था।"[1]

"ज्ञानदेव मेरा सौख्य-सरोवर है। उसमें मैं जलचर हूँ, वहीं मुझे शांति है। दुर्भाग्य रूपी ताप से उसका जल सूख गया। हे राम! मुझ पर कृपा की वर्षा करो। ज्ञानदेव के बिना मेरे प्राण व्याकुल हैं।" इतना कहते ही नामदेव के नेत्रों से अश्रु-धारा बहने लगी और वे व्याकुल होकर धरती पर गिर पड़े।[2]

निवृत्तिनाथ, ज्ञानदेव, सोपानदेव और मुक्ताबाई आयु में उनसे छोटे थे। निवृत्तिनाथ की समाधि पर लिखा गया अभंग भी बड़ा ही मार्मिक है—"ज्येष्ठ से पहले कनिष्ठ का जाना। हे नारायण! तुमने उलटा ही किया। यह उलटा वार मेरे मन को लगा। ऊपर से पानी गिरता है, वह उलटे छत की ओर गया। भानु लुप्त हुआ, अँधेरा छा गया। गए योगीश्वर निवृत्तिनाथ।"[3]

इन सबके चले जाने पर नामदेव टूट गए। उनके संवेदनशील मन को गहरा आघात लगा। शोक-संतप्त मन की व्यथा इन शब्दों में व्यक्त हुई है—

"वे सब विभूतियाँ चली गईं। वे अनादि अवतार थे। अब हे भगवान! बहुत याद आती है। हे हरि! धीरज नहीं रहा। भीतर से फूट-फूटकर रुदन बाहर आता है।"

---

1. नाम्या म्हणे देवा ज्ञानदेव सृष्टीं। पडेल का दृष्टीं पुन्हां आतां॥
ज्ञानाचा वियोग जडला हृद्रोग। भेटीचा प्रयोग करा देवा॥
ज्ञानदेव माझा दाखवा या वेळीं। जीव तलमली त्याच्यावीण॥
संत अंतरला सखा झाला दूर। आतां पंढरपूर कैसे कंठूं॥
तुमचें दर्शन ज्ञान कृपादान। पंढरीस येणें याज्साठीं॥
2. ज्ञानदेव माझें सौख्य सरोवर। त्यांन जलचर स्वस्थ होतों॥
दुर्दैव तापानें आटलें ते नीर। वर्षो रघुवीर कृपा मेघ॥
ज्ञानदेवावीण व्याकुल हे प्राण। तू जगज्जीवन देवा होसी॥
× × ×
नामा हें वदतां डोलयां आलें पाणी। पडिला धरती देवा पुढें॥
3. ज्येष्ठाच्याही आधी कनिष्ठा चें जाणें। केलें नारायणें उफराटें।
उफराटें फार कललें माझे मनीं। वलचणी चें पाणी आढ्या गेलें॥
× × ×
लोपलासे भानु पडला अंधार। गेला योगेश्वर निवृत्तिराज॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरक्त तो पहले ही थे, मन के पूरी तरह टूट जाने पर सांसारिकता से रहा-सहा नाता व जुड़ाव समाप्त हो गया। 'पंढरपुर कैसे रहूँ' कहकर पंढरपुर से जी उचाट होने का संकेत दे चुके थे। अनासक्त होकर उत्तर भारत की यात्रा पर निकल पड़े। पंढरपुर के विट्ठल अब उनके लिए कण-कण वासी और जग-व्यापी ब्रह्म हो गए थे। गोकुल, मथुरा और वृंदावन होते हुए दिल्ली आए। वृंदावन में विष्णु स्वामी नामक ब्राह्मण को अपना शिष्य बनाया। विष्णु स्वामी संप्रदाय में नामदेव का स्थान उतना ही ऊँचा है जितना वारकरी संप्रदाय में। घूमते-घामते पंजाब के भट्टीवाल पहुँचे। बाद में भीड़ से बचने और एकांत-साधना के लिए पास के जंगल में चले गए जहाँ घुमान (जिला गुरुदासपुर) नामक नगर बसाया। यहीं पर उनका स्मृति-मंदिर है। ज्ञानदेव की समाधि के अनंतर वे 54 वर्षों तक जीवित रहे थे। इस बीच उन्होंने हिंदी-पदों की रचना की और उत्तर भारत में वारकरी संप्रदाय का प्रचार-प्रसार किया। उनके प्रमुख शिष्यों में विष्णु स्वामी, परिसा भागवत, जना बाई, चोखा मेला, केशव कलाधारी, लद्धा, बोहरदास, जल्लो तथा त्रिलोचन की गणना होती है।

अब तक नामदेव ८0 वर्ष के हो चुके थे। उन्होंने पंढरपुर में विट्ठल के चरणों में ही समाधि लेने की सोची। अंतत:आषाढ़वदी त्रयोदशी शनिवार शालिवाह शक 1272 (संवत् 1407) अर्थात् 3 जुलाई 1350 को पंढरपुर में समाधि ले ली।

नामदेवकालीन परिवेश

नामदेव का काल महाराष्ट्र के सांस्कृतिक इतिहास का स्वर्णकाल है। संत ज्ञानदेव, नामदेव, निवृत्तिनाथ, सोपानदेव, मुक्ताबाई, गोरा कुम्हार, जोगा परमानन्द, नरहरि सुनार, राका कुम्हार, परिसा भागवत, विसोबा खेचर, जगमित्र नागा, जनाबाई, चोखा मेला, बंका धेड़, सोयराबाई, सावंता माली, चांगदेव और सच्चिदानंद की सगुण-निर्गुण मिश्रित भक्ति की लहर में पूरा महाराष्ट्र सराबोर हो उठा। इस मंडली में स्त्री-पुरुष, ब्राह्मण-अब्राह्मण, अछूत, योगी, तत्त्वज्ञानी, अपढ़, गृहस्थ-संन्यासी सभी थे।

नामदेव के समय में महाराष्ट्र में नाथ और महानुभाव संप्रदाय प्रचलित थे। नाथ-संप्रदाय का उद्भव आदिनाथ यानी शिव से माना जाता है। वारकरी संप्रदाय के ज्ञानदेव ने अपनी गुरु-परंपरा इस प्रकार मानी है - आदिनाथ > मत्स्येन्द्र नाथ > गोरखनाथ > गैनीनाथ > निवृत्तिनाथ। इनमें सबसे भव्य व्यक्तित्व गोरखनाथ का था जिनके कारण नाथ-संप्रदाय की जड़ें काफी समय तक भारत में रहीं। नाथ-संप्रदाय हठ योग साधना पर बल देता रहा है। गोरख के नाम पर चलने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तंत्रों और मंत्रों ने भारतीय जनता को भक्ति के प्रति भ्रमित और आतंकित कर रखा था। निवृत्तिनाथ, ज्ञानदेव और विसोबा खेचर के विचारों ने नामदेव को प्रभावित किया था इसलिए उनके पदों में गगन-मण्डल, शून्य, खेचरी-मुद्रा, इड़ा-पिंगला-सुषुम्ना, गुरु-महिमा, चन्द्र-सूर्य और अनाहत-नाद का काफी उल्लेख हुआ है। ज्ञानदेव ने अद्वैत के साथ ज्ञान, भक्ति और योग का सामंजस्य करके महाराष्ट्र में भागवत-धर्म को प्रारंभ किया था।

महानुभाव संप्रदाय के प्रवर्त्तक चक्रधर स्वामी ने नाथों के ज्ञान को अपनाकर भी भक्ति को प्रमुखता दी। उनका विश्वास था कि निराकार ब्रह्म भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए साकार रूप धारण करता है। यह संप्रदाय सामाजिक विषमता, बहुदेव-उपासना और वैदिक कर्मकांड का विरोधी तो था किंतु कृष्णोपासक होने के कारण मूर्ति-पूजा का विरोधी नहीं था। नाथ-पंथियों की तरह इन्होंने नैतिक मूल्यों और चारित्रिक शुद्धता पर बल दिया था। इनके ग्रंथ गुप्त-लिपियों में लिखे जाने के कारण, सामान्य जनता की समझ से परे रहे। इसीलिए जनता इस संप्रदाय के प्रति संशयग्रस्त रही और उसका तिरस्कार करती रही।

महाराष्ट्र में जिस संप्रदाय ने सर्वाधिक प्रतिष्ठा और लोकप्रियता अर्जित की, वह वारकरी-संप्रदाय था। वारी अर्थात् यात्रा, करी अर्थात् करने वाला ही वारकरी कहलाया। पंढरपुर में पंढरीनाथ या विट्ठल के दर्शन करने आषाढ़ और कार्तिक मास की शुक्लपक्षीय एकादशियों को जाने वाले तीर्थयात्रियों और भक्तों से वारकरी-संप्रदाय का उद्‌भव हुआ। पंढरपुर में ईंट (वीट) पर खड़े (स्थल) कृष्ण का बाल-स्वरूप ही इस संप्रदाय का उपास्य है। समीप के मंदिर में उनकी पत्नी रुक्मिणी की प्रतिमा स्थापित है।

पुंडलीक द्वारा प्रवर्तित वारकरी-संप्रदाय शैव और वैष्णव, सगुण और निर्गुण, भक्ति और ज्ञान की अंतर्भुक्ति का परिणाम था। यह मत अद्वैतवादी होते हुए भी भक्ति-प्रधान है। विट्ठल की मूर्ति श्याम न होकर पांडुरंग (श्वेत) की है जिसके सिर पर शिवलिंग स्थित है। वारकरी शैवों की तरह सोमवार को उपवास रखते हैं। अनभै या अनुभव पर बल देते हैं। भजन, कीर्तन, नर्तन, गायन, सामूहिक पूजा, एकादशी-व्रत, तुलसी-माला को धारण करना, ब्रह्मचर्य और नाम-स्मरण इस मत की पहचान हैं।

इस संप्रदाय पर रामानुजाचार्य के 'प्रपत्ति' या ईश्वर के प्रति समग्र समर्पण का प्रभाव है। भागवत्-धर्म की विष्णु-भक्ति में नाथपंथियों की उदारता, सभी जाति, वर्ग, धर्म व संप्रदाय के लिए भक्ति का द्वार उन्मुक्त रखने और लिंगायतों की तरह सभी जनों को समान मानने का ऐसा वारकरी संप्रदाय रूपी देवल बनाया, जिसकी नींव ज्ञानेश्वर या ज्ञानदेव ने तैयार की, नामदेव ने आकार दिया। एकनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तुकाराम ने उसमें साज-सज्जा की। इस संदर्भ में तुकाराम की शिष्या बहिणा बाई का एक अभंग उल्लेखनीय है—

संत कृपा झाली, इमारत फला आली ॥ 1 ॥
ज्ञानदेवे रचिला पाया, उभारिले देवालया ॥ 2 ॥
नामा तयाचा किंकर, तेणे केले हा विस्तार ॥ 3 ॥
जनार्दन एकनाथ, ध्वज उभारिला भागवत ॥ 4 ॥
भजन करा सावकाश, तुका झाला से कलस ॥ 5 ॥

नामदेव के समय में समाज जाति-पाँति के बंधनों में जकड़ा हुआ था। वर्ण-व्यवस्था टूटकर अनेक जातियों और उपजातियों में विभक्त हो गई थी। समाज में ऊँच-नीच और छुआछूत का बोलबाला था। सामाजिक व्यवहार मुक्त नहीं थे। देवागिरि के यादव-राजाओं के प्रधानमंत्री और जाति से शुक्ल-यजुर्वेदी-ब्राह्मण हेमाद्रि ने 'चतुर्वर्ग चिंतामणि' नामक ग्रंथ की रचना करके जाति-व्यवस्था को और भी दृढ़ करने का कार्य किया था। निम्न या अन्त्यज वर्ग का मंदिरों में प्रवेश निषिद्ध था। इस स्थिति का आभास नामदेव के उस पद से मिलता है जिसमें पुरोहितों ने मंदिर के द्वार पर नामदेव को भी अछूत (शूद्र) मानकर कीर्तन करने की अनुमति नहीं दी थी।

समाज में निरंकुशता व्याप्त थी। आम आदमी चोरी व डकैती से त्रस्त था। ये डाकू राजाओं-महाराजाओं का भी खज़ाना लूट लेते थे। बेगारी, अकाल, ऋण और बेरोजगारी से जनता परेशान थी। किसानों की स्थिति बदतर थी। किसान को अपनी आमदनी का एक-चौथाई भाग राजा को देना होता था। यादव-काल में दंड-स्वरूप अपराधी की आँखें निकाल ली जाती थीं।

महानुभावों द्वारा चतुर्वर्ण व्यवस्था पर किए गए प्रहारों से सनातनी नाराज थे। उन्होंने उनकी अवहेलना ही नहीं की अपितु उन्हें हिंदू मानने से अस्वीकार कर दिया था।

मुसलमान धीरे-धीरे उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ रहे थे। अलाउद्दीन खिलजी के कानों में देवगिरि के यादवों के वैभव की कहानियाँ गूँज रही थीं। वह दक्षिण द्वार पर बैठा उचित अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था। उत्तर भारत में ख़िलजी और तुग़लक वंशों का आधिपत्य हो चुका था। अलाउद्दीन संपत्ति-राज्य व नारी लोलुप था। सन् 1296 ई० में देवगिरि (महाराष्ट्र) पर हमला करके काफी धन, हाथी, घोड़ों पर कब्जा किया था। सन् 1306-07 में उसने पुनः देवगिरि पर आक्रमण किया था। चित्तौड़ और अन्हलवाडा पर आक्रमण उसने पद्मिनी और देवलदेवी को प्राप्त करने के लिए किया था। धीरे-धीरे उसके राज्य का विस्तार दक्षिण तक हो गया था। मुहम्मद तुग़लक उसके समान विस्तारवादी नहीं था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी मृत्यु के बाद दक्षिण में बहमनी राज्य की स्थापना हुई। ये शासक अनुदार और निरंकुश थे। इनकी धर्मान्धता से तत्कालीन जनता त्रस्त थी। सुख और समृद्धि से वंचित हो रही थी। धर्मान्धता से प्रेरित होकर बलात् धर्म-परिवर्तन, देवालय व मूर्ति-भंजन प्रारंभ हो चुका था। सुलतान द्वारा वध की गई गाय को जीवित करने की चुनौती उसी धर्मान्धता का परिणाम थी। अपहरण की आशंका से बाल-विवाह की कुप्रथा प्रचलित हो गई थी। जजिया कर से बचने के लिए लोग मुसलमान होने लगे थे।

ऐसे समय में नामदेव और ज्ञानदेव ने वारकरी-संप्रदाय के माध्यम से भारतीय समाज को नवजीवन व नई ऊर्जा देने का प्रयास किया। यह एक सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक आंदोलन था, जिसने ईश्वर-भक्ति को सभी जाति, वर्ग, धर्म व संप्रदाय के लिए उन्मुक्त कर दिया था। योग, कर्मकांड और ज्ञान की दुरूह साधनाओं की अपेक्षा नाम-संकीर्तन पर बल देकर, भक्ति को सर्व-सुलभ बनाया तथा दीन-हीन जातियों के निर्बल हिंदुओं को संगठित करके उनमें चेतना जगाने का कार्य किया। यह भक्ति का ऐसा उन्मेष था जिसमें दर्जी, कुम्हार, माली, भंगी, दासी, धेड़ और वेश्या-पुत्री समान रूप से भक्ति के अधिकारी और अधिकारिणी थे। इन्होंने सदाचार, ईश्वर-निष्ठा और नैतिक मूल्यों पर बल देकर समाज की पुनर्रचना में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। सामाजिक अस्मिता के साथ आत्मिक उन्नयन इस संप्रदाय का प्रमुख लक्ष्य रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत संस्करण

प्रस्तुत संस्करण निम्नलिखित हस्तलिखित ग्रंथों के आधार पर सम्पादित किया गया है—

1. पांडुलिपि सं० 1021—यह 20 पृष्ठों का हस्तलिखित ग्रंथ है जिसके प्रथम पृष्ठ पर लाल स्याही से 'नामदेव के पद' लिखा है। अंत में पुष्पिका नहीं है। पदों के प्रारंभ में 'अथ नांमदेव जी कौ कृत लिखतं' आया है। इसके पृष्ठ अत्यंत जर्जर व पुराने हैं; उनको देखते हुए यह कहा जा सकता है कि यह 15वीं या 16वीं शती की प्रति है।

इसके अंत में पद-संख्या 158 तथा साखी-संख्या 15 दी गई है। दो छंदों—सं० 87 व 93 की छंद-संख्या 92 व 130 में पुनरावृत्ति हुई है। अतः इसमें कुल 156 छंद दिए गए हैं। हस्तलिखित ग्रंथों में यह प्रामाणिक एवं विश्वसनीय प्रति है, जिसमें रागों के अनुसार छंद-विभाजन हुआ है। पाठ-सम्पादन के लिए इस प्रति से पूरी सहायता ली गई है। छंद-क्रम भी इसी के आधार पर रखा गया है। यह प्रति आगरा के क० मुं० हिंदी विद्यापीठ में उपलब्ध है।

2. पांडुलिपि सं० 992—यह दादू-पंथी प्राचीन काव्य-संग्रह है, जिसे संवत् 1762 में दादू-पंथ की शाखा 'उत्तराधा' के संस्थापक बनवारी दास की शिष्य-परंपरा के प्रेमदास उत्तराधा ने लिपिबद्ध किया था। इसकी पुष्पिका है—

गुर बनवारी सुमरि नित दादू सतगुर गाइ।
परमेसुर भजि परम गुर आदू कू सुख थाइ॥

"पोथी संपूरण भवेत: संवत् 1762 लिखतं सुस्थाने कथोड़ा ब्रषे मास क्वार बदी 9 बार सुकरवार। पोथी पढ़ै गुणै तिसकौ राम राम डंडौत। लिखतं बाबा गंगा राम जी कौ सिषि प्रेमदास उतराधा।"

इस संग्रह में दादू, कबीर और नामदेव की वाणी समान क्रम में है। दादू का निर्वाण संवत् 1660 है। अतः ये पाठ संवत् 1625-30 के आसपास के रहे हों तो कोई आश्चर्य नहीं। इस प्रति के पाठ सर्वाधिक विश्वसनीय और शुद्ध हैं। इसमें नामदेव के 123 पद और 5 साखियाँ संकलित हैं। पाठ-सम्पादन में इसे भी प्रमुख आधार बनाया गया है। यह प्रति आगरा के क० मुं० हिंदी विद्यापीठ में उपलब्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3. पांडुलिपि सं० 1059—यह 17वीं शती का प्राचीन दादू-पंथी काव्य-संग्रह है। इसमें नामदेव के 68 पद दिए गए हैं। प्रतिलिपिकार के अल्प शिक्षित होने के कारण इस प्रति में भाषा-विकार और पाठ-विकार बहुतायत से पाए जाते हैं। पाठ-संपादन में तुलना के लिए इस प्रति की सहायता ली गई है। इसके अधिकांश पद पाण्डुलिपि सं० 1021 व 992 में मिलते हैं। यह प्रति आगरा के क० मुं० हिंदी विद्यापीठ में उपलब्ध है।

4. सरबंगी (सर्वंगी)—रज्जब के इस हस्तलिखित ग्रंथ में नामदेव के 26 पद दिए गए हैं जो पांडुलिपि सं० 1021 व 995 में भी मिलते हैं। प्रतिलिपिकार के अल्प-शिक्षित होने के कारण इस प्रति में भाषा-विकार और पाठ-विकार काफी हुए हैं। पाठ-सम्पादन में तुलना के लिए इस प्रति की सहायता ली गई है। यह प्रति आगरा के क० मुं० हिंदी विद्यापीठ में उपलब्ध है।

5. गुरु ग्रंथ साहिब—'आदि ग्रंथ' के नाम से प्रसिद्ध, सिक्खों के इस परम पूज्य ग्रंथ का सम्पादन एवं संकलन सिक्खों के पंचम गुरु अर्जुन देव (1563 ई० 1606 ई०) ने सन् 1604 (संवत् 1661) में बहुत परिश्रम से किया था। इसमें सिक्ख गुरुओं के अतिरिक्त अन्य भक्तों व संतों की ऐसी वाणियाँ भी संकलित हैं जो तत्कालीन धार्मिक सुधार-भावना के अनुरूप थीं और सिक्ख-गुरुओं की शिक्षा के विरुद्ध अथवा प्रतिकूल नहीं पड़ती थीं। इन वाणियों को संतों व भक्तों के अनुयायिओं द्वारा सुनकर संकलित किया गया था। मौखिक परंपरा से गृहीत होने के कारण उनकी संरचना में परिवर्तन आना स्वाभाविक था। किंतु यह सुनिश्चित है कि सन् 1604 के पश्चात् इनमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया गया है।

'गुरु ग्रंथ साहिब' में नामदेव के 61 पद संकलित हुए हैं। प्राय: यह कहा जाता है कि 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित संत-वाणियाँ अन्यत्र नहीं मिलती हैं, किंतु ऐसा नहीं है। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित 61 पदों में से 17 पद ऐसे हैं जो हस्तलिखित ग्रंथों में मिलते हैं। केवल 44 पद ऐसे हैं जो अन्यत्र नहीं मिलते हैं। हस्तलिखित दादू-पंथी ग्रंथों के पदों के साथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' के 17 पदों के पाठांतर दे दिए गए हैं। शेष 44 पद पुनर्सम्पादित करके रागों के अनुसार दादू-पंथी हस्तलिखित ग्रंथों के छंदों के साथ समाहित कर दिए गए हैं। इस प्रकार प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की दो शाखाओं—दादू-पंथी शाखा और गुरु ग्रंथ साहिब शाखा के पाठों से 205 छंद प्रामाणिक और मूल पाठ के साथ इस संस्करण में प्रस्तुत किए गए हैं जो अपने ढंग का प्रथम मौलिक प्रयास है। छंद सं० 264 केवल दादू द्वारा की पांडुलिपि 'क' में मिला है।

58 छंद ऐसे हैं जो घुमान से लेकर पंढरपुर तक के मंदिरों, मठों, गुरुद्वारों और निजी संग्रहों से संकलित किए गए हैं। इस प्रकार नामदेव के प्रामाणिक पदों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कुल संख्या 264 व साखियों की संख्या 17 होती है।

6. नराणा (राजस्थान) के दादू-द्वारा से प्राप्त पांडुलिपि 'क' में नामदेव के 172 पद व 13 साखियाँ दी हुई हैं। प्रति निर्विकार, स्वच्छ व शुद्ध है। इसमें कबीर, दादू, रज्जब, गरीबदास, हरदास तथा अन्य संतों की वाणी भी संगृहीत हैं। पाठांतरों के लिए इस प्रति का उपयोग किया गया है। इसकी पुष्पिका है—"इति श्री पोथी संपूरन भवेत् संवत् 1831 बरषे असाढ मासे सुकल पक्षे तिथि 13 बार, सुथाने चुरू मध्ये पोथी सम्पूरन भई ॥ लिखित बाबा श्री हृदै राम जी मोखरै का तिनका सिष पृथीराम तिन पोथी लिखी॥

"बाबाजी हृदै रांम जी तिनका सिष पृथी रांम खांनेजाद गुलाम।
पोथी बाचै तिन कौं प्रणांम॥"

हस्तलिखित ग्रंथों में यह सर्वाधिक छंदों वाली प्रति है।

7. **बसना 16, पांडुलिपि 'ख'**—इसकी प्रतिलिपि श्री रामदेव दास जी उत्तराधा द्वारा संवत् 1886 का० कृ० 2, रविवार को सांवली मंडी में पूरी की गई थी। इसमें नामदेव के अतिरिक्त दादूदयाल, कबीर, हरदास, गरीबदास, बखना, जनगोपाल, टीला आदि की रचनाएँ संगृहीत हैं। इसमें नामदेव के 123 पद व 4 साखी दी गई हैं। इसकी पुष्पिका है— "पोथी संपूर्ण भवेत् संवत् 1886 वर्षे कातिग मासे किश्न पक्षे तिथौ 2 बार अैतवार कै दिनि पुस्तक संपूरण भवेत्॥ परम परसिद्धि मुनि श्री बाबा परमांनंद उतराधौ तिनके शिष्य बाबा खेमदास जी ताकै सिष रांमदेव जो बाचै पढै करै बिचार तिसकौं हमारे नमस्कार। भूल चूक छिमां करणी। पुस्तक लिख्या बरष दोइ दिन सात। सुभ स्थाने नगर सांमली मंडी में लिख्या अन्न की मंडी॥" यह प्रति नराणा के दादू द्वारा में उपलब्ध है।

8. **पांडुलिपि 'ग'**—इसके प्रतिलिपिकार कंवलदास हैं जिन्होंने संवत् 1924 बार तेरस बीसपतवार को इस ग्रंथ को राजगढ़ नगर में पूरा किया था। इसकी पुष्पिका है—"संमत 1924 बार तेरस बीसपतवार जेठ बुद तेरस नै संपूरन करी ॥ नग्र राजगढ मधे कंवलदास पठना अरथ॥"

यह मध्यकालीन संतों की वाणियों का सम्प्रदाय-निरपेक्ष संग्रह है जिसमें सभी प्रमुख संतों की रचनाएँ संगृहीत हैं। कंवलदास स्वामी दादूदयाल के शिष्य बनवारीदास उत्तराधा की शिष्य-प्रशिष्य परंपरा में प्रभुदास का शिष्य था। प्रति स्वच्छ व शुद्ध है।

इसमें नामदेव के 64 पद मिले हैं। यह प्रति भी नराणा के दादू द्वारा में उपलब्ध है।

9. **सभा की प्रतियाँ**—नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी के संग्रहालय में दादू पंथी तीन प्रतियाँ हैं जिनमें दादूदयाल और नामदेव के अतिरिक्त अन्य संत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवियों के पद भी संकलित हैं। इनमें सबसे प्राचीन (सं० 1409) प्रति संवत् 1771 की है जो पौष सुदी पंचमी (वृहस्पतिवार) को पूरी हुई थी। इसमें 123 पद और 16 साखियाँ हैं।

दूसरी हस्तलिखित प्रति भी सिद्धों, नाथों और संतों के काव्य का संग्रह है। यह संवत् 1836 में ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में 11वीं तिथि (मंगलवार) को पूरी हुई थी। इसमें (सं० 1408) भी नामदेव के 123 पद और 8 साखियाँ हैं। तीसरी प्रति (सं० 1407) संवत् 1872 में पौष सुदी 11 (वृहस्पतिवार) को पूरी हुई थी। इसमें नामदेव के 136 पदों और 8 साखियों को संकलित किया गया है। इसके प्रतिलिपिकार दादूपंथी ज्ञानदास हैं जिन्होंने इसे रामगढ़ में सुंदरदास के स्थान पर रहकर पूरा किया था। पांडुलिपि सं० 1408 के प्रतिलिपिकार भी दादूपंथी बाबा जगन्नाथ के शिष्य खुष्यालीराम थे जिन्होंने इसे राजस्थान के राणीला में रहकर लिखा था। इन तीनों प्रतियों का उपयोग पाठान्तरों के लिए किया गया है।

10. पटियाला की प्रतियाँ—सेंट्रल पब्लिक लाइब्रेरी, पटियाला के संग्रहालय में नामदेव से संबंधित दो हस्तलिखित प्रतियाँ मिलती हैं। दोनों प्रतियाँ दादूपंथी संग्रह हैं जिनमें नामदेव के अतिरिक्त दादूदयाल, रज्जब, कबीर तथा रैदास आदि संतों की रचनाएँ संकलित हैं। क्रम संख्या 2706 की प्रति में नामदेव के 128 पद तथा 4 साखियाँ हैं। यह संवत् 1755 में लिखी गई थी।

दूसरी प्रति 'सर्बंगी' है। इसके प्रतिलिपिकार बाबा सुरतराम जी के शिष्य मनीराम जी हैं जिन्होंने संवत् 1853 के फाल्गुन मास में इसे 'घिरांचौ' नामक स्थान पर पूरा किया था। इसमें नामदेव के थोड़े से पद मिलते हैं। पाठान्तरों के लिए केवल पहली पांडुलिपि का ही उपयोग किया गया है।

11. पूना की प्रतियाँ—पूना विश्वविद्यालय के 'जयकर ग्रंथालय' में क्रम सं० 393 व 394 की दो प्रतियाँ मिली हैं। पहली पांडुलिपि निरंजनी शाखा के साधु श्री हरिशरणदास के शिष्य श्री हरिदास ने इसे 'ठहरी' नामक स्थान पर संवत् 1868 में श्रावण सुदी शुक्ल पक्ष की द्वादशी को पूर्ण किया था। इसमें नामदेव के 161 पद व 10 साखियाँ मिली हैं। नामदेव के अतिरिक्त इसमें सिद्धों, नाथों व अन्य संत कवियों की रचनाओं को भी संकलित किया गया है।

पूना की दूसरी प्रति भी दादूपंथी है। इसमें दादूदयाल, सुंदरदास तथा बालकराम की रचनाओं के अतिरिक्त रज्जब की 'सरबंगी या सर्वंगी' भी मिलती है। पटियाला की 'सर्बंगी' की तरह इसमें भी नामदेव के 50 पद मिले हैं। इसके प्रतिलिपिकार दादूपंथी बाबा कानडदास जी के शिष्य श्री सुखदेव थे जिन्होंने ढुढांड में संवत् 1865 में पौष सुदी दौज (सोमवार) को इसे पूरा किया था।

पूना की इन दोनों प्रतियों का उपयोग पाठान्तरों के लिए किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12. घोमान की प्रति—लिपि और कागज की स्थिति से यह 19वीं शती की प्रति प्रतीत होती है। यह घोमान के बाबा बलवन्त राय के पास थी जिसके 15 पत्रों में से कुछ पत्र नष्ट हो चुके हैं। इस प्रति का उपयोग पाठ-भेदों के लिए किया गया है। इसमें नामदेव के 157 पद मिले हैं।

13. पंढरपुर की प्रति—इसकी मूल प्रति अनुपलब्ध है। इसकी प्रतिलिपि में 182 पद मिले हैं। संभवतया, यह 19वीं शती के उत्तरार्ध में लिखी गई थी।

इस प्रकार 'नामदेव रचनावली' का 17 पांडुलिपियों के आधार पर सम्पादन किया गया है।

पांडुलिपि संकेत

1.	1021	क० मुं० हिंदी एवं भाषाविज्ञान विद्यापीठ, आगरा की प्रति।
2.	992	क० मुं० हिंदी एवं भाषाविज्ञान विद्यापीठ, आगरा की प्रति।
3.	1059	क० मुं० हिंदी एवं भाषाविज्ञान विद्यापीठ, आगरा की प्रति।
4.	सरबंगी	क० मुं० हिंदी एवं भाषाविज्ञान विद्यापीठ, आगरा की प्रति।
5.	गु०ग्रं०सा०	गुरु ग्रंथ साहिब 1. गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर (गुरुमुखी लिपि)। 2. सर्व हिंद सिख-मिशन, अमृतसर (नागरी लिपि)। 3. भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ (नागरी लिपि)।
6.	'क'	दादू द्वारा, नराणा की प्रति।
7.	'ख' (बसना 16)	दादू द्वारा, नराणां की दूसरी प्रति।
8.	'ग'	दादू द्वारा, नराणा की तीसरी प्रति।
9.	सभा०	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी की तीनों प्रतियाँ।
10.	पटि०	सेंट्रल पब्लिक लाइब्रेरी, पटियाला की 2706 सं० की प्रति।
11.	पूना०	जयकर ग्रंथालय, पूना की सं० 393 व 394 प्रतियाँ।
12.	घोमान०	घोमान (गुरुदासपुर, पंजाब) की प्रति।
13.	पंढर०	पंढरपुर (महाराष्ट्र) की प्रतिलिपि।

समस्त पांडुलिपियों के आधार पर कहा जा सकता है कि नामदेव की भाषा मूलतः ब्रज है। उस पर मराठी, पंजाबी, राजस्थानी, रेख़ता का प्रभाव है। इनके अतिरिक्त लोक-भाषाओं से भी काफी शब्द लिए गए हैं।

पाठ-सम्पादन और पांडुलिपियों की लिपि संबंधी विशेषताएँ

17वीं, 18वीं तथा 19वीं शती की प्राचीन पांडुलिपियों में लिपि संबंधी वैशिष्ट्य लगभग समान है। नामदेव संबंधी पांडुलिपियाँ जो पंजाब (घुमान, पटियाला),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान (नराणा और जयपुर), उ०प्र० (नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी) और महाराष्ट्र (पूना और पंढरपुर) से प्राप्त हुई हैं, उनमें निम्न समानताएँ हैं—

1. प्राय: सभी पांडुलिपियों में 'ख' ध्वनि 'ष' के रूप में मिलती है। जैसे—साषित, बषांनै, पेषूं, षोटा, षेलै, पाषंड आदि। पाठ-सम्पादन में उसे 'ख' ही लिखा गया है। मूर्धन्य व्यंजनों के संयोग में 'ष' मूर्धन्य 'ष' ही है। यथा—भ्रिष्ट, कष्ट, काष्ट आदि। उसे यथावत् रखा गया है।
2. प्राचीन पांडुलिपियों में 'ब' का प्रयोग कम हुआ है। 'व' और 'ब' का अंतर स्पष्ट करने के लिए 'व' का संकेत 'व' के नीचे एक बिंदी लगाकर किया गया है, यथा—'व़', भाव़, जीव़नि, गाव़ै, देव़, भाव़ै। बिंदी वाला 'व' अर्ध स्वर और बिना बिंदी वाला 'ब' द्वयोष्ठ्य व्यंजन है। पाठ-सम्पादन में उन्हें यथावत् रखा गया है।
3. अनेक स्थानों पर 'ब' के लिए 'व' लिखा गया है। पाठ-सम्पादन में उसे यथावत् रखा गया है, जैसे—बिथा, बधु, बाइ, बेद, बादन।
4. 'य' और 'ज' का अंतर स्पष्ट करने के लिए 'य' के नीचे एक बिंदी लगाकर उससे 'य' का संकेत दिया गया है, जैसे—दीनदय़ाला। बिंदी वाला 'य' अर्धस्वर है और बिना बिंदी वाला 'ज' है। पाठ-सम्पादन में इस अंतर को बनाए रखा गया है।
5. प्राचीन पांडुलिपियों में संयुक्ताक्षर 'ज्ञ' नहीं होता है। उसे सदैव 'ग्य' के रूप में लिखा गया है, जैसे—ग्यांनी, आग्या, ग्यांन, अग्यांन, जग्य आदि।
6. 'ये' ध्वनि के लिए 'यें' और 'ऐ' तथा 'य' के स्थान पर 'अ' का प्रयोग हुआ है। यथा हीअरे, जीअ, दइआ आदि।
7. पदान्त 'य' और 'व' (अर्ध स्वर) के अंत में ध्वनि-संकेत नहीं मिलते हैं। उनके स्थान पर 'ऐ' और 'औ' की मात्राएँ दी गई हैं। जैसे—अनभै (अनुभव), भौ (भव), निरभै (निर्भय) आदि।
8. 'अ' और 'इ' के स्थान पर प्राय: 'य' का प्रयोग हुआ है। यथा—च्यारि (चार), छीप्या (छीपा), च्यंता (चिंता), स्यंगार (सिंगार या शृंगार), प्यंड (पिंड), गोब्यंद (गोविंद), स्यंघ (सिंघ या सिंह)। इन्हें पाठ-सम्पादन में पांडुलिपि की गुणवत्ता के आधार पर रखा गया है।
9. 'ऋ' की ध्वनि कई रूपों में प्रयुक्त हुई है, यथा—क्रितम, त्रिण, द्रिष्टी, ग्रह, सुम्रत, क्रिसन, करसंन, क्रिपा, रिण, त्रिस्ना आदि।
10. 'रकार' के प्रयोग में भी लचीलापन रहा है। यथा—गरब, सरब, प्रवत, निरमल आदि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11. आनुनासिकता (चन्द्र बिंदु) और नसिक्य व्यंजन दोनों के लिए अनुस्वार का प्रयोग हुआ है, यथा—कंटक, अंजन, नांउं, नांम, करसंन, कुंभ, हंस, गंगा, आँख, जांचै, नांमा, धंन, सनांमां, पयांनां आदि।
12. आनुनासिक वर्णों—जैसे 'न' और 'म' से पूर्व भी अनुस्वार लगाया गया है, यथा—धंन, संपदा, नांमदेव, कांमनां, नांमां, स्वांमां।
13. अन्त्य 'ना' और 'मा' पर भी अनुस्वार दिए गए हैं, यथा—जानां, कामनां, नांमां, स्वांमां, पानां, पयांनां आदि।

इनके अतिरिक्त पांडुलिपियों के प्रतिलिपिकारों ने अपने-अपने विशिष्ट प्रयोगों, भाषा तथा लिपि संबंधी विकारों को स्थान-स्थान पर दिया है, यथा—

1. ह्रस्व को दीर्घ, दीर्घ को ह्रस्व लिखा गया है, यथा—जाती (जाति), हरी (हरि), दुनीया (दुनिया), धोबीया (धोबिया), परहरीये (परहरिए) आदि।
2. पूर्व में लगने वाली मात्राएँ बाद में लगाई गई हैं, जैसे पुरिष (पुरषि), मंदरि (मंदिर) आदि।
3. मात्राओं का लोप किया गया है, यथा—धू (ध्रुव), पहिलाद (प्रहिलाद) आदि।
4. एक ही पांडुलिपि में प्रतिलिपिकार ने शब्दों को दो या तीन प्रकार से लिखा है, यथा—सिंघ्र-स्यंघ, मंदरि-मिंदर, ग्रिह-गिर्ह, नारायण-नाराइण, सेवक-सेवग, हरी-हरि, नृमल-न्रिमल, नरांइण-नारांइण आदि।
5. अर्ध रेफ को व्यंजन के बाद में न देकर, व्यंजन से पूर्व दिया गया है, यथा—स्रब (सर्व), ग्रब (गर्व), क्रम (कर्म) आदि।
6. कहीं 'ण' को 'न' और कहीं 'न' को 'ण' लिखा गया है, यथा—कौंण, श्रवननि, पयांणा, घणौं, भानि, चरनूं, भनत आदि।
7. 'ष' और 'श' के स्थान पर 'स' तथा 'ष' के स्थान पर 'श' का प्रयोग किया गया है, यथा—पासी, सिला, संसै, कृश्न, करसंन, अस्व, रोस आदि।
8. व्यंजन के संयोग में आने वाला अर्द्ध 'रे' पूर्ण की तरह और पूर्व का व्यंजन अर्द्ध की तरह लिखा गया है, यथा—प्रबत (पर्वत), क्रमना (कर्मणा), ब्रतमान (वर्तमान)।
9. 'औ' के स्थान पर 'ओ', 'ऐ' के स्थान पर 'ए' तथा 'ए' के स्थान पर 'ऐ' का प्रयोग हुआ है, जैसे—कहे (कहै), गावे (गावै), ओषद (औषध), तौ (तो), बांध्यौ (बांध्यो), ऐकादशी (एकादशी), ऐक (एक) आदि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'गुरु ग्रंथ साहिब' की स्थिति और भी विकट है। उसके पदों को पुनर्सम्पादित करके उन्हें 'टेक' या 'रहाउ' से प्रारंभ किया गया है। पांडुलिपियों में पाए जाने वाले समान पाठों को, 'गुरु ग्रंथ साहिब' के पाठ की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया गया है क्योंकि 'गुरु ग्रंथ साहिब' में भाषा-विकार और लिपि-दोष पर्याप्त मात्रा में हैं। 'गुरु ग्रंथ साहिब' के उन पदों को जो पांडुलिपियों में नहीं मिलते हैं, उनके उकार बहुला शब्दों और क्रियाओं को यथावत् रखा गया है, जैसे दूधु, उपदेसु, नैवेदु, चितु, बिटारिउ, रहिउ, जीतिउ आदि।

'य' और 'व' के स्थान पर 'उ' व 'आ' के प्रयोगों को भी यथास्थान रखा गया है, जैसे—माधउ, नामदेउ, महादेउ, भइआ, तारिअले, पाइऊ, देखिआ, सेविआ आदि।

पांडुलिपियों के प्रतिलिपिकारों ने उपर्युक्त तथ्यों को अपने-अपने ढंग से लिखा और प्रयुक्त किया है। ऐसी स्थिति में नामदेव के बहु प्रयुक्त शब्दों की ध्वनियों, विशिष्ट प्रयोगों, अनेक प्रतियों में पाए जाने वाले एक समान पाठों को ही पाठ-सम्पादन में मूल पाठ के रूप में स्थान दिया गया है। मूल पाठ निर्धारण में नामदेव के व्याकरण सम्मत प्रयोगों तथा प्रतियों की प्राचीनता का भी विशेष ध्यान रखा गया है।

मुद्रित ग्रंथ

नामदेव के हिंदी-पदों के मुद्रित ग्रंथों का विवरण इस प्रकार है—

1. **'गाथा पंचक' अर्थात् 'सकल संत गाथा'**—सं० श्री त्र्यम्बक हरी आवटे, इंदिरा मुद्रणालय, पुणें, 1924.

तथा

'गाथा पंचक' अर्थात् 'सकल संत गाथा', सं० श्री काशीनाथ अनंत जोशी, संत वाङ्मय प्रकाशन मंदिर, पुणें, सन् 1967.

'गाथा पंचक के पहले व दूसरे संस्करण में 'नामदेव महारांजाचे हिन्दुस्तानी पदें' शीर्षक से 102 पद संकलित किए गए हैं। मराठी के विद्वानों ने नामदेव के पदों की तीसरी शाखा—'महाराष्ट्रीयन शाखा' की कल्पना की है। वस्तुत: नामदेव ने अधिकांश हिंदी पदों की रचना उत्तर भारत विशेषकर पंजाब-प्रवास में की थी। वे 80 वर्ष की आयु में लौटकर पंढरपुर गए थे और विट्ठल मंदिर के समक्ष समाधि ले ली थी। अत: यह भ्रांति है कि उन्होंने महाराष्ट्र में रहकर हिंदी पद लिखे या तथाकथित महाराष्ट्रीयन शाखा का कोई अस्तित्व है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'गाथा पंचक' में जिन 102 छंदों का संग्रह किया गया है वे सभी 'गुरु ग्रंथ साहिब' तथा दादूपंथी हस्तलिखित ग्रंथों में मिल जाते हैं। उनमें पाठ-विकार तथा भाषा-विकार पर्याप्त मात्रा में हैं साथ ही मराठी का पुट दे दिया गया है। 'गाथा पंचक' के संकलन में न नवीनता है, न मौलिकता और न प्रामाणिक पाठ के निर्धारण का प्रयास है। यह एक सामान्य संग्रह है जिसका महाराष्ट्र में कभी ऐतिहासिक महत्त्व रहा होगा।

2. संत नामदेव की हिंदी पदावली—सं० भगीरथ मिश्र एवं राजनारायण मौर्य, पूना विश्वविद्यालय, पुणें, सन् 1964. ,

इसमें मुद्रित और हस्तलिखित स्रोतों से 230 पदों को संकलित किया गया है। इनमें 165 पद हस्तलिखित और मुद्रित रूप में प्राप्त हुए, 14 पद पूना की प्रति, 14 पद पंडरपुर की प्रति, 5 पद घुमान की प्रति, 'गुरु ग्रंथ साहिब' से प्राप्त होने वाले 25 पद, 'सर्वंगी' से प्राप्त होने वाले 3 पद तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त 4 पद—इस तरह 65 पद मिलाकर 230 पद दिए गए हैं।

नामदेव पर किया गया यह कार्य पाठालोचन पर आधारित था जिसमें पाठ-सम्पादन की सामग्री का परीक्षण करते हुए प्रतियों के पारस्परिक संबंधों को निश्चित किया गया था। संपादन-प्रणाली और पाठ-निर्णय के स्पष्ट संकेत देते हुए, पदों के साथ विभिन्न प्रतियों के पाठ-भेद और अंत में कठिन शब्दार्थ देकर सम्पादन को उपयोगी बना दिया था।

इस सम्पादन में नामदेव की युगीन परिस्थितियों तथा उनके जीवन-वृत्त पर भी गहराई से विचार किया गया था।

किंतु इस कार्य की अपनी सीमाएँ थीं—

1. सम्पादक द्वय को 992 व 1021 जैसी प्राचीन प्रतियाँ देखने को नहीं मिली थीं। ये केवल प्राचीन ही नहीं थीं बल्कि सर्वाधिक शुद्ध एवं प्रामाणिक पाठ वाली भी थीं।
2. नामदेव का समग्र हिंदी-काव्य-सृजन भी पदावली के माध्यम से नहीं आ सका था।
3. अधिकांश प्रतियों में पाए जाने वाले पाठों के सम्पादन में तो उनकी गहरी रुचि रही, किंतु अन्य पदों के सम्पादन में वे उतने गंभीर नहीं रह सके हैं। यथा 'गुरु ग्रंथ साहिब' के पदों का पुनर्सम्पादन आवश्यक था क्योंकि उसमें भाषागत कमियाँ तो थीं ही, पाठों के आगम व लोप की स्थितियाँ भी बहुतायत से थीं। साथ ही उनका प्रारम्भ 'टेक' या 'रहाउ' से न होकर प्रथम या द्वितीय चरण से किया गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. अर्थ-संगति और शब्द की पहचान में भी सम्पादकों से चूक हो गई थीं। 'पदावली' और 'रचनावली' के कुछ उदाहरणों से इसे देखा जा सकता है—

(क) मम थिर होई बा रे। (पदावली, 64, पहली पंक्ति)

× × ×

मन थिर न होइ बारे न होई। (रचनावली, 71)

(ख) करम करै सो सूझै नांहीं, **बहुतक करम** कराई। (पदावली, 64, 8वीं पंक्ति)

× × ×

करम करै सो सूझै नांहीं, **बहुत कुकरम** कराई। (रचनावली)

(ग) मन में **कांती** जीव संघारै। (पदावली, 64, 10वीं पंक्ति)

× × ×

मन मैं **काजी** जीव संघारै। (रचनावली)

(घ) मन पवन **दिठ** डांडी। (पदावली, तीसरी पंक्ति)

× × ×

मन पवन **दिढ** डांडी। (रचनावली)

(ङ) लोहा तांबा **बंदन** कीन्हा, पाइ परी है **बेरिया**। (पदावली, 68)

× × ×

लोहा तांबा **बांदन** कीन्हा, पाइ परी हैं **बेरियां**। (रचनावली, 76)

(च) **वौ सांप्या सन भाजहीं**, भजीये भगवाना। (पदावली)

× × ×

ओसै प्यास न भागि है, भजिए भगवानां। (रचनावली)

(छ) **पूजण कूं साधू जणां, हरि के अधिकारी।**
इन संगि गोविंद गाइये, वै पर उपकारी॥ (पदावली)

× × ×

पूजा करि साधू जनहिं, हरि को प्रणधारी।
उन तैं गोबिंद पाइयै, वे पर उपकारी॥ (रचनावली)

फिर भी इस सम्पादन का अपना महत्त्व था। अब यह अप्राप्य है।

3. संत नामदेव और हिंदी पद साहित्य—सं० रामचन्द्र मिश्र, शैलेन्द्र साहित्य सदन, फर्रुखाबाद, प्रथम संस्करण, 1969.

यह सीमित उद्देश्य से नामदेव पर किया गया संकलन कार्य है।

इसमें 'गुरु ग्रंथ साहिब' के 61 पद तथा 'गाथा पंचक' के 102 छंद संकलित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किए गए हैं। यह सभी पूर्व प्रकाशित सामग्री है। इसमें 'गुरु ग्रंथ साहिब' और 'गाथा पंचक' के समान छंदों की छँटाई व सम्पादन तक नहीं हुआ है।

4. संत नामदेव और उनका हिंदी साहित्य—सं० कृ० गो० वानखडे गुरुजी, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, प्रथम संस्करण, 9 नवंबर, 1970.

नामदेव पर जो भी संकलन कार्य हुए, वे मात्र संग्रह की दृष्टि से किए गए। इस रचना में वानखडे ने निजी प्रयासों से उत्तर भारत में 10 वर्षों तक घूमकर 301 पदों का संग्रह किया था। उनका उत्साह और श्रम प्रशंसनीय है किंतु यह उनका पद-संख्या-वृद्धि के लिए अति उत्साह में किया गया कार्य है। परिणामस्वरूप इसमें पदों का सामान्य मिलान तक नहीं किया गया है। बिना पाठ-सम्पादन और सूक्ष्म-पर्यवेक्षण के छंदों को बेतरतीबी से इकट्ठा कर दिया गया है जिससे काफी पदों की 2-2 तथा 3-3 बार पुनरावृत्ति हो गई है। कुछ पद ऐसे हैं जिनमें केवल टेक चरण बदल दिया गया है। शेष चरण दूसरे पदों के रख दिए गए हैं।

निष्कर्ष यह है कि नामदेव पर किए गए कार्य न तो विश्वसनीय थे और न प्रामाणिक। उनमें पाठ-निर्धारण और पाठ-संशोधन भी नहीं हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामदेव की आध्यात्मिक मान्यताएँ

1. नामदेव ने अपने उपास्य को कई नामों से अभिहित किया है। इन नामों में 'विट्ठल' और 'राम' प्रमुख हैं।[1] उनके राम निर्गुण, निराकार, अव्यक्त, अवगति, निरंजन, गुणातीत और सर्वव्यापी हैं। सभी जीव उनसे उद्‌भूत होते हैं। सभी में उनका निवास है—

सरबे भूत नांमां पेखूं, जल जांऊं तू ही ज देखौं ॥ 1 ॥ (रचनावली, 12)

× × ×

जत्र जांऊं तत्र बीठल भैला।
बीठलि यौ राजा रांम देवा॥

× × ×

आंऊं तौ बीठल जाऊं तौ बीठल, बीठल व्यापक माया।
नांमा का चित हरि सूं लागा, ताथैं परंमपद पाया॥ (रचनावली, 68)
ई भइ बीठल, उ भइ बीठल, बीठल बिन संसारू नहीं॥

× × ×

जामैं सकल जीव की उतपति, सकल जीव मैं आप जी।
माया मोह करि जगत भुलाया, घटि घटि ब्यापक बाप जी॥ (रचनावली, 54)

राम, हरि, केशव, विट्ठल, माधव, गोविंद, केशव, मुरारी आदि के एकत्व को उन्होंने जल-तरंग-न्याय के अनुसार सर्वत्र अनुभव किया है—

---

1. राम सौ धंन ताकै कहा अब थोरौ॥ (रचनावली, 3)

× × ×

रांम नांम खेती, रांम नांम बारी॥ (रचनावली, 2)

× × ×

मंझा प्रान तू बीठला॥ (रचनावली, 4)

× × ×

गोबिंदु गाजै सबदु बाजै॥ (रचनावली, 191)

× × ×

बेधीअले गुपाल गोंसाई॥ (रचनावली, 190)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभु गोबिंदु है, सभु गोबिंदु है, गोबिन्द बिनु नहीं कोई ॥
सूतु एकु मणि सत सहंस, जैसे ओति पोति प्रभु सोई ॥
एक अनेक विआपक पूरक, जत देखउ तत सोई ॥
माइआ चित्र बचित्र बिमोहित बिरला बूझत कोई ॥
जल तरंग अरु फेन बुदबुदा, जल ते भिंन न होई ॥
इहु परपंचु पारब्रह्म की लीला, बिचरत आन न होई ॥ (रचनावली, 193)

आत्मा और परमात्मा के संबंध को उन्होंने मेघ-बूंद के न्याय से भी व्यक्त किया है—

नांमदेव जल मेघ्र बूंद, मिलि रह्या ज्यूं सोई ॥ (रचनावली, 91)

2. नामदेव के परम तत्त्व का न कोई रूप है, न रेखा है, न कोई वर्ण है। वह अनिवर्चनीय है। समस्त जगत में व्याप्त होते हुए भी आत्म-तत्त्व से अभिन्न है—

कहत नामदेव परंम तत अैसा, जाकै रूप न रेख बरन कहूं कैसा ॥ (रचना०, 30)

× × ×

तेरी गति तू ही जानैं।
अलप जीव गति कहा बखानैं ॥
जैसा तूं कहियै तैसा तूं नांही, जैसा तूं है तैसा आछि गुसांई ॥ (रचना०, 14)

नामदेव के अनुसार ब्रह्म और जीव 'लूण नीर' की तरह न्यारे नहीं हैं। राम 'थावर जंगम कीट पतंगा' सभी के साथ हैं। प्रत्येक प्राणी के भीतर निवास करते हैं। राम को पाने के लिए अन्यत्र भटकने की आवश्यकता नहीं है—

जा कारनि त्रिभुवन फिरि आए, सो निधांन घट भीतरि पाये।
नांमदेव कहै कहूं आइयै न जाइयै, अपनौ रांम घरि बैठे गाईयै ॥ (रचना०, 29)

इस प्रकार राम को प्रत्येक प्राणी में आत्मा के रूप में स्थित मानते हुए उन्हीं को प्राप्त करने का उपदेश दिया है और उन्हें 'स्वयंभू देव', 'आत्मदेव' और 'आत्माराम' कहा है—

स्वयं भू की सेवा जानैं, तौ दिब द्रिष्टी कै सकल पिछानै।
नामदेव भणैं मेरे एक हीं पूजा, आतमराम अवर नहीं दूजा ॥ 4 ॥ (रचना०, 20)

3. नामदेव ने मिथकीय संदर्भों का बार-बार उल्लेख किया है तथा विष्णु के अवतारों की पौराणिक गाथाओं पर पूरी आस्था व्यक्त की है—

ध्रू प्रहिलाद इहीं गुन तारे, रांम नांम अखिर हिरदै बिचारे ॥ 1 ॥
रांम नांम सनिकादिक राता, रांम नांम निरभै पद दाता ॥ 2 ॥ (रचनावली, 61)

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाचै धरां संनक सनंदन संत कुवार, सनकादिक अंबरीक।
सुख प्रहिलाद वभीषन, हणवंत नारद ध्रूव उधव अक्रूर॥ (रचनावली, 63)

× × ×

देव पाहन तारीअले।
राम कहत जन कस न तरे॥
तारी ले गनिका बिनु रूप कुबिजा बिआधि अजामलु तारीअले।
चरन बधिक जन तेऊ मुकति भए, हउ बलि बलि जिन राम कहे॥ 1॥
दासी सुत जनु बिदरु सुदामा, उग्रसैन कउ राज दीए।
जपहीन तपहीन कुलहीन क्रमहीन, नामे के सुआमी तेऊ तरे॥ 2॥ (रचना०, 92)

दो पदों में उन्होंने विस्तार से नृसिंह अवतार की कथा कहकर भगवान् के प्रणत-रक्षक धर्म का प्रतिपादन किया है।[1] एक पद में उन्होंने 'नारद गीता' कही है,[2] जिसमें विस्तार से नारायण ने नारद से अपने भक्ति-धर्म का निरूपण किया है। इससे आभास होता है कि नामदेव का निर्गुण-पंथ की ओर झुकाव होते हुए भी सगुणोपासना के अपने पूर्व संस्कारों से मुक्त नहीं हो पाए थे।

4. नामदेव की भक्ति का वैशिष्ट्य उनकी तन्मयता और एकनिष्ठता में निहित है। ऐसी उत्कट तन्मयता की समता लौकिक साक्ष्यों से नहीं दी जा सकती है, किंतु उसे व्यक्त करने के लिए नामदेव लौकिक बिम्ब खोज ही लेते हैं—

राम राइं तुलगूं और न जाचौं।
सरीर अनंत जाउ भलैं जाउ जाउ॥ (रचनावली, 38)

× × ×

अैसै रामहिं जानू रे भाई।
जैसे भ्रिंगी कीट रहै ल्यौ लाई॥ (रचनावली, 64)

× × ×

अैसैं रांम अैसैं हेरो।
रांम छाडि चित अनत न फेरौ॥
ज्यूं विषई हेरै पर नारी, कौडा डारत फिरै जुवारी॥ 1॥
ज्यूं पासा डारै पसवारा, सोना घड़ता हिरै सुनारा॥ 2॥ (रचनावली, 65)

× × ×

1. नामदेव रचनावली, 138, 147.
2. नामदेव रचनावली, 110.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनिया बिन मीन तलपै।
अैसें रांम नांम बिन बापुरौ नांमां॥
तन लाइले तालाबेली, बछा बिन गाइ अकेली॥ (रचनावली, 66)

कवि ने मिलन-उत्कंठा को जिस शब्द से व्यक्त किया है, वह 'तालाबेली' अर्थात् छटपटाहट या व्याकुलता है। 'तालाबेली' में व्याकुलता या छटपटाहट से भी अधिक गहरी व्यंजना है। प्रेम की सघनता है। नामदेव की यह 'तालाबेली' कान्ता-भाव के रूप में भी व्यक्त हुई है। यह व्याकुलता उन्हें 'मतवाली', 'बौराई' नवविवाहिता बना देती है, जो अपने ब्रह्म रूपी पति को रिझाने के लिए रच-पच कर श्रृंगार करने लगती है—

भले निंदउ भले निंदउ भले निंदउ लोगु।
तन मन राम पिआरे जोगु॥
मैं बउरी मेरा राम भतारू, रचि रचि ता कउ करउ सिंगारु॥ 1॥
बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै, रसना राम रसाइनु पीजै॥ 2॥ (रचना०, 152)

इसके लिए उसे लोकापवाद का भी भय नहीं है।

आध्यात्मिक-मिलन का सुख असीम हर्ष के रूप में उसमें छलका पड़ता है—

धनि दिहाडौं धनि घड़ी ए।
साधौ भाई गोब्यंद जी घर आव्या ए॥
चंदनि चौक पुरावि ज्यौ ए, साधौ भाई पाँच सखी मिलि र बधावा॥ 1॥
गगन मंडल म्हारौ बैसणौं ए, साधौ भाई बाजै अनहद तूरौ ए॥ 2॥
हरि जी आव्या म्हारै पांहुणां रे, साधौ भाई आज बधावौ पूरौ ए॥ 3॥
(रचनावली, 157)

मिलन की तरह उनका आध्यात्मिक विरह भी मार्मिक और प्रभावी है—

मोर पिया बिलम्यो परदेस, होरी मैं कासौ खेलौ।
घरी पहर मोहिं कल न परतु है, कहत न कोउ उपदेस॥ 1॥
झर्‌यो पात बन फूलन लाग्यो, मधुकर करत गुंजार।
हा हा करौ कंथ घर नाहीं, कै मोरी सुनै पुकार॥ 2॥
जा दिन तें पिय गवन कियो है, सिंदुरा न पहिरौं मंग।
पान फुलेल सबै सुख त्याग्यो, तेल न लावो अंग॥ 3॥
निसु बासर मोहि नींद न आवै, नैन रहे भरपूर।
अति दारुन मोहिं सवति सतावै, पिय मारग बडि दूर॥ 4॥ (रचनावली, 225)

5. नामदेव के अनुसार 'राम की प्राप्ति का प्रमुख उपाय नाम-स्मरण है। अपने पदों में उन्होंने इस उपाय पर सर्वाधिक बल दिया है। राम का नाम इतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामर्थ्यवान है कि बड़े से बड़े पापी भी पवित्र हो जाते हैं। नाम-स्मरण करते ही बाहरी कर्म-कांडों, विधि-विधानों की आवश्यकता नहीं पड़ती—

कौनैं कै कलंक रह्यौ रांम नांम लेत ही।
पतित पांवन भये राम कहत ही॥
राम संगि नांमदेव जिनहु परतीति पाई।
एकादसी बरत करै काहे को तीरथि जाई॥ (रचनावली, 28)

× × ×

नाम लेत सनकादिक तारे, पार न पायौ तास हरी॥ (रचनावली, 8)

हरि का नाम लेते ही यमराज भी भाग जाता है—

जन नांमदेव पाया नांउं हरी।
जंम आइ का करि है बौरे, अब मोरी छूटि परी॥ (रचनावली, 8)

पूरे विश्व में नाम ही सार-तत्त्व है। शेष निस्सार है। कलियुग में मन से, वचन से, कर्मों से केवल हरि-नाम का ही सहारा है—

सार तुम्हारा नांउं है, फूटा सब संसार।
मनसा बाचा क्रमना, कलि केवल नांम अधार॥ (रचनावली, 57)

नाम-स्मरण के समक्ष सभी प्रकार के साधन व्यर्थ और निस्सार हैं। उसकी तुलना कोई भी साधन नहीं कर सकता है—

सुनो भाई महिमां नांम तनी।
मारहा सतगुरु पासैं जो मैं सुनी॥
कोटि कोटि बार जौ पढिये बेद, सकल सास्त्र कौ लीजै भेद॥
पुरान अठारह को मत जोइ, रांम नांम समि तुलै न कोइ॥ 1॥
कोटि कोटि कूप खिणांवै, कोटि कोटि कन्या दे प्रणाइ।
कोटि कोटि बार जौ कीजै ज्यगि, तुलै न नांम सहंश्र मैं भागि॥ 2॥ (रचना०, 78)

× × ×

छाडि छाडि रे मुग्ध नर कपट न कीजै।
गोब्यंद नारांइण नांम मुखा लीजै॥
कोटि जो तीरथ करै, तन जौ हिंवाले गलै।
पृथ्वी सकल परदक्षिन दीजै, करवत कासी में लीजै।
सिव कूं जे सीस दीजै, रांम नांम सरि तऊ न तुलै॥ (रचनावली, 105)

6. नामदेव जब राम-दर्शन की बातें करते हैं, तब उनका अभिप्राय आत्मदर्शन से होता है। इसी प्रकार जब वे हरि-लीनता की बातें करते हैं, तो उनका अभिप्राय आत्म-लीनता से होता है। नामदेव ने बार-बार अपने को पहचानने और आत्म-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्यय पर बल दिया है। अपने को पहचाने बिना हरि को पहचानना असंभव है—

का नाचीला का गाईला।
का घसि घसि चंदन लाईला॥
आपा पर नहीं चीन्हीला, तौ चित चिता रे डहकीला॥ (रचनावली, 20)

× × ×

सकल निरंतर चीन्हि ले आपा॥ (रचनावली, 21)

× × ×

काहे कू कीजै ध्यांन जपनां।
जौ मन नाहीं सुध अपना॥ (रचनावली, 23)

7. नाम-स्मरण के अतिरिक्त राम-भक्ति और राम-प्राप्ति का उपाय वही माना है जो आत्म-दर्शन और आत्मानुभूति का हो सकता है। यह उपाय हठयोग का है। अपनी युवावस्था में नामदेव नाथ-पंथी निवृत्तिनाथ, ज्ञानदेव, सोपानदेव, मुक्ताबाई और विसोबा खेचर के संसर्ग में आए थे। उनके विचारों का नामदेव पर गहरा प्रभाव पड़ा था जिससे नामदेव की भक्ति-धारा दूसरी दिशा में मुड़ गई थी। हठयोग-साधना के उपादानों, योगिक शब्दावली तथा अनुभूतिपरक अद्वैत-चिंतन को उन्होंने अपने पदों में बार-बार प्रयुक्त किया है—

देवा बेन बाजै गगन गाजै, सबद अनाहद बोलैं।
अंतरगति की जानैं नांहीं, मूरख भरमत डोलैं॥
चंद सूर दोऊ सम करि राखूं, मन पवन ढिढ़ डांडी।
सहजैं सुषमन तारा मंडल, इहि बिधि त्रिस्नां खांडी॥ (रचनावली, 72)

× × ×

गगन मंडल में रहनि हमारी, सहज सुनि ग्रिह मेला।
अंतरधुनि मैं मन बिलबांऊं, कोई जोगि याग मिल हैला॥ 3॥ (रचना०, 72)

× × ×

नादि समाइलो रे।
सतगुरु भेटिले देवा॥
जह झिलिमिल कारु दिसंता, तह अनहद सबद बजंता॥ (रचनावली, 89)

× × ×

बैरागी रांमहि गांऊंगा।
सबद अतीत अनाहद राता, आकुलि कै घर जांऊंगा।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखंड मंडल निराकार मैं, अनहद बेन बजांऊंगा॥ 2॥
इला प्यंगुला सुषमन नारी, पवनां मंझि समांऊंगा।
चंद सूर दोऊ समि करि राखूं, ब्रह्म जोहि मिलि जांऊंगा॥ 3॥ (रचना०, 114)

नाथ-सम्प्रदाय की मानसिक आचार-निष्ठा, अनाहत-नाद का सुनना, परंपरागत कर्मकांडों और अंध-विश्वासों का प्रबल-विरोध नामदेव को नाथ-पंथियों के संसर्ग से मिले थे। इनकी काया-तीर्थ परक साधना, गुरु-महिमा का गुणगान, वेदों, पुराणों और शास्त्रों की अवहेलना; नाथ-पंथियों के अनुकूल ही थी।

8. नामदेव ने प्राणियों पर माया के व्यापक प्रभाव को रेखांकित किया है। वे कहते हैं वह उन्हें ब्रह्म से दूर रखती है। वह हरि की दासी है। अतः माया से मुक्ति हरि-कृपा से ही संभव है। माया के लीला-क्षेत्र विषय हैं। विषयों में लिप्त होने पर इस माया के प्रभाव से प्राणी को सब कुछ गँवाना पड़ता है। दुनिया की हाट में सौदा करने के लिए जीव को माया ही लाती है और उसके भुलावे में पड़कर प्राणी आत्मा-राम को भूल जाता है। वह मनुष्य को उसी प्रकार भ्रम में डालती है जैसे खेत का बिजूका मृग को भ्रम में डालता है—

रांम देव तेरी दासी माया, माया का पट कीन्हां।
थावर जंगम जीति लये हैं, आपा पर नहीं चीन्हां॥ (रचनावली, 58)

× × ×

बीहूं बीहूं तेरी सबल माया।
आगे इनि अनेक भरमाया॥
माया के अंतरि ब्रह्म न दीसै, ब्रह्म के अंतरि माया न दीसै॥.1॥
भगत नांमदेव आप विधानां, दहु थोड़े न चढाइ हो कान्हां॥ 2॥ (रचना०, 39)

× × ×

रांम राइ माया लाई, सब दुनियां सौदे आई।
सब दुनियां सौदा कीन्हा, काहूं आतम रांम न चीन्हा॥ 2॥
मृग खेत बिझूका देखै, भैचकि भैचकि पेखै।
निकट गयां सुधि पाई, अड़वा थैं कहा डराई॥ 3॥ (रचनावली, 83)

माया की आड़ में छिपा हुआ काल भी प्राणी पर आक्रमण करता रहता है। मया ही जीव को हरि से मिलने नहीं देती है। अतः नामदेव के अनुसार इस संसार से मुक्त होने के लिए माया से अलग होना आवश्यक है। जो लोग दिन-रात हरि का भजन न कर विषय-वासना में लिप्त रहते हैं, पर धन और पर दारा के लोभ में पड़े रहते हैं, ऐसे मायालिप्त मनुष्यों से भी वे दूर रहने की सलाह देते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधौ जी माया मिलण न देई।
जन जीवैं त्यौं करो हो सनेही॥ (रचनावली, 125)

× × ×

काल भै बाण सह्या न जाइ।
महा भैभीत जगत्र कूं खाइ॥
अनेक मुनेस्वर झूझै जाइ, सुर नर थके करत उपाइ॥
कंपै पीर पैकंबर देव, रिषि कंपैं चौरासी जीव॥ (रचनावली, 44)

9. नामदेव ने जीवन और जगत की नश्वरता पर बल देते हुए काल की भयानकता की ओर संकेत किया है। उनके अनुसार काल-व्याल के पाश से मुक्ति राम-रसायन के पान करने से ही मिल सकती है—

रे मन पड़सि भोला पंजरै, संसार माया जाल रे।
ऐक दिन मैं तीनि फेरा, ताकौं सदा झंपै काल रे॥
धन रूप जोबन देखि करि, ग्रब्यौ कहा गंवार।
कुंभ काचौ नीर भरियौ, बिनसत नांही बार॥
पाहुंनड़ा दिन च्यारि का, बुदबुदा गया बिलाइ॥ (रचनावली, 86)

10. नामदेव के पदों में उत्कट हरि-प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। ब्रह्म से उन्होंने अपना संबंध स्वामी-सेवक, माता-पिता-पुत्र, सरोवर-तरंग तथा तरुवर-पंखी के समान माना है—

प्रणवंत नांमां भये निहकांमां, तुम्ह ठाकुर मैं दासा॥ (रचनावली, 6)

× × ×

माई तूं मेरे बाप तूं, कुटबी मंझा बीठला॥ (रचनावली, 34)

× × ×

माइ गोब्यंदा बाप गोब्यंदा।
जाति पांति गुरुदेव गोब्यंदा॥ (रचनावली, 35)

× × ×

रांम माता रांम पिता, रांम सबै जीव दाता॥ (रचनावली, 9)

× × ×

रांम सनांमां रांम ही नांमां।
तुम साहिब मैं सेवग स्वांमां॥
हरि सरवर जन तरंग कहावै, सेवग हरि तजि कहु कत जावै॥ 1॥
हरि तरवर जन पंखी छाया, सेवग हरि भजि आप गंवाया॥ 2॥ (रचना०, 7)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11. परमार्थ-साधना में अग्रसर होने के लिए नामदेव ने सत्संग का उपदेश दिया है। उनका कथन है कि भक्तों के आगमन से चारों प्रकार की मुक्तियाँ सहज ही सुलभ हो जाती हैं और गोविंद मिल जाते हैं—

जा दिन भगता आईला।
चार्‍यू मुकती पाईला॥
बैस्नौ हिरदै समाईला, जन नांमदेव आनंद गाईला॥ (रचनावली, 31)

× × ×

संत सू लेणां संत सूं देणां।
सत संगति मिलि दूतर तिरणां।
संत की छाया, संत की माया, संत संगति मिलि गोब्यंद पाया।
असंत संगति नामां कबहूं न जाई, सत संगति मैं रह्या समाई॥ (रचना०, 32)

× × ×

भक्त-ताप से झुलसे व्यक्तियों को संत-संगति वृक्षों की स्निग्ध छाया के समान है। उनके संसर्ग से उदात्त भाव जगने लगते हैं। दुविधा समाप्त हो जाती है और आत्मा ज्ञान के प्रकाश से उद्भाषित होने लगती है—

आज कोई मिलिसी रे मूनैं रांम सनेही।
तब सुख पावै हमारी देही॥
भाव भगति मन में उपजावै, प्रेम प्रीति हरि अंतरि आवै॥ 1॥
आपा पर दुबिध्या सब नासैं, सहजै आतमां ग्यांन प्रकासै॥ 2॥
जन नांमां मन खरा उदास, तब सुख पावैं मिलै हरिदास॥ 3॥ (रचना०, 118)

भक्तों को उन्होंने भगवान का ही रूप बताया है। उनके अनुसार भक्त और भगवान में कोई अंतर नहीं है, किंतु ममता (माया) के दूर होने पर ही साधु-संगति मिलती है—

भगवंत भगता नहीं अंतरा।
द्वै करि जांणैं पसु बानरा॥ (रचनावली, 137)

नामदेव की भक्ति में अद्वैत भाव व सर्वात्मवाद दोनों का मेल हुआ है। उनकी भक्ति इस सीमा तक पहुँच जाती है, जहाँ नारायण-विरोधी उन्हें असह्य प्रतीत होते हैं—

जो न भजै नर नारांयणां।
ताकौ मैं न करौं दरसनां॥ (रचनावली, 145)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12. नामदेव ने बाह्याडम्बरों जैसे मूर्ति-पूजा[1], तीर्थ-यात्रा[2] और बहुदेवोपासना[3] आदि का विरोध किया है। उनके स्थान पर आंतरिक तन्मयमूलक भक्ति को प्रश्रय दिया है। सद्गति प्रदान करने वाले साधनों का उल्लेख करते हुए बताया कि इनमें से एक भी राम-नाम के समान नहीं है।[4]

---

1. पाहण आगैं देव का टीला, वाकौं पाण नहीं वाकी पूजा रचीला।
आंगणि देव पिछो कडि पूजा, पाहण पुजि भये न दूजा॥
नामदेव कहे सुणौं रे भाई, राम बिना सब नृकहि जाई॥ (रचनावली, 48)
× × ×
भगत बाबा काङला।
बिन परतीतै पूजैं सिला॥
न्हावै धोवै करै अस्नांन, हिरदै आंखि न माथैं कांन॥ 1॥
गलि पहरैं तुलसी की माला, अंतरगति कोइला सा काला॥ 2॥
नामदेव कहै ए पेटाबलू, भीतरि लाख ऊपरि हींगलू॥ 3॥ (रचनावली, 24)
× × ×
एकै पाथर कीजै भाउ, दूजै पाथर धरिऐ पाऊ।
जे ओहु देउ तऊ ओहु भी देवा, कहि नामदेव हम हरि की सेवा॥ (रचनावली, 196)
2. तीरथ ब्रत जगत की आस, फोकट कीजै बिन बिसवास॥ 2॥ (रचनावली, 62)
× × ×
बिस्व संग लीजौ दजै दांन, कोटि कोटि तीरथ कीजै अस्नांन।
कोटि कोटि जप तप साधै पांन, तऊ न आवै नांम समांन॥ (रचनावली, 78)
× × ×
ऐक बिठूला सरणै जा रे।
तीरथै तीरथै का हींडा रे, लटकया कांई तू बारे॥ (रचनावली, 98)
3. सब झूठे देव पुजांना। (रचनावली, 23)
× × ×
आंन देव सूं दीन न भाखूं, राम रसांइंन रसना चाखूं॥ (रचनावली, 30)
× × ×
हउ तउ एक रमईआ लैहउ।
आन देव बदलावनि दैहउ॥
भैरउ भूत सीतला धावै, खर बाहन उहु छार उडावै॥ 1॥
सिव सिव करते जो नरु धिआवै, बरद चढै डउरू ढमकावै॥ 2॥
महामाई की पूजा करै, नर सै नारि होइ अउतरै॥ 3॥
तू कहीअत हो आदि भवानी, मुकति की बरीआ कहा छपानी॥ 4॥
गुरमति राम नाम गहु मीता, प्रणवै नामा इउ कहै गीता॥ 5॥ (रचनावली, 204)
4. सब बसुधा दाहिणा दै आवै, कोटि कोटि जगि करै रु करावै।
सकल तीरथ करै अस्नांन, नही नही रे हरि नांव समांन॥ 1॥
अनेक धृम मन तैं उपजावै, अगिली पिछली बात बतावै।
कंठ पाठ मुखि बेद पुरांन, नहीं नहीं रे हरि नांव समांन॥ 2॥
काया पलटि बहुत दिन जीवै, यौ ही रहै कुछ खाइ न पीवै।
गगन मंडल मैं जोगे ध्यांन, नही नही रे हरि नांव समांन॥ 3॥
(फिर सुकृत्यों की एक लम्बी शृंखला प्रस्तुत करते हुए कहा है कि ये सभी हरि-नाम-स्मरण से तुलना योग्य नहीं हैं।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारायण ने नारद से कहा भी है कि भक्ति से ही उनके दर्शन होते हैं और उसी के माध्यम से वे प्रसन्न होते हैं। अन्य साधन व्यर्थ हैं—

बैश्नौं मैं दोइ नांहीं नारद, प्रीति कीया तैं आंऊं।
भगति हेत यहु ब्रत धर्‍यौ है, बैश्नों हाथि बंधांऊं नारद ॥ 6 ॥
बिसवा बीस आगैं बरताऊं, निज जन नांव सूं राता।
नांमा नौं स्वांमी परम पद आपै, भगति मुकति दोऊ दाता नारद ॥ 7 ॥

(रचनावली, 110)

नामदेव ने उत्तर भारत में मूर्तियों को खंडित होते, मंदिरों को मस्जिदों में बदलते देखा था इसलिए देव-प्रतिमा और देवालयों से उन्हें विरक्ति हो गई थी। देव-प्रतिमाओं को तोड़ा-फोड़ा जा रहा था। किंतु न देवता क्रोध कर रहे थे और न क्रन्दन। नामदेव का मूर्ति-पूजा से मोह-भंग होना स्वाभाविक था।

नामदेव ने जातिवाद और सम्प्रदायवाद का खुलकर विरोध किया था। महाराष्ट्र तथा उत्तर भारत में हिंदुओं और मुसलमानों के पाखंडों और धर्मान्धता को देखा था इसलिए दोनों पर प्रहार किया था। उन्होंने हीन जाति में उत्पन्न होने का अभिशाप कट्टरपंथी ब्राह्मणों से सहा था।[1] उन्हें मंदिर में कीर्तन करने से रोक

---

1. का करौं जाती का करौं पाती।
राजा रांम सेउं दिन राती ॥ (रचनावली, 18)

× × ×

दीन हीन जात मोरी पंढरी के राया।
ऐसा तुमने नामा दरजी काय कु बनाया ॥ 1 ॥
पूज करते ब्रह्मन उनौ ने बाहेर ढकाया ॥ 2 ॥

× × ×

नाना वर्ण गवा उनका एक वर्ण दूध।
तुम कहां के ब्रह्मन हम कहां के सूद ॥ 4 ॥ (रचनावली, 228)

× × ×

पांडे तुमरी गाइत्री लोधे का खेतु खाती थी।
लै करि ठेगा टगरी तोरी लांगत लांगत जाती थी ॥ 1 ॥
पांडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवत देखिआ था।
मोदी के घर खाणा पाका वाका लड़का मारिआ था ॥ 2 ॥
पांडे तुमरा रामचंदु सो भी आवतु देखिआ था।
रावन सेती सरबर होई घर की जोइ गवाई थी ॥ 3 ॥
हिंदू अंन्हा तुरकू काणा, दुहां ते गिआनी सिआणा।
हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीत, नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीत ॥ 4 ॥ (रचनावली, 205)

× × ×

मास दिवस लग रोजा साधैं, कलमां बंग पुकारैं।
मन में काजी जीव संघारैं, नाव अलाह का सारैं ॥ (रचनावली, 71)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया था। पग-पग पर कराए जाने वाले हीनत्व-बोध से उबरने के लिए उन्होंने भक्ति के वे प्रतिमान स्थापित किए जो सहस्रों वर्षों से उनकी कीर्ति को अक्षुण्ण बनाए हुए हैं।

नामदेव के चिंतन और वारकरी-पंथ की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सर्वतोन्मुखी व्यापकता थी जिसमें धनी-निर्धन, सवर्ण-अवर्ण, गृहस्थ-विरक्त तथा ब्राह्मण से चांडाल तक को समान स्थान प्राप्त था। पंढरीनाथ का द्वारा सभी जाति, धर्म, सम्प्रदाय व वर्ग के लिए खुला था। नामदेव के समसामयिक संत प्रायः हीन जाति के थे। स्वयं नामदेव; छीपी, सावंता; माली, बंका और चोखा; कुम्हार, नरहरि; सुनार, गोरा; कुम्हार, जनाबाई; अन्त्यज दासी तथा वेश्या-पुत्री विट्ठल-भक्तों में सम्मिलित थे। जाति-हीनता से मुक्ति पाने के लिए ही ये सभी विट्ठल-भक्ति में लीन हुए थे। इसीलिए हरिदास को श्रेय देते हुए नामदेव ने जातिवाद का विरोध किया था।[1]

1. षट क्रम सहित विप्र आचारी, तिन सूं नांहि न मेरौ कांमां॥
जौ हरिदास सबनि थैं नीचे, तअ कहैंगे केवल रांमां॥ 1॥
अधम असोच भिष्ट बिभचारी, पुंडरीनाथ कौ लेहि जु नांमां।
वै सब बंध बरग मेरी जीवनि, तिनकै संगि कह्यौ मैं रांमां॥ (रचनावली, 17)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामदेव
समकालीनों व परवर्ती रचनाकारों की दृष्टि में

नामदेव के संदर्भ में मराठी विद्वानों ने अनेक विवाद खड़े किए थे किंतु अब वे निस्सार माने जा चुके हैं। उनमें एक विवाद यह भी था कि 'गुरु ग्रंथ साहिब' के नामदेव और मराठी के अभंग रचनाकार भिन्न थे। अब यह भ्रांति भी निर्मूल सिद्ध हो चुकी है। इस संदर्भ में निम्न तथ्य विचारणीय हैं—

1. दोनों ने अपनी रचनाओं में बार-बार अपने को शिंपी या छीपी कहा है। अपनी जाति की हीनता का बोध उनके हिंदी पदों में बार-बार उभरा है। कई पदों में जातीय प्रतीकों का प्रयोग किया है।
2. दोनों ने विट्ठल की मूर्ति द्वारा दूध पीने, सुलतान द्वारा वध की गई गाय को जीवित करने, मंदिर के दरवाजे का नामदेव की ओर घूम जाने की घटनाओं का उल्लेख किया है।
3. हिंदी-पदों में नामदेव ने मराठी भाषा की शब्दावली और क्रिया-पदों का प्रयोग किया है।
4. उन्होंने मराठी और हिंदी की रचनाओं में समान रचनाधर्मिता का परिचय दिया है। दोनों के भाव-बोध और मिथकीय प्रयोग समान हैं।
5. निकट के सभी व्यक्तियों के एक-एक कर अवसान के पश्चात् वे पंजाब आ गए थे। इस बीच 54 वर्षों तक महाराष्ट्र में उनके रहने का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। इसके अतिरिक्त गोदा और बिठा भाई के अभंगों में स्पष्ट उल्लेख हुआ है—"वह पंढरपुर छोड़कर चला गया। उसने हमें अनाथ कर दिया।" ज्ञानदेव की समाधि के बाद नामदेव ने एक अभंग में स्पष्ट कह दिया था कि अब मेरा पंढरपुर में रहना असंभव है।
6. अपने एक अभंग में नामदेव ने स्पष्ट उल्लेख किया है—"अब मैं आखिरी दिनों में परदेश में आकर पड़ा हूँ। हे प्रभु! मैं तुम्हारे चरणों में आया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7. घुमान से प्रकाशित उनकी जीवनी में स्पष्ट उल्लेख हुआ है कि नामदेव घुमान से लौटकर पंढरपुर गए और अपनी माँ से मिले।
8. हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित संत-काव्य-संग्रहों में उनकी रचनाओं का पर्याप्त मात्रा में संकलन और 'गुरु ग्रंथ साहिब' में उनके चुने हुए 61 पदों का संकलन इस बात का प्रतीक है कि मध्यकाल में वे काफी लोकप्रिय और प्रभावी संत थे।

वास्तव में नामदेव ऐसे समर्थ और प्रतिभाशाली रचनाकार थे जिन्होंने मराठी और हिंदी में समान रूप से रचनाएँ कीं। वे 54 वर्षों तक उत्तर भारत में रहे और हिंदी-संत-काव्य के लिए प्रेरक सिद्ध हुए। उनकी पद-शैली, भाव-बोध, दार्शनिक विचारों, बिंबों, प्रतीकों और उपमानों का प्रभाव हिंदी के निर्गुणपंथी कवियों पर पड़ा। स्वानुभूतिजन्य सत्यान्वेषण, सद्गुरु के महत्त्व का प्रतिपादन, परम-तत्त्व की सर्वव्यापकता, तन्मयमूलक भक्ति, नाम-स्मरण, कर्म-कांड और पाखंडों का निषेध, आंतरिक शुचिता पर बल, बाह्याडम्बरों की व्यर्थता और विषमता-विरोध ऐसे तत्त्व हैं जो परवर्ती संत कवियों के काव्य में समान रूप से पाए जाते हैं। इसीलिए समकालीन एवं परवर्ती संत कवियों ने उनका स्मरण श्रद्धा के साथ किया है—

1. "भक्त भागवत बहुत-से सुने हैं। बहुत-से हो गए, बहुत-से बाद में होंगे। परंतु नामदेव का बोलना ही काव्य था। उसका रस अद्भुत और निरूपम है। जो सुख विश्रांति उन्हें सुनकर होती थी, कल्पांत तक नहीं मिलेगी।" (ज्ञानेश्वर)
2. गुरु परसादी जैदेव, नामा। प्रगति के प्रेम इन्हहि है जाना।

   × × ×

   ढूँढत डोलहि अंधगति अरु चिनत नाहीं संत।
   करहे नामा कि उपाइ ऐ बिनु भगतहु भगवंत॥ (कबीर)
3. निमत नामदेउ दूध पीआइआ, तउ जग जनम संकट नहीं आइआ।
   जन रविदास राम रंगि राता, इह गुर परसादि नरक नहीं जाता॥ (रैदास)
4. जास की जाति अछोप छीपा, ब्यास मैं लेखिये सनक में पेखिये।
   नामां की नामना सपत दीपा॥ (पीपा)
5. गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेव मनु लीणा।
   आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा॥ (धन्ना)
6. नांमदेव कबीर जूलाहौ, जन रैदास तिरै।
   दादू बेगि बार ही लागै, हरि सूं सबै सरै॥ (दादू)

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंदण राम नीब सब लोई। और न पलटै आपण सोई।
नीगम साखि सूणि भयाउ महा। पलटै छीपा, जाट, जूलाहा॥ (दादू)

7. नामा, कबीर सु कौन थे कुन राँका बाँका।
भगति समानी सब धरनि तजि कुल का नाका॥ (रज्जब)

× × ×

छीपी ग्रभे उत्पदिते, नामदेव सि महामुनि उति भंब हम सूमिरन नाम।
(रज्जब)

8. ध्रू, पह्लाद, कबीर, नामदेव, पाखंड कोई न राख्या।
बैठि इकंत नांव निज लीया, वेद भागोत यूं भाख्या॥ (बखना)

9. जैसे नाम कबीर जी यौं साधु कहाया।
आदि अंत लौ आइकैं राम राम समाया॥ (सुंदरदास)

निश्चय ही वे पद-शैली में काव्य और संगीत का सामंजस्य स्थापित करने वाले, हिंदी-निर्गुण-भक्ति के प्रथम रचनाकार थे जिनसे परवर्ती संत-रचनाकार काफी प्रभावित हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ राग टोड़ी ॥

1.

हरि नांउं हीरा हरि नांउं[1] हीरा।
हरि नांउं लेत मिटै सब पीरा ॥ टेक ॥
हरि नांउं जाती हरि नांउं पांती, हरि नांउं सकल जीवन मैं क्रांती ॥ 1 ॥
हरि नांउं सकल सुखन[2] की रासी, हरि नांउं काटै जंम की पासी ॥ 2 ॥
हरि नांउं सकल भवन ततसार, हरि नांउं नांमदेव उतरे पार[3] ॥ 3 ॥

2.

रांम नांम खेती रांम नांम बारी।
हमारै धंन बाबा बनवारी ॥ टेक ॥
या धन की देखौ अधिकाई, तसकर हरै न लागै काई ॥ 1 ॥
दह दिसि रांम रह्या[1] भर पूरि, संतनि नेयरै साखित दूरि ॥ 2 ॥
नांमदेव कहै मेरे करसंन[2] सोई, कूंत[3] मसाहति करै न कोई ॥ 3 ॥

3.

रांम सौ धंन ताकै कहा अब थोरौ।
अठ सिधि नवनिधि करत निहोरौ[1] ॥ टेक ॥
हरनाकसिब बध करि अध पति देई[2], यंद्र कौ विभौ प्रहिलाद न लेई ॥ 1 ॥
देव दांनव जाहि संपदा करि मांनैं, गोब्यंद सेवग ताहि आपदा करि जानैं ॥ 2 ॥
अरथ धर्म[3] कांम[4] की कहा मोखि मांगै, दास नांमदेव प्रेम भगति अंतरि
जौ जागैं ॥ 3 ॥

---

1. पाठा०— 1. नांवं (क), 2. सूखन, 3. पारै। टि०-दादू द्वारा की पांडु०'क' में यह पद 'राग गुंड' में दिया हुआ है।
2. पाठा०— 1. रह्यौ, 2. करसण(ग), करश्न, क्रिसन, 3. कूं (क), कतम साईसी (प्र०), कूंत मसाहति (वा०)। कू तम साहस (क ग) तथा (ना० की वा०)।
3. पाठा०— 1. निहौरौ (क), 2. अद्‌भुत देही (घु०, पंढर०), 3. धरम (क), ध्रम (ग), 4. कांमना (घ)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4.

मंझा प्रांन तू बीठला।
पैड़ी[1] अटकी हो बाबुला॥ टेक॥
कलि खोटी कुसमल कलिकाल, बंधन मोचहु श्री गोपाल॥ 1॥
काटि नरांइण भौवे बंध[2], संम्रथ[3] दिढ करि वोडौ[4] कंध॥ 2॥
नांमदेव नारांइण कीन्हीं सार, चले परोहन उतरे पार॥ 3॥

5.

राम रमें रंमि रांम संभारै।
मैं बलि ताकी छिन न बिसारै॥ टेक॥
रांम रमें रमि दीजै तारी, बैकुंठनाथ मिलै बनवारी[1]॥ 1॥
रांम रमें रंमि दीजै हेरी[2], लाज न कीजै पसवा केरी॥ 2॥
सरीर सभागा सो मोहि भावै, पार ब्रह्म का जे[3] गुण गावै॥ 3॥
सरीर धरे की इहै बडाई, नांमदेव रांम न बीसरि जाई॥ 4॥

6.

रांम बोलै रांम बोलै।
रांम बिनां को बोले रे भाई॥ टेक॥
एकल मीटी कुंजर चीटी, भंजन रे बहु नांनां।
थावर जंगम कीट पतंगा, सब घटि रांम समांनां॥ 1॥
एकल चिंता रहिले निता, छूटि ले सब आसा।
प्रणवंत नांमां भये निहकांमां, तुम्ह ठाकुर मैं दासा॥ 2॥

7.

रांम सनांमां रांम हीं नांमां।
तुम साहिब मैं सेवग स्वांमां॥ टेक॥
हरि सरवर जन तरंग कहावै, सेवग हरि तजि कहु[1] कत जावै॥ 1॥
हरि तरवर जन पंखी छाया, सेवग हरि भजि आप गंवाया॥ 2॥
नांमदेव कहै मैं नरहरि पाया, रांम रमें रमि रांम समाया॥ 3॥

---

4. पाठा०— 1. पड़ी, 2. भौचे फंध (क) भव के फंद (घु., सभा), बंधन (वा०), जग के बंध (ग), 3. स्मृथ, 4. औढो (वा०)।
5. पाठा०— 1. बनबारी, 2 हीरी (क), 3. जो (ग)।
7. पाठा०— 1. कंहू (क)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

8.

जन नांमदेव पाया[1] नांउं[2] हरी।
जंम आइ का करि है बौरे, अब मोरी छूटि परी ॥ टेक ॥
भाव भगति नांनां बिधि कीन्हीं, फल काको न करी।
केवल ब्रह्म निकटि ल्यौ लागी, मुकति कहा बपुरी ॥ 1 ॥
नाम लेत सनिकादिक तारे, पार न पायौ[3] तास हरि।
नांमदेव कहै सुणौ रे संतौ, अब[4] मोहि समझि परी ॥ 2 ॥

9.

रांम नांम जपिबौ श्रबननि सुनिबौ।
सलिल मोह मैं बहि नहीं जाइबौ ॥ टेक ॥
अकथ कथ्यौ न जाइ, कागद लिख्यौ न माइ[1]।
सकल भुवनपति मिल्यौ है सहज भाइ[2] ॥ 1 ॥
रांम माता रांम पिता, रांम सबै जीव दाता।
भणत नांमईयौ छीपा[3], कहै रे पुकारि गीता ॥ 2 ॥

10.

धिग्र ते बकता ध्रिग ते सुरता।
प्रांननांथ कौ नांउं न लेता ॥ टेक ॥
नाद बेद सब गालि पुरानां, रांम नांम कौ मरम न जांनां ॥ 1 ॥
पंडित होइ सु बेद बखानैं, मूरिख नांमदेव रामहिं जांनैं ॥ 2 ॥

11.

आपनां पयांनां राम आपनां पयांनां।
नांमदेव मूरिख लोग सयांना ॥ टेक ॥
जब हम हिरदै प्रीति बिचारी, रज बल छांडि भये भिखारी ॥ 1 ॥
जब हरि क्रिपा करी हम जांनां, तब था चेरा अब भयौ रांनां ॥ 2 ॥
नांमदेव कहै मैं नरहरि गाया, पद खोजत परमारथ पाया ॥ 3 ॥

---

8. पाठा०— 1. पायौ (ग), 2. नांव, 3. पावै, 4. इब्रि (ग)।
9. पाठा०— 1. माई, 2. भाई, 3. छीपौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12.

तू अगाध बैकुंठनाथा।
तेरे चरनूं[1] मेरा माथा॥ टेक॥
सरबे भूंतं नांमां[2] पेखूं, जत्र जांऊं तत्र तू ही तू देखूं[3] ॥ 1 ॥
जल थल महि थल काष्ट[4] पषांनां, आगम निगम बेद पुरांनां॥ 2 ॥
मैं मनिषा जनम निरबंध ज्वाला, नामां का ठाकुर दीनदयाला॥ 3 ॥

13.

सबै चतुरता बरतैं अपनीं।
अैसा न कोई निरपख[1] ह्वै खेलै, ताथैं मिटै अंतर की तपनीं॥ टेक॥
अंतर कुटिल रहत खेचर मति, ऊपरि मंजन करत दिन खपनीं।
अैसा न कोई सरबंगि पिछांनैं, प्रभू बिनां और रैंनि दिन सुपिनीं॥ 1 ॥
सोई साध सोई सुणि[2] ग्यांनीं, जाकी लागि रही ल्यौ रसनीं।
भणत नांमदेव तिनि थिति पाई, जाकै रांम नांम निज रटनीं॥ 2 ॥

14.

तेरी तेरी गति तूं हीं जांनैं।
अलप जीव गति कहा बखानैं॥ टेक॥
जैसा तूं कहियै तैसा तूं नांहीं, जैसा तूं है तैसा आछि गुसांई॥ 1 ॥
लूंण नीर थैं नां ह्वै न्यांरा, ठाकुर साहिब प्रांन हमारा॥ 2 ॥
साध की संगति संत सू[1] भेंटा, प्रणवंत नांमदेव रांम सहेटा[2] ॥ 3 ॥

15.

मैं अपराधी बाप मैं अपराधी।
साचिली तुम्ह ची भगति न साधी॥ टेक॥
घणौं अग्यांन आगिनां भंगी, कीये कांम कुसंगा संगी॥ 1 ॥
यहु अग्यांन इहि परिघाठा, निखर कमाई न छूटै नाठा॥ 2 ॥
कीये खूंन गोब्यंद सब जांनैं, पौढा प्रबत मेर प्रवांनैं॥ 3 ॥

---

12. पाठा०—1. चरणां, चरणों, चरण, 2. नाना, 3. देखौं (क,ख,ग), पेखौं (पटि०, घुमान०), 4. कष्ट (क,ख,ग, पटि०, घुमान, सभा)।
13. पाठा०—1. निरख, 2. मुणि।
14. पाठा०—1. सौं, 2. सुहटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर निरदोष नरांइण नांमीं, ए सब बंक अम्हंचा स्वांमीं ॥ 4 ॥
नरक निवारण नरहरि नांमां, कीयले मेक सरांहू कांमां ॥ 5 ॥

16.

लोग[1] एक अनंत बांणीं।
मंझा जीवनि सारंग प्रांणीं ॥ टेक ॥
जिहि जिहि रंगैं लोग राता, ता रंगि जन न राचिला।
जिहि जिहि मारगि संसार जाइला, सो पंथ दूरैं बांचिला ॥ 1 ॥
निरबांणै पद कोई चीन्हैं, झूठै भरमि भुलाईला।
प्रणवंत नांमां परंम तत रे, सतगुरि निकटि बताईला ॥ 2 ॥

17.

लोग कहै लौकांइ रे नांमां।
षट दरसन कै निकटि न जाइबौ, भगति जाइगी जाइ रे नांमां ॥ टेक ॥
षट क्रम सहित विप्र आचारी, तिन सूं नांहि न मेरौ कांमां।
जौ[1] हरिदास सबनि थैं नीचे, तऊ कहैंगे केवल रांमां ॥ 1 ॥
अधम असोच भिष्ट बिभचारी, पुंडरीनाथ कौ लेहि जु नांमां।
वै सब बंध बरग मेरी जीवनि, तिनकै संगि कह्यौ मैं रांमां ॥2 ॥
गोस्ति लछि[2] बिप्र कूं दीजै, मन बंछित सब पुरवै[3] कांमां।
दास पटतरि तऊ न तूलै, भगति हेत जस गावै नांमां ॥ 3 ॥

18.

का करौं[1] जाती का करौं[2] पाती।
राजा रांम सेउं दिन राती ॥ टेक ॥

---

16. पाठा०— 1. लोक।
17. पाठा०— 1. जे, 2. गऊ लछि, गो शत, 3. पूरवन।
18. पाठा०— 1, 2. करूं।
टि० — यह पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में 'राग आसा' के अंतर्गत इस प्रकार दिया हुआ है—
कहा करउ जाती, कहा करउ पाती।
राम को नामु जपउ, दिन राती ॥ रहाउ ॥
मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती, मपि मपि काटउ जम की फासी।
रंगनि रांगउ सीवनि सीवउ, राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ ॥ 2 ॥
भगति करउ हरि के गुन गावउ, आठ पहर अपना खसम धिआवउ ॥ 3 ॥
सुइने की सूई रुपे का धागा, नामे का चितु हरि सउ लागा ॥ 4 ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन मेरौ गज जिभ्या मेरी काती, रांम रमें काटौं जम की पासी ॥ 1 ॥
सींवनां सीऊं हौं सींऊं ई सींऊं, रांम बिनां हूं कैसैं जीऊं ॥ 2 ॥
अनंत नांउं क सीऊं बागा, जा सीवत जंम का डर भागा ॥ 3 ॥
सुरति की सूई; प्रेम का धागा, नांमां का मन हरि सूं लागा ॥ 4 ॥

19.

अैसैं मन रांम नांमैं बेधिला[1]।
जैसैं कनक तुला[2] चित राखिला[3] ॥ टेक ॥
आंनि लै कागदु[4] साजि लै गुडी[5], आकास मंडल छोडिला[6]।
पांच जनां सूं[7] बात बतऊवा, चित सूं डोरी राखिला[8] ॥ 1 ॥
आंनि लै कुंभ भराइ लै उदिक[9], राजकुंवार पुलंदरियै[10]।
हसत[11] बिनोद देत करताली[12], चित सूं गागरि राखिला[13] ॥ 2 ॥
मंदिर एक द्वार दस जाकै, गऊ चरावन चालिला[14]।
पांच कोस थैं चरि फिरि आवै[15], चित सूं बाछा राखिला ॥ 3 ॥
भगत नांमदेव सुणहु तिलोचन, बालिक पालणि पौढिला।
अपणैं मंदरि काज करंती, चित सूं बालिक राखिला[16] ॥ 4 ॥

20.

का नाचीला का गाईला[1]।
का गसि चंदन लाईला[2] ॥ टेक ॥
आपा पर नहीं चीन्हींला[3], तौ चितर चितारै डहकीला ॥ 1 ॥
क्रितम[4] आगैं नाचै लोई, स्वयंभू देव न चीन्हैं[5] कोई ॥ 2 ॥
स्यंभू देव की सेवा[6] जानैं, तौ दिब द्रिष्टि ह्वै सकल पिछांनैं ॥ 3 ॥
नांमदेव भणैं मेरे एक हीं पूजा, आतम रांम अवर नहीं दूजा ॥ 4 ॥

---

19. टि० — गुरु ग्रंथ साहिब में यह पद 'राग रामकली' में दिया हुआ है। रज्जब की 'सरब्बंगी' में यह 'राग गुंड' के अंतर्गत दिया गया है। अन्य सभी में राग टोड़ी में ही मिलता है।
पाठा०— 1. मनु राम नामा बेधीअले, 2. कला, 3. चितु मांडीअले, 4. आनीले कागदु, 5. काटीले गूडी, 6. मधे मरमीअले, 7. सिउ, 8. राखीअले, 9. ऊदक, 10. पुरंदरीए, पूरिधरियै, 11. हस्त, 12. बीचार करती है, 13. चीतु सु गागरि राखीअले, 14. छाडीअले, 15. पाँच कोस पर गऊ चरावत, 16. अंतरि बाहरि काज ब्रिरूधी चीतु सु बारिक राखीअले।
20. पाठा०— 1. का गाईला का नाचीला, 2. पूजीला, 3. जै आत्मारांम न पूजीला, 4. पीतमा, 5. पूजै, 6. पूजा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

21.

रांम ची भगति दुहेली रे बापा।
सकल निरंतर चीन्हि ले आपा॥ टेक॥
बाहर उजल भीतरि मैंला, पांणीं प्यंड पखालि न गहिला॥ 1॥
पुतली देव कि पाती देवा, इहि बिधि नांमदेव न जांनैं सेवा॥ 2॥
पाखंड भगति रांम नहीं रीझै, बाहरि अंधा लोग पतीजै॥ 3॥
नांमदेव भणैं मेरा नेत्र पलट्या, राम चरणां चित चिहुट्या॥ 4॥

22.

जौ लग रांम नांमैं हित न भयौ।
तौ लग मेरी मेरी करतां जनम गयौ॥ टेक॥
लागी पंक पंक लै धोवै, निरमल न होवै जनम बिगोवै॥ 1॥
भीतरि मैला बाहरि चोखा, पांणीं प्यंड पखालै धोखा॥ 2॥
नांमदेव कहै सुरहीं परहरियै, भेड पूंछ कैसैं भव जल तिरियै॥ 3॥

23.

काहे कूं[1] कीजै ध्यांन[2] जपनां।
जौ मन नांहीं सुध अपनां[3] ॥ टेक॥
साप कांचली[4] छाडै विष[5] नहीं छाडै, उदिक मैं बग ध्यान[6] मांडै॥ 1॥
स्यंघ के भोजन कहा लुकांनां[7], सब झूठै देव पुजांनां[8] ॥ 2॥
नांमदेव का स्वांमी[9] भांनिले झगरा[10], राम रसांइन पीव रे भगरा[11] ॥ 3॥

24.

भगत भला बाबा काडला।
बिन परतीतैं पूजै सिला॥ टेक॥
न्हावै धोवै करै अस्नांन, हिरदै आंखि न माथैं कांन॥ 1॥
गलि पहरैं तुलसी की माला, अंतरगति कोइला सा काला[1] ॥ 2॥
नांमदेव कहै ए पेटाबलू, भीतरि लाख ऊपरि हींगलू॥ 3॥

---

23. टि० —यह पद गुरु ग्रंथ साहिब में 'राग आसा' के अंतर्गत दिया हुआ है।
पाठा०— 1. कउ, 2. धिआनु, 3. जब ते सुधु नाही मनु अपना, 4. कुंच, 5. बिखु, 6. माहि जैसे बगु धिआनु मोडे, 7. सिंघच भोजनु जो नरु जानै, 8. ऐसे ही ठगदेउ बखानै, 9. नामे का सुआमी; 10. लाहि रे झगरा, मानिले झगरा, 11. दगरा।

24. पाठा०— 1. कारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

25.

साच कहूं तौ जीव जग मारै।
एक अनेक आगैं नित हारै॥ टेक॥
साचै आखरि गोठि बिनासै[1], भाजै हाड अभावै हासै॥ 1॥
मन मैल की सुधि न जांणीं, साबण सिला सराहैं पांणीं॥ 2॥
उजल बांनां नीच सगाई, पाखंड भेष कीयै पति जाई॥ 3॥
अयस अग्यांनी उजल हूंवा[2], संसै गांठि पड़ी गलि मूवा॥ 4॥
नांमदेव कहै ए संख सरापी, पुंडरीनाथ न सुमिरैं पापी[3]॥ 5॥

26.

साईं मेरौ रीझै साचि।
कूडै कपटि न जाई राचि॥ टेक॥
भावै गावो भावै नाचौ, जब लग नांहीं, हिरदै साचौं॥ 1॥
अनेक स्यंगार[1] करै बहु कांमनि, पीय[2] के मनि नहीं भावै भांमनि॥ 2॥
पतिब्रता पति हीं कूं जांनैं, नांमदेव कहै हरि ताकी मांनैं[3]॥ 3॥

27.

रतन पारिखू नीरा रे।
मुलमां मंझैं हीरा रे॥ टेक॥
संत पारिखू निरखि जोइ[1], बैरागर क्यूं खोटा होइ॥ 1॥
काल कुष्ट बिष बांध्यौ गांठि, कहा भयौ नहीं खायौ बांटि॥ 2॥
रखायौं[2] बिष कीन्हौं बिस्तार, नांमदेव कहै[3] हरि गरड़ दुवार॥ 3॥

---

25. टि० — यह पद 'सरब्रंगी' में राग 'आसावरी' में दिया हुआ है। हस्तलेख सं० 1021, 992 तथा दा० द्वा० 'क' व 'ख' में यह 'राग गौड़ी' में ही दिया गया है।
पाठा०— 1. बिणंसै, 2. अयस बूधि स्वांग को कूवा, 3. 'सरब्रंगी' में इसका पाँचवाँ चरण है— स्वांग का पूरा, ग्यान का लूरा, पेट का टूटा, अंभ का सूरा॥ 5॥
26. टि० — यह पद रज्जब की 'सरब्रंगी' में 'राग भैरव' के अंतर्गत दिया गया है।
पाठा०— 1. सिंगार, 2. पीव, 3. नांमदेव कौ स्वामी हित की मांनै।
27. पाठा०— 1. संख पारखूं नीर खिन जोवै, 2. नृख, पायौ, 3. भणै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

28.

कौन कै कलंक रह्यौ[1] रांम नांम लेत ही।
पतितपांवन[2] भये रांम कहत हीं॥ टेक॥
रांम संगि नांमदेव जिनहुं परतीति पाई[3]।
एकादसी बरत[4] करैं काहे कौं[5] तीरथि जाई॥ 1॥
भणत नांमदेव सुमृत सुक्रित पाई[6]।
रांम कहत जन कों को न मुकति जाई[7]॥ 2॥

29.

रांम नांम नरहरि श्री बनवारी।
सेवियै निरंतर[1] चरन मुरारी॥ टेक॥
गुर कौ सबद बैकुंठ निसरनी, हिरदै पिराग प्रेम रस बांणीं॥ 1॥
जा कारनि त्रिभुवन फिरि आए, सो निधांन घट भीतरि[2] पाये॥ 2॥
नांमदेव कहै कहूं आइयै न जाइयै, अपनौ रांम घरि बैठे[3] गाईयै॥ 3॥

30.

रांम जुहारि न और जुहारूं[1]।
जीवनि जाइ जनम कत हारूं॥ टेक॥
आंन देव सूं दीन न भाखूं[2], राम रसांइंन[3] रसनां चाखूं॥ 1॥
थावर जंगम कीट पतंगा, सत्यं[4] रांम सबहिन के संगा॥ 2॥
भगत नांमदेव जीवनि रामां, आन देव फोकट बेकांमां॥ 3॥

31.

जा दिन भगता आईला।
चारयू[1] मुकती पाईला॥
दरसन धोखा भागीला, कोई आदू सुकृत जागीला॥ 1॥
सनमुख दरसंन देखीला, तब जनम सुफल करि लेखीला॥ 2॥
साध संगति मिलि खेलीला, तब पाचूं प्रबल पेलीला॥ 3॥
बैस्नौ हिरदै समाईला, जन नांमदेव आनंद गाईला॥ 4॥

---

28. पाठा०— 1. कउन को कलंकु रहिओ, कौंण के, 2. पवित, 3. प्रतगिआ आई, 4. ब्रतु, 5. कउ, 6. सुक्रित सुमति भए, सुमिरत, सुमती, 7. गुरमति रामु कहि को को न बैकुंठि गए।
29. पाठा०— 1. नीरंजन, 2. घरि बैठे, 3. बैठां।
30. पाठा०— 1. जुहारौ, 2. भाखौं, 3. चरन कंवल रसना रस, 4. सत।
31. पाठा०— 1. चार्‍यौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

32.

संत सूं लीणां, संत सूं दीणां[1]।
संत सगति मिलि दूतर[2] तिरणां॥ टेक॥
संत की छाया संत की माया, संत संगति मिलि गोब्यंद पाया॥ 1॥
असंत संगति नांमां कबहूं न जाई, संत संगति मैं रह्या समाई॥ 2॥

33.

परहरि धंधाकार सबैला।
तेरी च्यंता रांम करैला॥ टेक॥
नारांयण माता नारांइण पिता, बैश्नौ जन परिवार सहेता॥ 1॥
केसो कै बहु पूत भयेला, तामैं नांमदेव एक तूं दैला॥ 2॥

34.

माइ तूं मेरे बाप तूं।
कुटंबी मंझा बीठला॥ टेक॥
हरि है हम ची नाव री, हरी उतारै पैली तिरी॥ 1॥
साध संगति मिलि खेई चार, कैसौ नांमदेव चा दातार॥ 2॥

35.

माइ गोब्यंदा बाप गोब्यंदा।
जाति पांति गुरदेव गोब्यंदा॥ टेक॥
गोब्यंद ग्यांन गोब्यंद ध्यांन, सदा अनंदी राजा रांम॥ 1॥
गोब्यंद गावै गोब्यंद नाचै, गोब्यंद भेष सदा त्रिति काछै॥ 2॥
गोब्यंद पाती गोब्यंद पूजा, नांमां भणैं मेरे देव न दूजा॥ 3॥

36.

हिरदै माला हिरदै गोपाला।
हिरदै सिष्टि कौ दीनदयाला॥ टेक॥
हिरदै माहि रंग हिरदै छीपा, हिरदै रैंणी पांणीं नीका॥ 1॥
हिरदै दीपक घटि उजियाला, खूटि किवार तूटि[1] गयौ ताला॥ 2॥
हिरदै रंग रांम नहीं जाति, रंगि रे नांमा हरि की भांति॥ 3॥

---

32. पाठा०— 1. देणां, संत सूं लेना संत सूं देना (ना०वा०), लीणां (पटि०), लीना (सभा), लेणां (घुमान) 2. दुतर, दुप्तर।

36. पाठा०— 1. टूटि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

37.

अब न बिसारूं रांम संभारूं।
जौ रे बिसारौं[1] तौ सब हारूं॥ टेक॥
तन मन हरि परि छिन छिन वारूं, घड़ी महूरत पल नहीं टारूं॥ 1॥
सुमिरन स्वासा भरि भरि पीऊं, रंक रांम गुड़ खाइ रे जीऊं॥ 2॥
आरौ मांडि रांम रटि लैहू, जौ रे बिसारौं तौ रोइ दैहूं॥ 3॥
नांमदेव कहै और आस न करि हूं, रांम नांम धन लागौ मरि हूं॥ 4॥

38.

रांम राइ उलगूं[1] और न जांचू।
सरीर अनंत जाउ भलैं जाउ जाउ॥ टेक॥
जोग जुगति कछू मुकति न भाखूं, हरि नांउं हरि नांउं हिरदै राखूं॥ 1॥
रांम नांम नांमदेव अनहद आछै, भगति प्रेम रस गावै नाचै॥ 2॥

39.

बीहूं बीहूं तेरी सबल माया।
आगैं इनि अनेक भरमाया॥ टेक॥
माया के अंतरि ब्रह्म न दीसै, ब्रह्म के अंतरि माया न दीसै॥ 1॥
भणत[1] नांमदेव आप विधांनां, दहु घोड़े न चढाइ हो कांन्हां॥ 2॥

40.

बाजी रची बाप बाजी रची।
मैं बलि ताकी जिनि रु बची॥ टेक॥
बाजी जांमण बाजी मरनां बाजि लागि रह्यौ रे मनां॥ 1॥
बाजी मन मैं सोचि बिचारी, आपैं सुरति आपैं सुत्रधारी॥ 2॥
नांमदेव कहै मैं तेरी सरनां, मेटि हमारे जांमण मरनां॥ 3॥

41.

तूं न बिसारि तूं न बिसारि।
मैं तूं बिसार्‌यौ सु मोर[1] अभाग॥ टेक॥

---

37. पाठा०— 1. बीसारूं।
38. पाठा०— 1. तुलगू।
39. पाठा०— 1. भणैं।
41. पाठा०— 1. मोरे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भुवनपति गरड़ा गांमी, अंत कालि हरि अंतरजांमी ॥ 1 ॥
जांमण मरण विसरजन पूजा, तुम्ह सा देव अवर नहीं दूजा ॥ 2 ॥
तूं जु बिसंभर मैं जन नांमां, संत जनन के पुरवन कांमां ॥ 3 ॥

42.

बाप मंझा समझि न परई।
सांचौ ढारि अवर कछु भरई ॥ टेक ॥
पांणीं का चित्र पवन का थंभा, कौंन उपाइ रच्यौ आरंभा ॥ 1 ॥
इहां का उपज्या इहां बिलांनां, बोलन हारा कहां समांनां ॥ 2 ॥
जीवत रांम न भये प्रकासा, भणत नांमदेव मूंवा कैसी आसा[1] ॥ 3 ॥

43.

कैसैं तिरत बहु कुटिल भर्‌यौ।
कलि के चिह्न देखि नांहिन डर्‌यौ ॥ टेक ॥
कैसी सेवा कैसा ध्यांन, जैसैं उजल बग उनमांन ॥ 1 ॥
भाव भुजंग भये पैहारी[1], सुरति सिचांणां मति[2] मंजारी ॥ 2 ॥
नांमदेव भणैं बहु इहि गुणि बांधा, डांइण ड्यंभ सकल जग[3] खाधा ॥ 3 ॥

44.

काल भै बाण सह्या न जाई।
महा भैभीत जगत्र कूं खाइ ॥ टेक ॥
अनेक मुनेस्वर झूझैं जाइ, सुर नर थाके करत उपाइ ॥ 1 ॥
कंपै पीर पैकंबर देव, रिषि कंपैं चौरासी जीव ॥ 2 ॥
चंद सूर धर पवन अकास, पांणीं कंपैं अगनि गरास ॥ 3 ॥
कंपै लोक लोकंतर खंड, ते भी कंपैं अस्थिर प्यंड ॥ 4 ॥
अबिचल अभै नारांइण देव, नांमदेव प्रणवै अलख अभेव ॥ 5 ॥

---

42. पाठा०— 1. कहै नरांइण सुनि निज नांमां, जहां सुरति तहां पुरवन कांमां ॥ (सभा, घु० पू०, सरब्रंगी)।
43. टि० —यह पद 'सरब्रंगी' में 'राग गुंड' के अंतर्गत दिया हुआ है।
पाठा०— 1. प्यौहारी, 2. तेरी मति, 3. कलिजुग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

45.

गरुड़ मंडल आव।
पृथीपति[1] गरुड़ मंडल आव॥ टेक॥
तू पृथीपति जाग्रित केला, मैं गांऊं गुण राग रचेला॥ 1॥
नांमदेव कहै मैं बालिक तेरा, भगति दान दे साहिब मेरा[2]॥ 2॥

46.

सहजैं सहजैं सब गुण गईला।
भगवंत भगता ये थिर रहिला॥ टेक॥
मुकति भयेला जाप जपला[1], यौ सेवग स्वांमी संगि रहैला॥ 1॥
अमृत सुधा निंधि अनत न जाइला, पीवत प्रांन कदे न अघाइला॥ 2॥
रांम नांमां मिलि संगि रहैला, जब लग रस तब लग पीवैला॥ 3॥

47.

कैसें न मिलै रांम रूढा[1] मोटा।
चित न चलै कुचित मेरा खोटा॥ टेक॥
बाइर माटी जैसें बार[2] लागीला, ऊँसैं जे मन लागै बीठुला॥ 1॥
नामौ भणैं मन मारगीला[3], जैसे निस गत सूर उगीला॥ 2॥

48.

कहा करौं जग देखत अंधा।
तजि आंनंद बिचारैं धंधा॥ टेक॥
पाहंण आगैं देव का टीला, वाकौं पांण नही वाकी पूजा रचीला॥ 1॥
नृजीव आगैं सरजीव मारै, देखत जन्म आपणौं हारे॥ 2॥
आंगणि देव पिछोकड़ि[1] पूजा, पाहण पुजि भये नृ दूजा॥ 3॥
नांमदेव कहै सुणौं रे भाई, राम बिना सब नृकहिं[2] जाई॥ 4॥

---

45. पाठा०— 1. पृथ्वीपति (घुमान), पृथिवीपती (पंढर), प्रिथीपति (1021), 2. साहेब मोरा।
46. पाठा०— 1. ध्यायेला।
47. पाठा०— 1. रूठा, 2. बार बार, 3. मारिग लागिला।
48. पाठा०— 1. पिछौकडि, पिछौडी (पंढर), पाछे करि (पूना०), 2. नरक ही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

49.

चूकि भजीला चूकि भजीला।
चूकै चिति अवतार धरीला ॥ टेक ॥
द्रिग हीणौं दस रूप बखांणैं, अकल अगोचर ऐक न जाणैं ॥ 1 ॥
मो लै जल पाषांण पूजीला, अंतरजांमी उरि न सूझीला ॥ 2 ॥
नांमदेव नृखि[1] निरंजन गावै, अंजन आवै जाइ न भावै ॥ 3 ॥

50.

रांमैं नांमैं केलि अंम्रित बांनी।
जीभ्या आंन मीथ्या करि जानी ॥ टेक ॥
कौन तारे कौन उबारे, बैंकूठि नांथा खसम हमारे ॥ 1 ॥
सूनैं की भालि पखांन बेधीला, झीझ फूंटै राजा राम अकला ॥ 2 ॥
सपत पूरी नौ उखर भाई, रांम बिनां कोनैं गति पाई ॥ 3 ॥
मांटी देखै मांटी काई रे भुलांनां, कहि समझावै दास नांमां ॥ 4 ॥

51.

ऐहडी भगति चै निरबांण, ते मैं चरण बंदिला।
सब संतन की रज रैंणि नामा तू जाईले रे आप ॥ टेक ॥
दीन सदांमां जांणि मूठी, तंदुल चाबिला।
अबला के अभिलासि, सगली संपति अरपीला ॥ 1 ॥
काम को घात जी नामां, भऐ चरण लै लीन।
ऐ ह्वै पानां बोलै नांमां, देखौ बीठल नैन ॥ 2 ॥
दीन पंडरीदास नांमां, ऐ ती बांछीला।
बाप मंझा बीठुल स्वांमी, भगति राचीला ॥ 3 ॥
ब्रदी कची अंब्री कची, भगती बीनांउला।
त्रिलो घरि पूणिमादि, नांमां दरसन पाईला ॥ 4 ॥

52.

कांइ रे बकबादु लाइओ।
जिनि हरि पाइओ, तिनहि छपाइयो ॥ टेक ॥
कोई बोले निरवा कोई बोलै दूरि, जल की माछुली चरै खजूरि ॥ 1 ॥
पंडितु होइ कै बेदु बखानै, मूरखु नांमदेउ रामहि जानै ॥ 2 ॥

---

49. पाठा०— 1. निरख।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

53.

तीनि छंद खेलु आछै ॥ टेक ॥
कुंभार के घर हांडी आछै, राजा के घर सांडी गौ।
बामन के घर रांडी आछै, रांडी सांडी हांडी गौ ॥ 1 ॥
बाणीए के घर हींगु आछै, भैसर माथै सींगु गौ।
देवल मधे लींगु आछै, लींगु सींगु हींगु गो ॥ 2 ॥
तेली कै घर तेलु आछै, जंगल मधे बेल गो।
माली के घर केल आछै, केल बेल तेल गो ॥ 3 ॥
संता मधे गोबिंदु आछै, गोकुल मधे सिआम गो।
नांमे मधे रामु आछै, राम सिआम गोबिंद गो ॥ 4 ॥

॥ राग गुंड ॥

54.

देवा तेरी भगति न मोपैं होइ जी।
जिहि सेवा साहिब भल मांनैं, करि हूं न जांनैं कोइ जी ॥ टेक ॥
सुकृत[1] कथा होत नहीं मोपैं, कथौं त होइ अभिमांन जी।
जोई जोई कथू[2] उलटि मोहि बांधै, त्राहि त्राहि भगवांन जी ॥ 1 ॥
जामैं सकल जीव की उतपति, सकल जीव मैं आप जी।
माया मोह करि जगत भुलाया, घटि घटि ब्यापक बाप जी ॥ 2 ॥
सौ बैकुंठ कहौ धूं कैसा, प्यंड पड़े जहां जाइयै।
यहु परतीति मोहि नहीं आवै, जीवन मुकति न पाईयै ॥ 3 ॥
मैं जन जीव ब्रह्म तू माधौ, बिन देखें दुख पाईयै।
राखि समीप कहै जन नांमां, संगि मिल्यां गुण गाईयै ॥ 4 ॥

55.

भगति आपि मोरे बाबुला।
तेरी मुकति न मांगूं हरि[1] बीठुला ॥ टेक ॥
भगतिनि आपै तौ तन आडौं, कोटि करै तौ भगति न छाडौं ॥ 1 ॥

---

54. पाठा०— 1. सुम्रित, 2. कथौं।
55. पाठा०— 1. मैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक जनम भ्रमतौ फिरयौ, तेरौ नांउं ले ले उधरयौ ॥ 2 ॥
नांमदेव कहै तू[2] जीवनि मोरा, तू सायर मैं मछा तोरा[3] ॥ 3 ॥

56.

संसार समंदे तारि गोब्यंदे।
हूं तिरिहूं न जांनूं बाप जी[1] ॥
लोभ लहरि अति नीझर बरिषै[2], काया बूडै केसवा ॥ 1 ॥
आंनिदे भेला खेवि न जांनूं, पार दे पार दे बीठला[3] ॥ 2 ॥
नांमां कहै मैं सेवग तोरा, बांह दे बांह दे बाबुला[4] ॥ 3 ॥

57.

तुझ बिन क्यूं जीउं रे, तुझ बिन क्यूं जीउं।
तू मंझा प्रांण अधार, तुझ बिन क्यूं जीउं ॥ टेक ॥
सार तुम्हारा नांउं है, झूठा सब संसार।
मनसा बाचा क्रमनां, कलि केवल नांम अधार ॥ 1 ॥
दुनिया मैं[1] दोजग घणां, दारण दुख अपार।
चरन कवल की मौज मैं, मोहि राखहु सिरजनहार ॥ 2 ॥
मो तो बिचि पड़दा किसा, लोभ बडाई कांम।
को एक हरिजन ऊबरै, जिनि सुमिरया निहचल रांम[2] ॥ 3 ॥
लोक बेद कै संगि बहया, सलिल मोह की धार।
जन नांमदेव नां स्वांमीं बीठला, मोहि खेवि उतारौ पार ॥ 4 ॥

58.

बंदे की बंदि छोडि बनवारी।
असरन सरन रांम कहे बिन, आइ पड़ै जंमधारी ॥ टेक ॥

---

2. नामदेव भणैं मैं जीवल तोरा, 3. मैं मंछा तू साइरि मेरा।

56. टि० —यह पद गुरु ग्रंथ साहिब में 'राग वसंत' के अंतर्गत दिया हुआ है।
पाठा०— 1. तारि ले बाप बीठला, 2. बाजै,
3. अनिल बेड़ा हउ खेवि न साकउ, तेरा पारु न पाइआ बीठुला ॥ 2 ॥
होहु दइआलु सतिगुरु मोलि तू मोकउ, पारि उतारे केसवा ॥ 3 ॥
नामा कहै हउ तरि भी न जानउ, मोकउ बाह देहि बाह देहि बीठुला ॥ 4 ॥
4. बीठला।

57. पाठा०— 1. मांहि, 2. निहकांम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केई बांधे जोग जपि करि, केई तीर्थ दांनां।
केई बांधे नेमां बरतां, तेरे हाथि नाथ भगवांनां॥ 1॥
रांमदेव तेरी दासी माया, नाटी का पट कीन्हा[1]।
थावर जंगम जीति लीये हैं, आपा पर नहीं चीन्हां॥ 2॥
नांमदेव भणैं मैं तुम्ह थैं छूटौं, जे तुम्ह छुडावहु गोपाल जी।
तुम्ह बिन मेरे गाहक नांहीं, दीनानाथ दयाल जी॥ 3॥

59.

देवा मेरी हीन जाती हो।
काहू पैं सही न जाती हो॥ टेक॥
मैं नहीं मैं नहीं मैं नहीं माधौ, तू है मैं नहीं हो।
तू एक अनेक ह्वै बिस्तर्‍या, मेरी चरम नसाई हो॥ 1॥
जैसैं नदियां समदि समांनीं, धरनि बहंती हो।
तुम्हारी कृपा थैं नीच ऊंच भये, तू काल की काती हो॥ 2॥
नांमां कहै मेरे देवी न देवा, संग न साथी मीतुला।
तुम्हारी सरनि मैं भाजि दुर्‍यौ हूं[1], बंदि छोडि बाबा बीठुला॥ 3॥

60.

हरि नांउं गाजै हरि नांउं राजै।
हरि कौ नांउ लेतां कांइ लाजै॥ टेक॥
हरि मेरे माता पिता गुरदेवा, अपने रांम की करिहूं सेवा॥ 1॥
हरि नांमैं निज कंवला दासी, हरि नांमैं संकर अबिनासी॥ 2॥
हरि नांमैं ध्रूं निहचल करिया, हरि नांमैं प्रहिलाद उधरिया॥ 3॥
हरि मेरे जीवन मरन के साथी, हरि जल मगन उधर्‍यौ हाथी॥ 4॥
हरि मेरे संगि सदा सुख दाता, हरि नामैं नांमदेव रंगि राता॥ 5॥

61.

इतना कहत तोहि कहा लागत।
रांम नांम लै सोवत जागत॥ टेक॥

---

58. पाठा०— 1. नाट कपट, माटी का पट।
59. पाठा०— 1. तूंमारो ओट मैं आई दूर्‍यौ हूं, पर्‍यौ (क,ख,ग,घ)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्रू प्रहिलाद इहीं गुन तारे, रांम नांम अखिर हिरदै बिचारे ॥ 1 ॥
रांम नांम सनिकादिक राता, रांम नांम निरभै पद दाता ॥ 2 ॥
भणत नांमदेव भाव[1] अैसा, जैसी मनसा लाभ तैसा ॥ 3 ॥

62.

बोलि धूं त्रिबांणैं पद रांम नांम।
ठाली जिभ्या कौंणैं कांम ॥ टेक ॥
सेवा पूजा सुमिरण ध्यांन, झूठा कीजै बिन भगवांन[1] ॥ 1 ॥
तीरथ ब्रत जगत की आस, फोकट कीजै बिन बिसवास ॥ 2 ॥
एकादसी जगत की करणीं, पाया महल तब तजी निसरनीं[2] ॥ 3 ॥
भणत नांमदेव तुम्हारै सरनां, मुझा मांथा[3] तुझा चरनां ॥ 4 ॥

63.

सेवियै[1] गोपाल राइ अकल[2] निरंजन।
भगति कौ दांन दीजै, जाचै हो भगत[3] जन ॥ टेक ॥
जाचै धरां द्रिग दिसा सराइचा, बैकुंठ सी चत्रसाली ॥
सप्त लोक साहिबांन, पूरि ले[5] लछिमी पियारी[6] ॥
चंद सूर जाचै दीपला[7], कंद्रप काल जांणैं बापला ॥
कोटवल सुक्र सां घरी[8], अैसौ राजा है नरहरी[9] ॥ 1 ॥
जाचै घरां कुलाल वी ब्रह्मा, चत्रमुखा दांवणां[10] ॥
जिनि बिस्व संसार रचीला, जगत्र तणां दातार ॥
जाचै ईस्वर मंत्री बावला, तंत मंत अमृत भाखिला[11] ॥
पाप पुनि जाचै डागियां, द्वारै चित्र बचित्र लेखियां ॥
ध्रमराइ पौली[12] प्रतिहार, अैसौ राजा श्रीगोपाल ॥ 2 ॥
जाचै घरां गांइण चत्रुबेदा, गंध्रप जन ढाढियां[13]।

---

61. पाठा०— 1. नांव।

62. पाठा०— 1. फोकट साज लेवी न भगवाना, 2. राम बिनां सब्र झूठी बरनी, 3. मनवा।

63. टि० —यह पद गुरु ग्रंथ साहिब्र में 'राग मलार' के अंतर्गत दिया हुआ है।
पाठा०— 1. सेवीले, 2. अकुल, 3. जाचहि संत जन, 4. भवन, 5. सामानि पूरीअले, 6. जांचै घरि लछिमी कुआरी, 7. दीवड़े, 8. कोटवालु सुक रासि री, 9. सु राजा राजा स्त्री नरहरी, 10. चतुरमुखु डांवा, 11. जाकै घरि ईसरु बावला जगत गुरू तत सारखा गिआनु भाखीले, 12. परुली, 13. जांचै घरि गण गंधरब रिखी बपुड़े ढाढीआ गावंत आछै,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अष्टादस पुरांन नागरियां, सरब सास्त्र बहुरूपीयां[14] ॥
तंत मंत बोलै आछियां, त्रेता पुरी मंझि काछिया ॥
चवर ढार जाचै घरि पवन, चेरी सकति जीति ले तीन्यूं भवन ॥
अंड टूक जाचै बासुमती[15], अैसौ राजा कवलापती[16] ॥ 3 ॥
जाचै धरां कूरिम सा पालिका, सेस नाग सा सेज वालिया[17] ॥
अठारह भार बनासपती मालनीं, छपन कोटि मेघ्र माला ॥
जास घरि पणिहारियां ॥
नख प्रसेद जाचै सुरसुरी, सात समंद जास बिस्तरी[18] ॥
सरब जीव जाचै बरतणीं, अैसौ राजा त्रिभुवन धणीं ॥ 4 ॥
जाचै घरां संनक सनंदन संत कुवार, सनकादिक अंबरीक ॥
सुख प्रहिलाद बभीषन, हंणवंत नारद धूव उधव अक्रूर[19] ॥
अनत कोटि सिध साध पाहरू ॥
एती बरतणि जाचै घरी, सकल बियापक अंतरि हरी ॥
नांमदेव प्रणवैं[20] ताकी आंण, सकल भगत जाकै नीसांण ॥ 5 ॥

64.

अैसे रांम हिं जानूं रे भाई ।
जैसे भ्रिंगी कीट रहै ल्यौ लाई ॥ टेक ॥
श्रब रूप श्रबेसुर स्वांमीं, त्रिगुन रहित देव अंतरजांमीं ॥ 1 ॥
थावर जंगम कीट पतंगा, सति रांम सबहिन के संगा ॥ 2 ॥
नांमां कहै मेरै बंधन भाई, रांम नांम मैं नौ निधि पाई ॥ 3 ॥

65.

अैसैं रांम अैसैं हेरौ ।
रांम छाडि चित अनत न फेरौ ॥ टेक ॥
ज्यू बिषई हेरै पर नारी, कौडा डारत फिरै जुवारी ॥ 1 ॥
ज्यूं पासा डारै पसवारा, सोना घड़ता हिरै सुनारा ॥ 2 ॥
जत्र जांऊं तत्र तू हीं ज रांमां, चित चहुट्या प्रणवै नांमां ॥ 3 ॥

---

14. सरब सासत्र बहुरूपीआ अनगरुआ आखाड़ा मंडलीक ब्रोल ब्रोलहि काछे, 15. भसमती, 16. त्रिभवणपती, 17. जाचै घरि कूरमा पालु सहस्र फनी वासकु सेज वालूआ, 18. घड़थली, 19. जांचै घरि निकट वरती अरजनु ध्रू प्रह्लादु अंबरीकु नारदु ने जै सिध बुध गण गंधरब बानवै हेला, 20. प्रणवंता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

66.

पंनियां बिन[1] मीन तलपै।
अैसैं रांम नांम बिन बापुरौ नांमां॥ टेक॥
तन लाइले[2] तालाबेली, बछा बिन गाइ अकेली॥ 1॥
जैसैं गाइ का बछा छूटिला, थन लागि ले मांखण घूंटिला।
माखण राखिले ताती[3] घांमां, अैसैं रांम नांम बिन बापरौ नांमां॥ 2॥
जैसैं बिषई चित पर नारी, अैसैं नांमदेव हेत बनवारी[4]॥ 3॥

67.

अनबोलता चरन नहीं छाड़ूं।
तुम्हारी आंन बाबा बीठुला॥ टेक॥
टगमग टगमग क्यूं चोघता, एक बोल बोलौ बोलता॥ 1॥
कहि धूं[1] कूटिल कहि धूं[2] बली, प्रणवंत नांमदेव पुरवौ रली॥ 2॥

68.

जत्र जांऊं तत्र बीठल[1] भैला।
बीठलियौ राजा रांम देवा[2]॥ टेक॥
आंणि लै कुंभ भराइलै उदिक[3], बाल गोब्यंदहिं न्हाण रचूं[4]।
पहिलै नीर जु मंछि बिटाल्यौ, जूठनि भैला कांइ करूं[5]॥ 1॥
आंणि लै केसरि सूकड़ि समसर, बाल गोब्यंदहि खौलि रचूं।
पहली बास भुवंगम लीन्हीं, जूठनि भैला कांइ करूं॥ 2॥
आंणि ले पहुप गूंथि लै माला, बाल गोब्यंदहि हार रचूं।
पहली बास जु भंवरै लीन्हीं, जूठनि भैला कांइ करूं[6]॥ 3॥

---

66. टि० —यह पद गुरु ग्रंथ साहिब्र में 'राग गोंड' के अंतर्गत दिया हुआ है।
पाठा०— 1. पानीआ ब्रिनु, 2. मोहि लागती, 3. तापते निरमल घामा, 4. प्रीति ब्रनवारी, प्रीति मुरारी।
67. पाठा०— 1. कैधौं, 2. कैधूं (1059).
68. पाठा०— 1. तत बीठलु (गु०ग्रं०), 2. बीठुल (1021) महा अनंद करे सद केला (गु०ग्रं०सा०), 3. ऊदक, 4. ठाकुर कउ इसनानु करउ। 5. बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ। (गु०ग्रं०सा०)
6. आनीले फूल परोई ले माला ठाकुर की हउ पूज करउ।
पहिले ब्रासु लई है भवरह बीठल भैला काइ करउ॥ 2॥ (गु०ग्रं०सा०)
टि० —यह पद गुरु ग्रंथ साहिब्र में 'राग आसा' के अंतर्गत दिया हुआ है। रज्जब्र की सरब्रंगी में यह 'राग गुंड' में ही दिया हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंणि लै घृत जोइ लै बाती, बाल गोब्यंद हि जोति रचूं।
पहली जोति जु नैनहुं देखी, जूठनि भैला कांइ करूं॥ 4॥
आंणि ले तंदुल रांधि ले खीरो, बाल गोब्यंद हि भोग रचूं[7]।
पहली दूध जु बछ बिटाल्यौ, जूठनि भैला कांइ करूं॥ 5॥
आंऊं तौ बीठल जाऊं तौ बीठल, बीठल ब्यापक माया।
नांमा का चित हरि सूं लागा, ताथैं परंम पद पाया[8]॥ 6॥

69.

135466

कांइ मन बिषिया बनि जाइ।
देखत हीं[1] ठग मूली खाइ॥ टेक॥
मधु माखी संचियौ अपार, मधु लीन्हौं मुख दीन्हौं छार।
गऊ बाछ कूं संचै खीर, गले बांधि दुहि लेइ अहीर॥ 1॥
जैसे मीन पांणी मैं[2] रहै, काल जाल[3] की सुधि न लहै।
जिभ्या स्वारथि निगल्यौ लोह, कनक कांमनीं बांध्यौ मोह॥ 2॥
माया[4] काजि बहुत क्रम[5] करै, सो माया ले ऊंडै[6] धरै।
अति अयांन[7] जानैं[8] नहीं मूंढ़, धन धरती अंचला पर धूल[9]॥ 3॥
कांम क्रोध त्रिस्नां अति जरै, साध संगति कबहूं नहीं करै।
प्रणवंत नांमदेव ताकी[10] आंण, निभ्रै होइ भजौ किन रांम[11]॥ 4॥

70.

अपने रांम कूं भजि रे मन आलसिया।
रांम बिना जंम जालिसिया॥ टेक॥

---

7. आनीले दूधु रीधाईले खीरं ठाकुर कउ नैवेदु करउ। (गु॰ग्रं॰)
8. ई भै बीठलु उभै बीठलु, बीठल बिन संसारु नही।
थान थनंतरि नामा प्रणवै, पूरि रहिओ तू सरब मही॥ 4॥

टि॰ —ह॰ 1021 में पाँचवाँ चरण इस प्रकार दिया हुआ है—
आंणि लै अग्र खेइलै धूपा, बाल गोब्यंदहि धूप रचूं।
पहली बास नासिका आई, जूठण भैला कांई करूँ॥ 5॥

69. पाठा॰— 1. भूलौ रे, 2. मीनु पानी महि, 3. झाल, 4. माइआ, 5. स्रमु, 6. माइआ लै गाडै, औंडौ, 7. संचै, 8. समझै, 9. तनु होइ गइओ धूड़ि, 10. ताची, 11. भजीऐ भगवान, नीरभै होई रहौ निरबांण।

पाठा॰— यह पद 'गु॰ग्रं॰सा॰' में 'राग सारंग' के अंतर्गत दिया हुआ है। हस्तलेख 1059 में 'राग टोड़ी' के अंतर्गत आया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांणीं अस्वमेद[1] जग ने, तुला पुरिष दांनें, हरि हरि पिराग श्रांने ॥
तऊ न तुलै[2] हरि कीरति नांमां ॥ 1 ॥
प्रांणीं गया प्यंड भरता, बानारसियै बस्ता।
मुखि बेद पुरांन[3] पढता, तऊ न तुलै हरि कीरति नांमां ॥ 2 ॥
प्रांणीं सकल ध्रम अछता, गुर ग्यांन इंद्री[4] दिढता।
षट क्रम सहित रहिता[5], तंऊ न तुलै हरि कीरति नांमां ॥ 3 ॥
प्रांणीं सकल सेवाश्रम बाद[6], छांडि छांडि बहु भेद[7]।
सुमिरि सुमिरि गोब्यंद, नांमदेव नांइ तिरै भौ स्यंधं ॥ 4 ॥

71.

मन थिर न होइ बारे न होइ, अैसा चिहन करै संसार[1]।
भीतरि मैला धूतिग फिरै, क्यूं उतरै भौ पार[2] ॥ टेक ॥
रुद्राख सखा जप माला भंडै, ताकौ मरम न जांनैं कोई।
आप न देखैं और दिखावैं, कपटि मुकति क्यूं होई ॥ 1 ॥
सींगी जटा विभूति लगावैं, संबर सिध कहावैं।
नाथ नओ[3] लखैं मरम न जानैं, भाव चिंड़ाली[4] ल्यावैं ॥ 2 ॥
ब्रह्मा पढि गुनि बेद सुनावैं, मन की भ्रांति न जाई।
करम करै सो सूझै नांहीं, बहुत कुकरम कराई ॥ 3 ॥
मास दिवस लग रोजा साधैं, कलमां बंग पुकारैं।
मन मैं काजी जीव संघारैं, नांव अलह का सारैं ॥ 4 ॥
केवल ब्रह्म सति कर जांनौं, सहज सुनि मैं ध्याया।
प्रणवंत नांमदेव गुर प्रसादैं, पाया तिनि हीं लुकाया ॥ 5 ॥

72.

देवा बेनु बाजै गगन गाजै, सबद अनाहद बोलैं।
अंतरगति की जानैं नांहीं, मूरख भरमत डोलैं ॥ टेक ॥

---

70. पाठा०— 1. असुमेद, 2. पुजहि, 3. चतुर, 4. यंद्री, 5. षट् कर्म सहता रहता, 6 व 7 सिवा सकति संवाद, छोडि छोडि सकल भेद।
टि० —यह पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में 'राग गोंड' में दिया गया है।
71. पाठा०— 1. संसारी, 2. पारी, 3. नवौ, 4. चंडाली का।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद सूर दोऊ समि करि राखूं, मन पवन दिढ़ डांडी[1]।
सहजैं[2] सुषमन तारा मंडल, इहि बिधि त्रिस्नां खांडी ॥ 1 ॥
बैठा रहूं न फिरूं न डोलूं, भूखा रहूं न खांऊं।
मरूं[3] न जीऊं अह निसि भुगतूं, नहीं आंऊं नहीं जांऊं ॥ 2 ॥
गगन मंडल मैं रहनि हमारी, सहज सुन्यं[4] ग्रिह मेला।
अंतर धुनि मैं मन बिलबांऊं, कोई जोगि याग मिल हैला ॥ 3 ॥
पाती तोड़ि न पूजौं देवा, देवलि देव न होई।
नांमां कहै मैं हरि की सरनां, पुनरपि जनम न होई ॥ 4 ॥

73.

देवा गगन गूडी[1] बैठी।
मैं नांहीं तब दीठी ॥ टेक ॥
जब लग आस निरास बिचारै, तब लग ताहि न पावै।
कहिबौ सुनिबौ जब लग होइबौ, तब लग जाइ परचौ आवै ॥ 1 ॥
गाये गये गये ते गाये, अंगई कूं अब गांऊंगा।
प्रणवंत नांमां भये निहकांमां, सहज समाधि लगांऊंगा ॥ 2 ॥

74.

जोगी जन न्याइ जुगे जुगि जीवै।
आकास बांधि पाताल चलावै, आप भरे भरि पीवै ॥ टेक ॥
अंमृत[1] खात पिता परमोध्यौं[2], माइ[3] मुई करि सोग।
भाई बंध की आस न पूगी, भाजि गये सब लोग ॥ 1 ॥
बाहिली मूंदि लै मांहिली चोघिलै, पंच[4] की आस मिटाई रे।
भणत नांमदेव सेवि[5] निरंजन, सहज समाधि लगाई रे ॥ 2 ॥

75.

लटकि न बोलूं, बाप बर्तमान गाढा ॥
व्याख्या - (झूठ न कहौ नेम है मेरे येक अचंभा पेख्या)
कोल्हा ऐवड़ा मोतीड़ा, मैं मंझैं डोलैं देखीला ॥ टेक ॥

---

72. पाठा०— 1. कर कीहौ, 2. संजम, 3. मरौं, 4. सुनि।
73. पाठा०— 1. गुड़ी।
74. पाठा०— 1. अंम्रित, 2. परमोध्यो, 3. माई, 4. पंथ, 5. सोई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(डूब का मोती, मैं माहिला आखें देख्या)
छैली बैली बाघ्र जेला[1], मांजरिया भैटूंडै।
(छेली ब्याई बाघ तिनि जाया, मंजार भय भागा)
उडत पंखि मैं लौरू[2] पेख्या, नर लूजे ह्वै टांडैं॥ 1॥
(पंख सूं उड़ता देख्या, ऊंट सरीखा पागा)
बावलिया चै खोटै, मांखणियां चै पोटै[3]।
संषै सुनहां मारीला, तहां मीडक अभिला[4] लोटै॥ 2॥
(बबूल वृख कांट न्यौल जैसा होता, घीवड ला तिस लागा)
(संसै कू करै मारि बिडारया, मीड़क सरप सदाबा)
अम्हे जु गैला ब्राट देस, तहां गांझी दूध कैला।
(ऐक देस अैसा हम देख्या, गाडर दूध जु करिया)
श्रबै आंटैं गांझीला, तहां चौदह रंजन भरिला॥ 3॥
(इकहीं बार इकठा इतना, चौदह मटका भरिला)
लटक्यौ गईयौ गढिया जौलौ, गढिया एवडै रोलै।
(झूठा गया घड़नहार पै, घड़नहार बतलांनां)
उडत पंखि मैं मूंगी पेखी, बाटी जेहै डोलै॥ 4॥
(चींटी पर सौं उडती देखी, नेत्र सूर समांनां)
बिशनदास नामदेव इम प्रणवैं, ए छै जीव चीउकती।
(गुर प्रसादि कहत यौ नांमां, अनभै य जीय मांही)
लटक्यौ आछै सांगीला[5], ताथैं मोख न मुकती॥ 5॥
(भेष धरै अरु झूठा बोलै, मोख मुक्ति तिस नांही)

76.

देवा तेरा नींसांण बाज्या हो।
ताल पखावज जंत्र बेनां औसर[1] साज्या हो॥ टेक॥
लोहा तांबा बांदन कीन्हा, पाइ परी हैं बेरियां।
भौ सागर की संक्या छूटी, मुकति भई हैं चेरियां॥ 1॥
स्यंघ भागा पूठि फेरी, खांण लागी छेरियां।
बाहरि जाता भीतरि पेख्या, नांमैं भगति न बेरिया॥ 2॥

---

75. पाठा०— 1. जेवड़ा, 2. लवरू, 3. चखौटे, 4. अनिल, 5. छांगीला।
76. पाठा०— 1. अवसर, ऐसा अवसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

77.

संत प्रवेनी भगति आपिला।
नहीं आपिला तौ प्रांण[1] त्यागिला॥ टेक॥
हम ची थाती तुम्ह[2] बसि भईला, अम्हंचा जीवला किमचि[3] लागिला॥ 1॥
चार मुकति आठौं सिधि आपौं, भगति न आपौं दास रमईया॥ 2॥
नांमदेव बीठुल सनमुख बोलिला, भगति आपिला मुक्ति त्यागिला॥ 3॥

78.

सुनि[1] भाई महिमां नांम तनी[2]।
मारहा सतगुर पासैं जो मैं सुनी[3]॥ टेक॥
कोटि कोटि बार जौ पढिये बेद, सकल सास्त्र कौ लीजै भेद।
पुरान अठारह कौ मत जोइ, रांम नांम समि तुलै न कोई॥ 1॥
कोटि कोटि कूंप खिणांवै बाइ, कोटि कोटि कन्या दे प्रणाइ।
कोटि कोटि बार जौ कीजै ज्यगि, तुलै न नांम सहंश्र मैं भागि॥ 2॥
बिस्व सगली जौ दीजै दांन, कोटि कोटि तीरथ कीजै अस्नांन।
कोटि कोटि जप तप साधै पांन, तऊ न आवै नांम समांन॥ 3॥
गज गनिका गौतम बधु तरी, नृमल नांम येहौं[4] छै हरी।
पतित अजामेल सरनै गयौ, भाव कुभाव जिनि हरि नाम लयौ॥ 4॥
सुख नारद प्रहिलाद अभ्यास, सुमिर्‌यौ ध्रू सति करि बिसवास।
तिनके हरि काटे भौ[5] फंद, ते न चलैं चलैं रवि चंद॥ 5॥
हिरदै सति करि सुमर्‌यौ रांम, आंन धरम सब तजि बेकांम।
भनत[6] नांमदेव हरि सरनां[7], आवागमन मेटि मरनां[8]॥ 6॥

79.

पायौ मैं रांम संजीवनि मूरि[1]।
गुर मिल्यौ बैंद बिथा गई दुरि[2]॥ टेक॥
पढि पुरांन पंडित बौरांनां, भ्रम क्रम संसार भुलाना॥ 1॥
आंन देव सब भ्रम की पूजा, देह धरैं कौं धरम न दूजा॥ 2॥
पुनि मुनि उर निरभै मति चोखी, पीवत नांमदेव भये संतोषी॥ 3॥

---

77. पाठा०— 1. तन, 2. तुम, 3. कीमची।
78. पाठा०— 1. सुणि, 2. तर्णी, 3. सुर्णी, 4. रहौ, 5. भव, 6. भणत, 7. सरणां, 8. आवागवण भेटि मरणां।
79. पाठा०— 1. मूरी, 2. दूरी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ राग सोरठि ॥

80.

याही गोब्यंदा चरन मेरौ जीयरौ बसै रे।
भगति न छाडौं हरि की लोग हसै रे ॥ टेक ॥
गोब्यंदा कै नांइ[1] लीयै भौ जल तिरियै।
झूठी माया लागि लागि काहे कूं[2] मरियै ॥ 1 ॥
सांईं कूं सांकड़ै दीयैं[3], सेवग भाजै रे।
चिरकाल नां को जीवै, दोऊ पख लाजै रे ॥ 2 ॥
आपणां धन कारणि प्रांणीं, मरण मांडै रे।
भगति भगता जन काहे कूं छांडै रे ॥ 3 ॥
गंगा गया गोदावरी, संसारी जांमां रे।
सु परस[4] नरांइण सेवग नांमा रे ॥ 4 ॥

81.

मोकउ मिलिओ रामु सनेही।
जिह मिलिऐ देह सुदेही ॥ टेक ॥
अणमणिआ मंदलु बाजै, बिनु सावण घनहरू गाजै।
बादल बिनु बरखा होई, जउ ततु बिचारै कोई ॥ 1 ॥
मिलि पारस कंचनु होइआ, मुख मनसा रतनु परोइआ।
निज भाउ भइया भ्रमु भागा, गुर पूछे मनु पतीआगा ॥ 2 ॥
जल भीतरि कुंभ समानिआ, सभ रामु एकु करि जानिआ।
गुर चेले है मनु मानिआ, जन नामै ततु पछानिआ ॥ 3 ॥

82.

देवा नटणीं कौ तन मन, बांसा बरता मांहि रे।
अनेक राज्यंद्र[1] बैठे तिन हूं[2] सूं चित नांहि रे ॥ टेक ॥
सुमति सरीर संवारै, नटणीं निहारै।
रांम नांम नीसांण बाजै, इहि तति पाव धारै ॥ 1 ॥
एक मन एक चित खेली, लै खेलां रे।
प्रकट मूठी छाडि दे, ज्यूं मुकति भैला रे ॥ 2 ॥

---

80. पाठा०— 1. नांव, 2. कौं, 3. छाडे, 4. सु परसं न।
82. पाठा०— 1. राजिन्द्र, 2. तिनही,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरणीधर सूं ध्यांन लागौ, अंतरजांमीं रे।
नामदेव नटवा ह्वै नाच्यौ[3], तौ रीझ्यौ स्वांमीं रे॥ 3॥

83.

भाई रे भरंम गया भौ भागा।
तेरा जन जहां का तहां जाइ लागा॥ टेक॥
बाजीगर डाक बजाई, सब दुनी तमासै आई।
बाजीगर खेल सकेला, तब आपैं रहै अकेला॥ 1॥
रांम राइ माया लाई, सब दुनियां सौदे आई।
सब दुनियां सौदा कीन्हा, काहूं आतम रांम न चीन्हां॥ 2॥
म्रिग[1] खेत बिझूका देखै, भैचकि भैचकि पेखै।
निकटि गया सुधि पाई, अड़वाथैं कहा डराई॥ 3॥
यहु म्रिगनि खेत बिझूका, गई संक्या मन ढूका[2]॥
नांमदेव सतगुर ह्वै समझावै, याही थैं कहा बतावैं॥ 4॥

84.

जहां तहां मिल्यौ सोई।
ताथैं कहै सुनैं[1] कोई॥ टेक॥
अभेदैं भेद मिल्यौ, भेदैं मिल्यौ भेदू।
सहज सोई सहजै मिल्यौ, खेलैं मिल्यौ[2] खेलू॥ 1॥
दुख सोई दुखैं मिल्यौ, सुखैं सुख समांनां।
ग्यांन सोई ग्यांनैं मिल्यौ, ध्यांनैं मिल्यौ ध्यांनां[3]॥ 2॥
देख्यौ कहौं तौ निपट झूठ, सुणीं कहूं तौ झूठा रे।
नांमदेव कहै जे अगम भणैं, तौ पूछ्यां हीं अण पूछ्या रे[4]॥ 3॥

85.

बीठल भंवरा[1] कंवल न पावै।
ताथैं जनमि जनमि डहकावै॥ टेक॥

---

3. नाच्यो।

83. पाठा०— 1. मृग, मृघ, 2. ढूका।

84. टि० —यह पद 'सरबंगी' में 'राग गौड़ी' के अंतर्गत दिया हुआ है।
पाठा०— 1. सूणौं, 2. मिल रे, 3. मन से मन मिल्यौ, ग्यानौं मिल्यौ ग्यांन, 4. तौ कहिया सब झूठा। (सरबंगी)

85. पाठा०— 1. बीठुल भवंरा (1021), राम राई भ्रंरौ (1059),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दादुर एक बसै पड़वणि तलि, स्वाद कुस्वाद न पावै।
पहुप बास का लुबधी भौंरा, सो जोजन फिरि आवै॥ 1॥
महणारंभ होत घट भीतरि, रवि ससि नेत[2] बिलोवै।
वो हालै वो ठौर न पावै, ताथैं भवरा जुगि जुगि रोवै॥ 2॥
उपजी भगति पचीसौं परिहरि, बहुरि जनमि नहीं आवै।
अखंड मंडल निराकार मैं, दास नांमदेव गावै॥ 3॥

86.

रे मन पड़सि भोला पंजरै[1], संसार माया जाल रे।
ऐक दिन मैं तीनि फेरा, ताकौं सदा झंपै काल रे॥ टेक॥
धन रूप जोबन देखि करि, ग्रब्यौ कहा गंवार।
कुंभ काचौ नीर भरियौ, बिन सत नांही बार[2]॥ 1॥
कपूर भोजन सब कीये, नित नवा स्यंगार[3]।
हंस कावड़ि छाडि चाल्यौ, देही ह्वैली छार॥ 2॥
ते पिता जननी आपि लिछिमीं, पूत सौह[4] परिवार।
इता कुंभा[5] मेल्हि करि, येकलौ जाहि गवार॥ 3॥
भनत नांमदेव सुनहु तिलोचन, गोब्यंद का गुन गाइ।
पांहुंनड़ा दिन च्यारि का, बुदबुदा गया बिलाइ॥ 4॥

---

2. नेत्र (1059)।

86. पाठा०— 1. पिंजरे, 2. बाट, 3. सिनगार, अमी कुंदन कपूर भोजन, नित नवा सिंगँार रे, 4. सहु, सब्र, सो, 5. ऊभा।

टि० 1.—कुछ हस्तलेखों में प्रारंभिक अंश इस प्रकार है - 1. पडसि भोला प्यंजले (घुमान), 2. पंढर - पडिस भूला पिंजरे, 3. रे मन पंछीया न परसि पिंजरै (सभा)।

टि० 2.—पूना 85 की हस्तलिखित प्रति में 8वीं पंक्ति के पश्चात् निम्न दो पंक्तियाँ और मिलती हैं—

बरस लगि तेरी माइ रोवै, बहनडी छह मास रे।
अस्त्री रोवै दस देहाडा, चितवंती घर वास रे॥ 4॥

टि० 3.—अंतिम पंक्तियाँ इस प्रकार भी मिलती हैं—

भनत नांमदेव सुनूं हो तिलोचन, घटि दया ध्रम पालि रे।
पाहुनां दिनच्यारि केरा, सुकृत राम संभारि रे॥ 5॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

87.

जाबा न देख्यूं हौ नृहरी[1]।
मो नृधन कौ धन नरहरी ॥ टेक ॥
आगलि थयौ अगोचर थाइसि, मार हारि दया थकौं मंजाइसि हो नृहरी ॥ 1 ॥
तीनि लोक मैं कहां न समांनौं[2], संतन्ह हिरदै समांनौ हो नृहरी ॥ 2 ॥
नांमदेव कहै मैं सेवग तोरा, आवागवन निवारि हो नृहरी ॥ 3 ॥

88.

नादि समाइलो रे।
सतिगुरु भेटिले देवा ॥ टेक ॥
जब देखा तब गावा, तउ जन धीरजु पावा ॥ 1 ॥
जह झिलिमिल कारु दिसंता, तह अनहद सबद बजंता।
जोती जोति समानी, मैं गुर परसादी जानी ॥ 2 ॥
रतन कमल कोठरी, चमकार बीजुल तही।
नेरै नाही दूरि, निज आतमै रहिआ भरपूरि ॥ 3 ॥
जह अनहत सूर उज्यारा, तह दीपक जलै छंछारा।
गुरु परसादी जानिआ, जनु नामां सहज समानिआ ॥ 4 ॥

89.

हमरै बेढी प्रान अधारा।
री बाई बेढी देनु न जाई, देखु बेढी रहिओ[1] समाई ॥ टेक ॥
पाड़ पड़ोसणि पूछिले नामा, कापहि छानि छबाई हो।
तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ, मोकउ बेढी[2] देहु बताई हो ॥ 1 ॥
बेढी प्रीति मजूरी मांगै, जउ कोऊ छानि छवावै हो।
लोग कुटंब सभहु ते तोरै, तउ आपन बेढी आवै हो ॥ 2 ॥
ऐसी बेढी बरनि न साकउ, सभ अंतर सभ ठांई हो।
गूंगै महा अंम्रित रसु चाखिआ, पूछे कहनु न जाई हो ॥ 3 ॥
बेढी के गुण सुनि री बाई, जलधि बांधि ध्रू थापिओ[3] हो।
नामे के सुआमी सीअ बहोरी, लंक भभीखण आपिओ[4] हो ॥ 4 ॥

---

87. पाठा०— 1. जा बाण देसू हो नरहरि, 2. कहीं न समाने, 3. कहीं न समाणौं।
89. पाठा०— 1. रहिउ, 2. बेड़ी, 3. थापिउ, 4. आपिउ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ राग गौड़ी ॥

90.

अद्‌भुत अचंभा[1] कथ्या न जाइ।
चींटी कै नेत्रि कैसें गज्यंद्र[2] समाइ ॥ टेक ॥
कोई बोलै नियरे कोई बोलै दूरि, जल की मछली कैसें चढै खजूरि ॥ 1 ॥
कोई बोलै इन्द्री बांध्या कोई बोलै मुकता, सहज समाधि न चीन्है मुगधा ॥ 2 ॥
कोई बोलै बेद सुम्रिति पुरांनां, सतगुरि कथिया पद त्रिबांनां ॥ 3 ॥
कहत नांमदेव परंम तत अैसा[3], जाकै रूप न रेख बरन कहूं[4] कैसा ॥ 4 ॥

91.

देवा आज गुडी सहजि ऊडी, गगन मांहि समाई।
बोलनहारा डोरि समांनां, नहीं आवै नहीं जाई ॥ टेक ॥
तीनि रंग डोरि जाकै, सेत पीत स्याही।
छाडि गगन बाजि पवन, सुर नर मुनि चाहीं ॥ 1 ॥
द्वादस थैं उपजि गुडी, जांनैं जन कोई।
मनसा कूं दरस परस, गुर थैं गमि होई ॥ 2 ॥
कागद थैं रहित गुडी, सहजि आनंद होई।
नांमदेव जल मेघ बूंद, मिलि रह्या ज्यूं[1] सोई ॥ 3 ॥

92.

देवा पाहन तारीअले।
राम कहत जन कस न तरे ॥ टेक ॥
तारीले गनिका बिनु रूप कुब्जा[1], बिआधि अजामलु तारीअले।
चरन बधिक जन तेऊ मुकति भए, हउ बलि बलि जिन राम कहे ॥ 1 ॥
दासी सुत जनु बिदरु सुदामा, उग्रसैन कउ राज दीए।
जप हीन तप हीन कुल हीन क्रम हीन, नामे के सुआमी ते ऊतरे ॥ 2 ॥

---

90. पाठा०— 1. अचंभौ, 2. गजिन्द्र (पटि० सभा), 3. भणत नांमदेव हरि तत ऐसा (सरब्‍बंगी), 4. कहौ।
91. पाठा०— 1. यूं (1059).
92. पाठा०— 1. कुविजा (पंढर०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

93.

काहे रे मन भूला[1] फिरई।
चेति न रांम चरन चित धरई॥ टेक॥
नरहरि नरहरि जपि रे जीयरा, अवधि काल दिन आवै नीयरा[2]॥ 1॥
पुत्र कलित्र धन चित बिसासा[3], छांडि मनां रे झूठी आसा॥ 2॥
तू जिनि जानैं ग्रेहीं ग्रेहा, बिनसत बार कछू नहीं देहा॥ 3॥
कहत नांमदेव झूठी देही, तौ सांची जे रांम सनेही॥ 4॥

94.

रांम नामैं बोलि त्रिबांण बांणीं।
जिभ्या आंन मिथ्या करि जांणीं॥ टेक॥
को को न तारे को को न उधारे बैकुंठनाथ खसम हमारे॥ 1॥
सोनां की भालि[1] पखांन बेधीला, झींझ फूटी रांम नांम अकेला॥ 2॥
सपत पुरी नौ ऊखर भाई, रांम बिनां कौनैं गति पाई॥ 3॥
माटी देखि मांटी कहा भुलांनां[2], कहि समझावै दास नांमां॥ 4॥

95.

मेरी कौंन गति गुसांई, तुम्ह जगत भरन देवा।
जनम हीन क्रम[1] छीन, भूलि गयौ सेवा॥ टेक॥
बडौ पतित पतितन में, गज गनिका ग्रांमीं[2]।
और पतित जगत प्रगट, तिन मैं हूं नांमीं[3]॥ 1॥
तुम दयाल मैं गरीब, टेरि कह्यौ[4] रांमां।
दीन जांनि बीनती मांनि, गावै दास नांमां॥ 2॥

96.

डोल चै डोला कांन्हां।
जीव चा जीवल्ह[1] कांन्हां॥ टेक॥
तू आदि चौ समाधी, सिध चौ प्रसिद्ध कांन्हां॥ 1॥
तू बिचारि चौ सारूप, अज्ञान चौ कुठारौ कांन्हां॥ 2॥

---

93. पाठा०— 1. भूलौ (1021), 2. नियरा, 3. बेसासा।
94. पाठा०— 1. मालि, माला (घुमान), 2. लुभाना (पूना०)।
95. पाठा०— 1. करम, 2. गामी, 3. तिनहूं मैं नामी, 4. कहौं।
96. पाठा०— 1. जीव लू (1059).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू आनंद चौ कंदू, सुख चौ बिनौदू कांन्हां ॥ 3 ॥
तू प्रेम चा पूतला, नामौं भणैं श्री गोपाला ॥ 4 ॥

97.

अैसे जग थैं दास नियारा[1]।
बेद पुरांन पढौ किन साचौ[2], पंडित करौ बिचारा ॥ टेक ॥
दधि बिलोइ जैसैं घृत लीजै[3], बहुरि न येकठ थाई[4]।
पावक दार जतन करि काढ्यौ, बहुरि न काष्ट समाई ॥ 1 ॥
पारस प्रस्य[5] लोह जैसे कंचन, बहुरि न त्र्यंबक होई।
आक पलास बेधिया चंदन, काष्ट कहै न कोई ॥ 2 ॥
रांमहि जपै रांम हीं जांनैं, छाडि करम की आसा।
रांमहि जपै रांम हीं होई, प्रणवै नांमदेव दासा ॥ 3 ॥

98.

ऐकै[1] बिठूला सरणैं जाइ रे।
जनमैं बाए[2] का दौड़ा रे ॥ टेक ॥
तीरथै तीरथै का हींडा रे, लटकया कांई[3] तू बारे ॥ 1 ॥
(वृथा का खोया क्यूं फिरया रे, झूठा सिर क्यूं मुंडाया रे।)
एको फोकाचया तुलछी बाहा रे, ध्रू सरीखैं पद जोड़ा रे ॥ 2 ॥
(फोकट स्वाद तुलछी[4] तोड़ि बहिया, पद कूं घप्ति भया रे।)
नांम[5] भणैं तू देव पहरि, केसौ भगता चारिणिया रे ॥ 3 ॥
(तै देव देख्या रे, कारिण धरावै रे।)

---

97. टि० —यह पद रज्जब की 'सरब्रंगी' में 'राग रामगरी' में दिया हुआ है।
पाठा०— 1. निनारा, 2. ब्रेद पूराणं सोधी सब देख्या, वेद पुरांन सुमृत, 3. दधि मिथि जैसौ ध्रित करि लीजै। (सरबंगी), दधि मथे किन देखौ (घुमान, पूना, पंढर) तक्र काढि घृत लीना (पूना), 4. बहौरि न तक्र मिलाई (पूना), ऐकठ थाई, 5. परसि।
टि० —इसकी अंतिम दो पंक्तियाँ इस प्रकार भी मिलती हैं—
जे जन राम नाम रंगि राता[1], छाडि करम की आसा[2]।
ते जन रामै राम समानैं[3], प्रणवत नामदेव दासा ॥ 3 ॥
इनके भी कई पाठान्तर मिलते हैं—
1. राम ही जपै राम ही जायै (गुमान, पंढर०)
2. काटि करम की पासी (पूना)
3. राम ही भजतई राम ही होई (पंढर),
राम कहत राम ही होइ रहीए (पूना)।
98. पाठा०— 1. एकै, येक, 2. जनम वाया, 3. झोया का, 4. तुलसी, 5. नामौं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

99.

येबड़ी सीमूंनैं[1] बुधि आवड़ी।
रांम न बिसरौं येको[2] घड़ी॥ टेक॥
हरि हरि करतां जे नर लाजै, जम कीड़ांग तिन्हौं[3] सिरि बाजै॥ 1॥
हरि हरि कहतां कीजै बुता, गये पाप जे पोतै हुता॥ 2॥
नांमदेव कहै मैं नरहरि भणौं, कटै पाप और लाभ होइ घणौं॥ 3॥

॥ राग मालवा ॥

100.

कहि मन गोब्यंद गोब्यंदा।
चरन कवल चितवनि जिनि बिसरै, गोब्यंद गोब्यंद गोब्यंदा॥ टेक॥
मैं अंतर ग्रभ सहे दुख भारी, आवत जात पर्‌यौ मैं हारी॥ 1॥
दास नांमदेव हरि गुन[1] गावै, ताथैं भौ जलि बहुरि न आवै[2]॥ 2॥

॥ राग रामगरी ॥

101.

सुमरि हरि हरि[1] सूं चित लाइ।
सुमरि सुमरि गोब्यंद गुन गाइ॥ टेक॥
सब बसुधा दाहिणा दै आवै, कोटि कोटि जगि करै रू करावै।
सकल तीरथ करै अस्नांन, नही नही रे हरि नांव समांन॥ 1॥
अनेक धृम मन तैं उपजावै, अगिली पिछली बात बतावै।
कंठ पाठ मुखि बेद पुरांन, नही नही रे हरि नांव समांन॥ 2॥

---

99. पाठा०— 1. ऐवडी सीमौंनैं, नाम न बिसरूं एकौ घड़ी, 3. तिनै (घुमान)।
100. टि० — दादू द्वारा की पांडुलिपि 'क' में यह छंद 'राग रामकली' में दिखाया गया है।
पाठा०— 1. गुण, 2. बहुरि न भव जल नीरौ आऊं, बहुरी न भव जलौ आवे (पंढर), नियरै आवै (घुमान०)।
101. पाठा०— 1. सुमर सुमरि हरि स्यूं चित लाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काया पलटि बहुत दिन जीवै, यौ ही रैहै कुछ खाइ न पीवै।
गगन मंडल मैं जोगै ध्यांन, नही नही रे हरि नांव समांन॥ 3॥
पंचा अग्नि तप जो करै, सिध समाधि टारी नहीं टरै।
दसवें द्वारै काढै प्रान, नही नही रे हरि नांव समांन॥ 4॥
कासी ले जे करवत मरै, बहुरैं जाइ हिंवालैं गरै।
तुला तौलि जे दीजै दांन, नही नही रे हरि नांव समांन॥ 5॥
तापरि सतगुर कृपा करै, प्रेम भगति ले हिरदै-धरै।
इहैं कलि मैं सोई प्रवांन, नांमदेव भजै श्री भगवान॥ 6॥

102.

लाधो तौ लाधौ रे, मैं रांम नांम लाधौ।
प्रेमैं पाटै सुत्रैं पोयौ, कंठ लै बांधौ॥ टेक॥
रांम नांम ततसार[1], सुमिरि सुमिरि जन उतरे पार॥ 1॥
क्रिश्न[2] जननी क्रिश्न[3] पिता, क्रिश्न[4] बंधु भौ तारिता॥ 2॥
भणत नांमदेव हरि गुण गांऊं, बहुरि न जोनीं संकुटि आंऊं॥ 3॥

103.

बाद छाडि[1] रे भगता भाई।
हरि सी तैं निधि पाई, रांम तजि मेरौ मन अनत न जाई॥ टेक॥
जप माला तागै पोई, सरीर अंतरि है सोई।
बादि बिमुख हरि बिन दिन खोई, रांम नांम जप लोई।
परम तत है सोई, तीन्यूं रे त्रिलोक ब्याप्यौ, दूजा नहीं कोई॥ 1॥
संजीवनि मूली साईं[2], नट आरंभ संगि गाईं[3], रांम नांम बिन नांहीं आंन उपाई।
नांमदेव उतार्‌यौ पार, चेतहु रे चेतनहार, हरि की भगति बिनां औतरौगे बारंबार॥ 2॥

104.

हरि लै हरि लै हरि लै हरी।
अपनी भगति रांम करि लै खरी॥ टेक॥

---

102. पाठा०— 1. सकल सत सार (पंढर), 2, 3, 4. रांम, क्रिसन (पटि०), क्रिस्न (सभा), कृष्न (गुमान), क्रीसन (पंढर)।
103. पाठा०— 1. छाडी, 2. सोई, 3. नटारंभ संगि गाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम सौ ठाकुर कीजै, काहे न परतीति लीजै।
अपणीं[1] बापौती कारणि प्रांण दीजै ॥ 1 ॥
तुम्ह ची परतीति आई, द्रुमति तजि ले भाई।
सुत कौं जननी कैसें विष पाई ॥ 2 ॥
बालिक[2] सदन करै, मइया जैसें प्रांण धरै।
परब्रह्म पिता नांमां लाड लडै ॥ 3 ॥

[library stamp: पुस्तकालय ... गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय]

105.

छाडि छाडि रे मुगध नर कपट[1] न कीजै।
गोब्यंद नारांइण नांम मुखा लीजै ॥ टेक ॥
कोटि जो तीरथ करै, तन जौ हिंवालै गलै[2]।
पृथी सकल परदछिन दीजै, करवत कासी मैं लीजै।
सिव कूं जे सीस दीजै, रांम नांम सरि तऊ न तुलै ॥ 1 ॥
बानारसी तप करै, पलटि तीरथ फिरै।
काया जे अग्नि मुखि, कलेस कीजै, हिरण ग्रभ दान दीजै।
अस्वमेद जग्य कीजै, रांम रांम रांम सरि तऊ न तुलै ॥ 2 ॥
मांन जौ सरोवर जईयै, गया गंग जो कुरखेत न्हइयै।
गोमती असनांन गऊ कोटि दीजै, कुंभ जौ केदार जईयै।
सिंघ्र हस्त गोदावरी न्हईयै, रांम रांम रांम सरि तऊ न तुलै ॥ 3 ॥

---

104. पाठा०— 1. अपणी भगति (1059), 2. बालिक जैसे (1059)।
105. टि० — 1. इसे रज्जब की 'सरबंगी' में राग 'गुड़ी' के अंतर्गत दिया हुआ है।
2. यह पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में इस प्रकार दिया हुआ है—
छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै।
हरि का नामु नित नितहि लीजै ॥ रहाउ ॥
बानारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै, अगनि दहै काइआ कलपु कीजै।
असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै, राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ 1 ॥
गंगा जउ गोदावरि जाईऐ, कुंभि जउ केदार न्हाईए, गोमती सहस गऊ दानु कीजै।
कोटि जउ तीरथ करै तनु जउ हिवालै गारै, राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ 2 ॥
असुदान गजदान सिहजा नारी भूमिदान, ऐसो दानु नित नितहि कीजै।
आतम जउ निरमाइलु कीजै, आप बराबरि कंचनु दीजै, राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ 3 ॥
मनहि न कीजै रोसु जमहि न दीजै दोसु, निरमल निरबाण पदु चीन्हि लीजै।
जसरथराइ नंदु राजा मेरा रामचंदु प्रणवै नामा ततु रसु अंम्रित पीजै ॥ 4 ॥
पाठा०— 1. मूंकति, मुग्धत्र, 2. गालै (पंढर०), गरै (पूना),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्व दांन गज दांन, भोमि दांन कन्यां दांन।
ग्रिह दांन सिज्या दांन दांन दीजै, तब तुला तोलि दीजै।
मन जौ त्रिमल कीजै, रांम रांम रांम सरि तऊ न तुलै॥ 4॥
जंमहि न दीजै दोस, मनहि न कीजै रोस।
निरखि[3] त्रिबांण पद राम नांम लीजै।
आतमां अंगि लगाइ सेवि लै सहज भाइ[4]।
भणत नांमइयौ छीपौ अंमृत पीजै॥ 5॥

106.

रांम भगति बिन गति न तिरन की, कोटि उपाव जौ करहीं रे नर[1]।
जल सींचैं करि जतन प्रवालै, आंब बंबूल न फलही रे नर[2]॥ टेक॥
आपा थापि अवर कूं नींदै, ग्रब मांन के मारे।
फिरि पीछैं पछितावहुगे बावरे[3], रतन न मिलहि उधारे रे नर॥ 1॥
यहु ममिता अपनी जिनि जांनौं, धन जोबन सुत दारा।
बालू के मंदिर बिनसि जांहिगे, झूठे करहु पसारा रे नर॥ 2॥
जोग न भोग मोह नहीं माया, का भयौ बनखंडि बासा।
चरन कंवल[4] अनुराग न उपजै, तब लग झूठी आसा रे नर॥ 3॥
मनिषा जनमि आइ नहीं चेत्या[5], अंधे पसू गंवारा।
तैरै सिरि काल सदा सर सांधै, नांमदेव करत[6] पुकारा रे नर॥ 4॥

107.

कांइ रे भूले मूंढे जनां।
चांमद करवा नहीं आपनां॥ टेक॥
लोह रकता मेझा घनां[1], तुम जिनि जांनौं तन अपनां॥ 1॥
भणत नांमदेव नारांइणां, रांम नांम बिन ध्रिग आतमां[2]॥ 2॥

---

3. निरखि, 4. त्रिभवण राया नंद, राजा मेरे रामचन्द्र (सर्वंगी)।
106. पाठा०— 1. मन, 2. मन, 3. बौरे, 4. रांम नांम, 5. चेत्यौ (1021), चेते (1059), चेत्या (सभा, पटि०), चेते (घुमान), चीते (पंढर), 6. कहत (घुमान), करई (पंढर)।
107. पाठा०— 1. लोही रकता मंझा घनां (पटि०, सभा), रगता मासा घाणा (पंढर), रक्ता मेझा (पूना), 2. धृग जीवना (पटि०, सभा, घुमान आदि)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

108.

तुम्ह देवा हरि तुम्ह देवा।
मेरे तुम्ह हीं सजन बंधवा॥ टेक॥
आप बडौ जगनाथ देवा, जा[1] का भगत नांमां।
बालपनां कौ मीत मिल्यौ है, हम घरि राघो[2] पांहुणां॥ 1॥
लोग बोलै नांमा नांमा, ए बोल लागै हांमां।
अंगुरी दिखाये कुंहडा न जीवै, मैं[3] कैसे जीउं परसोत्तमां॥ 2॥
घाट काल्यन्द्री[4] डोल आछै, उपमा सोहै भला।
नैंन निरखि छीपा मिल्या[5], कुटंब नास भैला॥ 3॥
कंबली पठोलै गांठि पड़ी[6], क्रिश्न देव तेरी रावलियां।
मूंवल बांम्हंन पग दिखावै, खंभ खांऊं तेरी देहुरियां॥ 4॥
बोलत चालत सरूप आयौ, भेषि धरें बलिबंडा।
नांमां छीपी कौ भाग पलट्यौ, मिल्यौ रांम मनोहरा॥ 5॥

109.

तू आव कलंद्र[1] केसवा।
धरि अबदालव[2] भेष बाबा॥ टेक॥
ताज कुलह ब्रह्मडैं कीन्हां, पाव सपत पाताल जी[3]।
चमर पोस मृत मंडल कीन्हां[4], इहि बिधि बने गोपाल जी॥ 1॥
अठारह भार का मुदिगर कीन्हां, सहनक सब संसार जी।
छपन कोड़ि का पहिरण कीन्हां, सोलह सहंस इजारं जी॥ 2॥
काया मसीति मन मुलांनां[5], सहजि निवाज गुजारं जी।
कवलां सेती कांइण पढिया, निराकार आकार जी॥ 3॥
सहर बिषहर सबै तुम्ह फिरिया, तेरा किन हूं मरम न पाया जी।
नांमदेव का चित हरि सूं लागा, आसण करौ रांम राया जी[6]॥ 4॥

---

108. पाठा०— 1. जहाँ, 2. गोब्यंद, 3. हूं, 4. कलन्द्री, 5. मिल्यौ, 6. परी है।

109. टि० —यह पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में 'राग भैरव' के अंतर्गत दिया हुआ है। सभी हस्तलेखों में यह राग 'रामगरी' के अंतर्गत ही है।

पाठा०— 1. आउ कलंदर, 2. करि अबदाली भेसवा, अवदालम (घुमान), अवदाली (ग्रंथ), अब्रिदालिम (पूना), 3. जिनि आकास कुलह सिरि कीनी कउसै सपत पयाला, 4. का मंदरु तेरा, 5. देही महजिदि मनु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110.

बैश्नौं[1] ते मैं मैं ते बैश्नौं[2], सुणि[3] नारद रिषि[4] सांच।
जे भगता मेरे गुण गावै, ताकै अंतरि थकौ मैं नाचूं नारद ॥ टेक ॥
नारद कहै सुणौं नारांइण, बैकुंठ बसौ कि कविलास।
तहां मम कथा तहां मैं निहचल[5], बैश्नौं मंदिर बासं नारद ॥ 1 ॥
गंगा आदि सकल तीरथ करै, गुणचांस कोटि फिरि आवै।
एकादसी सहित संजम करै, ते मोहि सुपिनैं कदै न पावै नारद ॥ 2 ॥
जोगी जती तपी संन्यासी, इक मुनि ध्यांन बईठा।
जजै जगि बेद धुनि उचरै, तिनिहूं कदे न दीठा नारद ॥ 3 ॥
जगि जोग तप ध्रम ब्रत करै, जब लग इनकी आसा।
बसुधा आदि देहि दहणांवर्त[6], नहीं मम चरननि वासा नारद ॥ 4 ॥
जे भगता त्रिमल जस गावै, जे भगता मम सारं।
जीयां जीऊं पीया पीऊं, बैश्नो मम परिवार नारद ॥ 5 ॥
बैश्नौं मैं दोइ नाहीं नारद, प्रीति कीयां तैं आंऊं।
भगति हेत यहु ब्रत धर्‍यौ है, बैश्नों हाथि बंधांऊं नारद ॥ 6 ॥
बिसवाबीस आगैं बरताऊं, निज जन नांव सूं राता।
नांमां नौं स्वांमी परम पद आपै, भगति मुकति दोऊ दाता ॥ 7 ॥

111.

माधौ भीतरि मार दुहेली।
अबला को बल कहा गुसांई, परतखि जाइ न पेली ॥ टेक ॥
ए अनेक मैं एक गुसांई, कहौ कहा बस मेरा।
खेत की पहुचि कहां लूं राखै, खसम न करई फेरा ॥ 1 ॥
तुम से बैद न औषधि औरै[1], मंत्र और नहीं जांनां[2]।
ब्याधि असाधि अगाध दयानिधि, पचि पचि गये सयांनां ॥ 2 ॥
जिन कूं तुम हरिकारी कीनी, बिथा और नहीं ब्यापी।
नांमदेव कहै नहीं बस मेरा, क्रिपा करौ दुख कापी[3] ॥ 3 ॥

---

110. पाठा०— 1. व 2. बैस्नौं (पटि०, सभा), 3. सुनि, 4. रिष (सभा, घुमान), 5. निहचै (पूना, सरबंगी), 6. दहिणावत (सरबंगी, सभा), दैहणावत (पूना)।
111. पाठा०— 1. न हमसे रोगी (पूना), 2. मानां, 3. दूखकपी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112.

अवधू बेली बिरंधि करैली।
निरगुण जाइ निरंजन लागी, मारी हूं न मरैली ॥ टेक ॥
सहज समाधे बाड़ी रे अवधू, सतगुरि बाही बेली।
अमीं महा रस सींचण लागा, तत तरवर जाइ चढैली ॥ 1 ॥
अमर बेलि अनभै जाइ लागी, काटी हूं न कटैली[1]।
रूप रेख ताकै कुछ नांहीं, चंद्रहि कोटि फलैली ॥ 2 ॥
पांचूं मृघ[2] पचीसूं मृघी[3], सूंघत देखि मरैली।
निराकार नांमां तेरी बेली, अनत अमर फल देली ॥ 3 ॥

113.

अनेक मरि मरि जांहिगे रे अवधू।
इक रांम नांम तत रहैला ॥ टेक ॥
मुई जु आसा मुई जु त्रिसनां, मुई जु मनसा माई।
लोभ हमारी बहनीं मूई, तिनका सोच हम नांहीं रे अवधू ॥ 1 ॥
माइ का गोत मद मछर मूवा, बाप का गोत अहंकारं।
काम क्रोध भाई भतीजा मरि गया, तिनका सोच हम नांहीं रे अवधू ॥ 2 ॥
जा करणीं जोगेसुर मूवा, तास घरनि मैं जांऊंगा।
नांमदेव सतगुर साहीला, गोब्यंद चरन निवासा रे अवधू ॥ 3 ॥

114.

बैरागी रांमहि गांऊंगा।
सबद अतीत अनाहद राता, आकुल के घरि जांऊंगा ॥ टेक ॥
तीरथि जांऊं न जल मैं पैसौं, जीव जंत न सताऊंगा।
अठसठि तीरथ गुरू लखाये[1], घट हीं भीतरि न्हांऊंगा ॥ 1 ॥
बेद पुरांन न सास्त्र गीता, कवित कवी न सुनांऊंगा[2]।
अखंड मंडल निराकार मैं[3], अनहद बेन[4] बजांऊंगा ॥ 2 ॥
इला प्यंगुला सुषमन नारी, पवनां मंझि समांऊंगा[5]।

---

112. पाठा०— 1. टारी हू न हलैली, 2. मृग (सभा, पटि, पंढर, सरबंगी), 3. मृगी।
114. टि० —यह पद रज्जब की 'सरबंगी' में 'राग रामगरी' में किन्तु 'गु०ग्रं०सा०' में 'राग रामकली' शीर्षक से दिया गया है।
पाठा०— 1. दिखाए, 2. बेद कूरांण बखाणूं। नाहीं गीत कबित न गाऊँगा, 3. महि, 4. बेनु, 5. इड़ा पिंगुला अउरु सुषमना पउबै बंधि रहाउगो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद सूर दोऊ समि कर राखूं, ब्रह्म जोति मिलि जांऊंगा ॥ 3 ॥
पंच सु भाई मन[6] की सोभा, भला बुरा न कहांऊंगा।
नांमदेव कहै मैं केसो ध्यांऊं, सहज समाधि लगांऊंगां[7] ॥ 4 ॥

115.

पावैंघे पावैंघे[1] सहजैं मुरारी।
सबद अनाहद घंटा बाजै, बमेक बिचारी बीठला ॥ टेक ॥
त्रिवेणीं संगम मंजन करिहूं मनैं बुझाया।
बैंन कुसम करि चरचूं चितैं चंदन लाया ॥ 1 ॥
पाती प्रीति ध्यांन ले धूपं, दीपक ग्यांनां।
अजपा जपूं अपूज्या पूजौं, अजरा वर थांनां ॥ 2 ॥
जहां कछु नांहीं तहां कछु देख्या, जीयरा लोभांनां।
आतम केरे तेज मधें तेज दीपांनां ॥ 3 ॥
अनेक सूरिज मिलि उदै कीये हैं, ऐसी जोति प्रकासी।
तहां निरंजन अंजन खोले, बैकुंठवासी ॥ 4 ॥
करम सकल कौ लेख धरयौ है, विषई बिकारा।
चंवर पवन गुन अखित[2] करि हूं, सारंगधारा ॥ 5 ॥
बिना बिप्र बेद धुनि उचरैं, अधिक रसाला।
बिना तूंबर नारद नाचै, गावै बाजहिं ताला ॥ 6 ॥
रूप अतीत सकल गुन रहिता, गगनैं समांनां।
तहां थैं अधिक लै लागी, अंतरि ध्यांनां ॥ 7 ॥

---

6. सहाई जन, 7. नामा कहै चितु हरि सिउ राता सुंनि समाधि समाउगो।
केवल पूना की प्रति में निम्न पंक्तियाँ और मिलती हैं—
पाती तोडि न पाहन पूजी, देवल देव, न ध्याऊंगा।
पांनि पांनि परसोतम राता, ताकूं मैं न सताऊंगा ॥ 2 ॥
× × ×
जड़ी न बूटी ओषद साधूं, राजबैद न कहांऊंगा।
पूरण ब्रैद मिल्यौ बनमाली, नित उठि नाड़ि दिखांऊंगा ॥ 4 ॥
× × ×
सदा संतोष रहूं आनंद मैं, साइर बूंद समाऊंगा।
गगन मंडल मैं रहनि हमारी, पुनरपि जनमि न आऊंगा ॥ 5 ॥
शेष प्रतियों - 991, 1059, 1021, सरबंगी, गु०ग्रं०सा०, दादू द्वारा—क, ख, ग, घ, सभा, घुमान, पंढर०, पूना में ये पंक्तियाँ नहीं हैं।
115. पाठा०— 1. पावेंगे पावेंगे, 2. अख्यत,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिशनदास नामईया संगैं, भेटीला सोई।
हरि हरि हरि हरि कीरत न करतां, इहि विधि आनंद[3] होई॥ 8॥

116.

पुरिष[1] हाजिर बरन[2] नांहीं।
पूरि ठाढा बोलै मांहीं॥ टेक॥
ग्यांन ध्यांन रहित खेलै, आद्रिष्ट माँहैं द्रिष्टि मेलै।
संगि लागा भेष कांछे, सारीखा आगैं अरु पाछै[3]॥ 1॥
निगंध रूप बिबर्जित[4] बास, प्रणवंत नांमदेव हरि का दास॥ 2॥

117.

देवा पातुरि बाजै मांदल नाचै, एहडा[1] अचंभा दीठा।
पूछौ पढियां पंडितां, जलि[2] बैसंदर बूठा॥ टेक॥
चीटी ब्याई हस्ती जाया, एहड़ा[3] अचंभा थाया।
ऊभी ऊभी नाखीला, मैंमंत घूंमत आया॥ 1॥
पाइ न पंख बिना ही उडिया, कैरूं डाली बैठा।
नींब सदा फल सू फल फलिया, सो मोहि लागै मीठा॥ 2॥
ससै सींग मछै खुरी, भेड़ तड़का कांन।
माखी काजल सारण लागी, ऐसा ब्रह्म गियांन॥ 3॥
गाइ बियाई बछी जाई, गाइ बछी कूं धावै।
प्रणवंत नांमदेव गुर प्रसादैं, जो खोजै सो पावै॥ 4॥

118.

आज कोई मिलिसी रे मूनैं रांम सनेही।
तब सुख पावै हमारी देही॥ टेक॥
भाव भगति मन में उपजावै, प्रेम प्रीति हरि अंतर आवै॥ 1॥
आपा पर दुबिध्या सब नासै, सहजैं आतमां ग्यांन प्रकासै॥ 2॥
जन नांमां मन खरा उदास, तब सुख पावै मिलै हरिदास॥ 3॥

---

3. अनहद।

116. टि० —यद पद हस्तलेख 1059 में 'राग टोड़ी' के अंतर्गत दिया हुआ है।
पाठा०— 1. पुरस हाजरि (पूना), पुरीख हजारी (पंढर), 2. वरणि (सभा, पूना), 3. आगैरू पाछै (पटि०, घुमान, सभा, सरबंगी), 4. बीबर्तीत (पंढर)।

117. पाठा०— 1. येहडा, 2. ज्यू ले, 3. येवडा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

119.

नांरांइणा सूं मन नहीं रंजै[1]।
संजंम चूक ब्रत खंडै ॥ टेक ॥
येकादसी ब्रत जुगति न जाणैं, चंचल चित मन ठौर न रहै।
पंच आत्मां राखि न सकई, कृष्न दोष दे भूख मरै ॥ 1 ॥
प्रन्यद्या[2] जु आप प्रगासै[3], झूठी साखि सहजि टारै।
प्र त्रिया सौं रमैं रैंणि दिन, नेम ब्रत[4] दोऊ हारै ॥ 2 ॥
जलहरि पैसि पखाले काया, अंतरि मैल न तऊ छूटै[5]।
भणत[6] नांमदेव कछू न सूझै, पूजा कौंण देव की करै[7] ॥ 3 ॥

120.

मन मंझा तूं गोब्यंद चरन चित लाइ रे।
हरि तजि आंन न ध्याई रे[1] ॥ टेक ॥
बलि राजा धूधमार, न जीवै कौं जुग च्यारि[2]।
मेरी मेरी करते, ते भी गये रे मन मंझा ॥ 1 ॥
रे मन मछिंद्रनाथ, सहंस चौरंगी[3] होते।
ते भी देखत कालि लीये रे मन मंझा ॥ 2 ॥
रवि ससि दोऊ भाई, फिरि ते गगन लाई।
अैसै भूला भ्रंम सब, जाई रे मन मंझा ॥ 3 ॥
अहंकार दिन दस राखि लै दिन चारि[4]।
पसूड़ा नैं मुक्ति न होई रे मन मंझा ॥ 4 ॥
नांमदेव छीपी[5] चौपई गाई, जाकौ जैसा भाव[6]।
तिन तैंसी सिधि पाई रे मन मंझा ॥ 5 ॥

121.

पांडे देह अरथ लगाइ।
सात बरस कौं मांहि थौ, तब पाँच बरस की माइ[1] ॥ टेक ॥
अगम[2] अलेख बिचारि देखौ, सुसै स्वांन छिपाइ[3]।

---

119. पाठा०— 1. नारायन सूं मन न रमै, 2. पर निंद्या, 3. प्रकासे, 4. धरम, 5. अुतरै, 6. भणै, 7. कीजै।
टि० —पूना की प्रति में दूसरी पंक्ति इस प्रकार मिलती है—ऐकादसी ब्रज जुगति न जानैं, चंचल चित मन थिर न धरै।
120. पाठा०— 1. हरि तजि अनत न जाई रे, 2. चार, 3. चौरासी (पूना), 4. च्यार, 5. छीप्यौ, 6. भावै।
121. पाठा०— 1. माई, 2. अग्म (992, 1021), 3. छिपाई,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मछ[4] जल कौ गगन चढियौ, बाघ खैदे गाइ[5] ॥ 1 ॥
समंद भीतरि बूंद जाचै, बूंद समंद समाइ[6] ।
नांमदेव कै ऐक तूही, अलख लख्यौ न जाइ[7] ॥ 2 ॥

॥ राग आसावरी ॥

122.

जोगिया जिनि खरचसि दांमां।
सूम की नांई भेटि ले रांमां ॥ टेक ॥
बाई कौ दांम न खरच्यौ भावै, गांठि परै तब परचा आवै ॥ 1 ॥
भणत नांमदेव राखि लै थाती, प्रगटी जोति तहां दीवा न बाती[1] ॥ 2 ॥

123.

झिलि मिलि झिलि मिलि झिलि मिलि तारा।
सो झिलि मिलि तिहूं लोक पियारा ॥ टेक ॥
रहै अकास पड़ै नहीं द्रिष्टी, पकड़्या जाइ न आवै मुष्टी ॥ 1 ॥
दीपक पखै[1] तेल बिन बाती, जोति सरूप बलै दिन राती ॥ 2 ॥
भणत नांमदेव अमर पद परस्या, प्यंड भया मुकति तया तत[2] दरस्या ॥ 3 ॥

124.

त्रिवेणी पिराग करहु मन मंजन।
सेवौ राजा रांम निरंजन ॥ टेक ॥
पुरी द्वारिका निकटि गोमती, गंग जमुन बिचि बहै सुरसती ॥ 1 ॥
अठसठि तीरथ मधि सरोवर, एकत पाता मैं ताको घर[1] ॥ 2 ॥
भणत नांमदेव सुणहु तिलोचन, ए तीरथ सब अघ के मोचन ॥ 3 ॥

---

4. मीन, 5. गाई, 6. समाई, 7. जाई।
122. पाठा०— 1. जोति बलै तू ही तेल न बाती (1059), प्रगट जोति जहां (सभा, पंढर, पूना)।
123. पाठा०— 1. खपै (992), 2. तब आतम।
124. पाठा०— 1. अठसठि तीरथ मीध सरीरा, ऐ किन करौ निकट ही बीरा। (सरबंगी), 2. ऐक तणैं तामैं ताकौ घर (1021)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

125.

माधौ[1] जी माया मिलण[2] न देई।
जन जीवैं त्यौं करौ हो सनेही ॥ टेक ॥
माया जलधर मोर मन माछी, नीर बिना क्यूं जीवै हो पियासी ॥ 1 ॥
जे मोड़ौं तौ मूल बिनासा, बोझ पड्या नहीं आवै सासा ॥ 2 ॥
भणत नांमदेव दीनदयाला, नृधारनि[3] कै तुम्ह हीं अधारा ॥ 3 ॥

126.

धीरैं धीरैं खाइबौ कथन न जाइबौ।
आपन खैबौ तब नृमल ह्वैबौ ॥ टेक ॥
पहली मैं खैहौं आई माई, पीछैं खैहौं घर कौ[1] जवांई ॥ 1 ॥
उगलिबा चंदा गिलिबा सूर, फूनि मैं खैंहौं घर कौ सुसर ॥ 2 ॥
फूंनि मैं खैहौं पंचौ लोग, भणत नांमदेव ये सिध जोग ॥ 3 ॥

127.

संसार साग्र विष कौ बना।
तामैं कैसैं तिरैगौ रे मनां ॥ टेक ॥
ना कुछ सुक्रित कीधिला, अभख भाखीला।
गोब्यंद सेवा चूकीला, तातैं अछोप राखीला ॥ 1 ॥
सूध्य बचन न बोलीला, आपा प्रकछू चींन्हींला।
गोब्यंद भगता पूजीला, तौ अच्यंत[1] भेटीला ॥ 2 ॥
छीपी के घरि जन्म भैला, गुर उपदेसीला।
संत के प्रसादि नांमदेव, नरहरि भेटीला ॥ 3 ॥

॥ राग वसंत ॥

128.

माधौ माली एक सयांनां।
अंतरगति रहै लुकांनां ॥ टेक ॥

---

125. पाठा०— 1. माधव, 2. मिलन, 3. निरधारन।
126. पाठा०— 1. सगा (घुमान)
127. पाठा०— 1. अच्युत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपैं बाड़ी आपैं माली, कली कली करि जोड़ै।
पाके काचे काचे पाके, मनि मांनैं[1] ते तोड़ै ॥ 1 ॥
आपैं पवन आप ही पांणीं, आपैं बरिषै मेहा।
आपैं पुरिष नारि पुनि आपैं, आपैं नेह सनेहा ॥ 2 ॥
आपैं चंद सूर पुनि आपैं, आपैं धरनि अकासा।
रचनहार बिधि अैसी रची है, प्रणवैं नांमदेव दासा ॥ 3 ॥

129.

काल न्याइ बिचारि हौ।
काइथ बाम्हन तिलक सुमिरि हौ ॥ टेक ॥
चारि बेद चौधरनीं[1], नरकि पड़ौ धरमादिक करणीं ॥ 1 ॥
सूंझणि नां परि धांधे, चंद सूर मैं उर धरि बांधे ॥ 2 ॥
बांम्हन मद भरि सरवा, जतन पीवै तत मातल[2] बरवा ॥ 3 ॥
हरि कौ दास भणैं नांमां, रांम नांम बिन और न जांनां ॥ 4 ॥

130.

तेरी भगति न छोडउ भावै लोगु हसै।
चरन कमल मेरे हीअरे बसै ॥ टेक ॥
साहिबु संकट वै सेवकु भजै, चिरंकाल न जीवै दोऊ कुल लजै ॥ 1 ॥
जैसे अपने धनहि प्रानी मरनु मांडै, तैसे संत जनां रांम नामु न छाडै ॥ 2 ॥
गंगा गइआ गोदावरी संसार के कामां, नाराइणु सुप्रसंन होइ त सेवकु नांमा ॥ 3 ॥

131.

जैसे पनकत[1] थ्रू टिटि[2] हांकती।
सरि धोवन चाली लाडुली ॥ टेक ॥
सहज अवलि धूड़ि[3] मणी गाडी चालती।
पीछे तिनका लै कर हांकती ॥ 1 ॥
धोबी धोवै बिरह बिराता।
हरि चरन मेरा मनु राता ॥ 2 ॥

---

128. पाठा०— 1. भावै।
129. पाठा०— 1. चौ धरणी, 2. मातिल।
131. पाठा०— 1. धनकत, 2. थ्रू ठिटि, 3. घुंडी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भणति नांमदेउ रमि रहिआ।
अपने भगत पर करि दइआ॥ 3॥

॥ राग ललित ॥

132.

जांणौं नैं जांणौं नैं बेद पुरांना, छाडौ पांनां पोथी।
बिन मेघां मुकताहल बरिखैं, श्रबन[1] निरंतर मोती॥ टेक॥
बिनै बजाया बाजा बाजैं, नादै अंबर गाजै।
बिन भेरैं होत झणकार, न दीसै बजावणहार॥ 1॥
बिन पावक जोति ही दीसै, सुनिं मैं सूता जागै।
अंधियारा नौं भौ भागौ रे भाई, जे जोइयै ते आगे॥ 2॥
कर जोड़ी नै नामौं बीनवैं[2], मैं मूरिख मति थोड़ी।
ए पद नौंहे तारथ जांणैं, तेन्हैं पगि लागूं कर जोड़ी॥ 3॥

133.

जब तब रांम नांम निस्तारै।
साठि घड़ी मैं एक घड़ी[1] रे, सोई सकल अघ जारै॥ टेक॥
कासीपुरी मंझि गौरापति, अह निसि सदा पुकारै।
कीट पतंग सुनत गति पावै, गोब्यंद जस[2] बिस्तारै॥ 1॥
अजामेल गनिका सुक पंखी, रसनां नांम[3] उचारै।
गज पसु ब्याधि तिरे हरि सुमिरत, महिमां ब्यास बिचारै॥ 2॥
परंम पुनीत सु लये हरि बासुर[4], निज जन हरि ब्रत धारै।
नांमदेव कहै सोई दास कहावै, जीय तैं छिन न बिसारै॥ 3॥

---

132. टि० — दादू द्वारा की पांडुलिपि 'क' में यह पद 'राग रामकली' में दिया गया है।
पाठा०— 1. श्रबनि, 2. बिनवै।

133. टि० — दादू द्वारा की पांडुलिपि 'क' में यह पद 'राग रामकली' में दिया गया है।
पाठा०— 1. घरी, 2. गुन, 3. नांव राम, 4. परम पुनीत नांव निसि बासुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

134.

बाप जी एतलौं[1] अंतरौ[2] कीधौं।
जनम नांव[3] दरजी नौं दीधौं ॥ टेक ॥
ब्राह्मण औचरैं[4] बेद नैं बांणीं, जेत लौं अंतरौ दूध नैं पांणीं ॥ 1 ॥
जाग्रत नैं आव्या ब्यास नैं भाटा, ऊठौ नांमदेव नाखियैं छांटा ॥ 2 ॥
अम्हारी[5] भगति न जांणीं हो रांमां, हसि करि, कृश्न बुलाए नांमां ॥ 3 ॥

॥ राग भैरव ॥

135.

नांमदेव[1] प्रीति नरांइण लागी।
सहज सुभाइ भये[2] बैरागी ॥
जैसी भूखै प्रीति अनाज, त्रिषावंत जल सेती काज।
मूरख नर जैसैं[3] कुटंब परांइण, ऐसी नांमदेव प्रीति नरांइण ॥ 1 ॥
जैसे पर पुरिषा रत नारी, लोभी नर धंन कौ हितकारी।
कांमीं पुरिष कांम रत नारी[4], ऐसी नांमदेव[5] प्रीति मुरारी ॥ 2 ॥
जैसी प्रीति बालक[6] अरु माता, ऐसैं यहु मन हरि सूं राता।
नांमदेव कहै[7] मेरी लागी प्रीति, गोब्यंद बसै हमारै चीति ॥ 3 ॥

136.

नांइ तिरूं तेरे नांइ तिरूं[1]।
नांइ तिरूं हो बाप रांमदेवा ॥ टेक ॥
नित अमावस नितैं पून्यौ, नितैं ही रवि चंदा।
गंगा चमुनां संगमि देखौं, आनंद लहरि तरंगा ॥ 1 ॥

---

134. पाठा०— 1. येतलौं (सभा, घुमान, पंढर), 2. अंतर, आंतरौ (पूना), 3. नाउं, 4. उचरै (पटि, पंढर, पूना), 5. हमारी (पटि०, सभा)।

135. टि० — गु०ग्रं०सा० में इसका तीसरा चरण इस प्रकार दिया हुआ है—
साई प्रीति जे आपे लाए, गुर परसादी दुबिधा जाए।
कबहु न तूटसि रहिआ समाइ, नामे चितु लाइआ सचि नाइ ॥ 3 ॥
पाठा०— 1. नामे, 2. भइओ, 3. जैसी मूड़, 4. कामनी पिआरी, 5. नामे, 6. बारिक, 7. प्रणवै नामदेउ।

136. पाठा०— 1. तिरौं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घट ही बेणी तीरथ आछै, मरम न जांणैं कोई।
चित बिहंगम चेति न देखै, काहू लिपत न होई ॥ 2 ॥
ग्यांन सरोवर मंजन मंज्या, सहजैं छूटि लै भरमां।
नांमां संगैं रांम बोलै, रांम नांम निहकरमां[2] ॥ 3 ॥

137.

भगवंत भगता नहीं अंतरा।
द्वै करि जांणैं पसुवा नरा ॥ टेक ॥
छाडि भगवंत बेद बिधि करै, दाझै भूंजै जांमैं मरै ॥ 1 ॥
कथणीं बदणीं सबको कहै, करणीं जन कोई बिरला रहै ॥ 2 ॥
कहत नांमदेव ममिता जाइ, तौ साध संगति मैं रहै समाइ ॥ 3 ॥

138.

रांम रांम रांम रांम जपिबौ करै।
हिरदै हरि जी कौ सुमिरण[1] धरै ॥ टेक ॥
संडामरका[2] जाइ पुकारे, पढै नहीं हम पचि हारे।
हरि हरि[3] कहै करताल बजावै, चटरा[4] सबै बिगारे ॥ 1 ॥
सब बसुधा बसि कीन्हीं राजा[5], बीनती करै पटरांनीं।
पुत्र[6] प्रहिलाद कह्यौ नहीं मानैं, इनि कुछ औरै ठांनी[7] ॥ 2 ॥
राज[8] सभा मिलि मंत्र उपायौ[9], बालक बुधि घणेरी[10]।
जल थल गिर ज्वाला थैं राख्यौ, रांम राइ माया फेरी[11] ॥ 3 ॥
काढि खड़ग काल ह्वै कोप्यौ[12], मोहि बताइ तोहि को राखै।
खंभा मांहि प्रगट्यौ परमेसुर, सकल बियापी सति भाखै[13] ॥ 4 ॥
हिरनाकुस कौ उद्र बिदार्‌यौ, सुर नर कीये सनाथा।
भणत नांमदेव तुम्ह सरणागति[14], रांम अभै पद दाता ॥ 5 ॥

2. नहीं करमा।

138. पाठा०— 1. सिमुरन, 2. संना मरूका, 3. राम, 4. चटीआ, 5. बसुधा बसि कीन्ही सभ राजे बिनती कहै पटरानी, 6. पूतु, 7. तिनि तउ अउरै ठानी, 8. दुसट, 9. मंतर उपाइआ (गु०ग्रं०सा०) मतो उपायो (1021), 10. गिरितर जल जुआला भै राखिओ, 11. राजा रामि माइआ फेरी, 12. कोपिओ, 13. पीत पीतांबर त्रिभवण धणी थंभ माहि हरि भाखै, 14. कहि नामदेउ हम नरहरि धिआवहि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

139.

जिभ्या बोलहि[1] तौ रांमहि बोलि।
नहीं तौ बदन कपाट न खोलि॥ टेक॥
जे बोलियै तौ कहियै रांम, आंन बकन सूं नांहीं कांम॥ 1॥
रांम नांम मेरै हिरदै लेख, रांम बिनां सब फोकट देख॥ 2॥
नांमदेव भणै मेरै एकै नांउं, रांम नांम की मैं बलि जांउं॥ 3॥

140.

जपि रांम नांम मंत्रावला[1]।
कलिजुग मरनां उतावला॥ टेक॥
दिवस गवाया ग्रिह ब्यौहार, राति जु आई अंधकार॥ 1॥
दूरि पयांनां औघट घाट, क्यूं निसतरिबौ संग न साथ॥ 2॥
भणव नांमदेव औघट[2] तिरी, अरधैं नांइ उबारै हरी[3]॥ 3॥

141.

मैला मलिता सब संसार।
हरि त्रिमल जाकौ अंत न पार॥ टेक॥
मैला बीरज मैला खेत, मन मैला काया जस[1] हेत॥ 1॥
मैला मोती मैला हीर, मैला पवन पावक अरु नीर॥ 2॥
मैला तीनि लोक ब्रह्मंड इकवीस, निस बासुरि मैला दिन तीस॥ 3॥
मैला ब्रह्मा मैला इंद्र, सहंस कला मैला रवि चंद॥ 4॥
सब जग मैला आंनहि भाइ, जन त्रिमल[2] जब हरि गुण गाइ॥ 5॥
मैला पुनि अरु मैला पाप, मैला आंन देव का जाप॥ 6॥
मैला सुर मैली सुरसुरी, नांमदेव का ठाकुर त्रिमल हरी॥ 7॥[3]

142.

जागि रे जीव[1] कहा भुलांना।
आगै पीछैं जांनां हीं जांनां॥ टेक॥

---

139. पाठा०— 1. जैभ्या बोलै (1021), जौ (992)।
140. पाठा०— 1. मन बावला (1059), 2. अवघट (वा०), 3. अरधै नांव उधारै हरी (पूना)।
141. पाठा०— 1. माया रस, 2. निरमल, 3. इससे पूर्व का चरण है—''मैला तीरथ, मैला दांन, ब्रत मैला पूजा स्नान।'' (1021, पंढर, पूना)।
142. पाठा०— 1. मन (1059),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवस चारि का गोवलि बासा, तामैं तोहि क्यूं आवैं हासा ॥ 1 ॥
इहि भ्रमि लागि कहा तू सोवै, काहें कौं जनम बादि हीं खोवै ॥ 2 ॥
कहा तूं सोचै[2] बारंबारा, रांम नांम जपि लेहु गंवारा ॥ 3 ॥
भणत नांमदेव चेति अयांनां, औघट घाट अरु दूरि पयांनां ॥ 4 ॥

143.

छांडि रे मन हमिता ममिता[1] ।
सब घटि रांम रह्यौ रमि रमिता ॥ टेक ॥
आसा करि मन जाइयै जहियां, रांम बिनां सुख नांहीं तहियां ॥ 1 ॥
जन की प्रीति अगम पियारी, ज्यूं जल निरखि भरै पनिहारी ॥ 2 ॥
भणत नांमदेव सब सुख आगर, भजि हरि चरन कृपा सुख सागर ॥ 3 ॥

144.

हरि भजि हरि भजि हरि भजि मूल।
बिन हरि भजन परै मुख धूल ॥ टेक ॥
अनेक बार पसू ह्वै औतर्‍यौ, लख चौरासी भ्रमत[1] फ़िर्‍यौ।
पायौ नहीं कहीं विश्रांम, सतगुर सरनि कह्यौ नहीं रांम ॥ 1 ॥
राज काज सुत बित सब जाइ, अबिनासी सूं प्रीति लगाइ।
इहि उनमांन भगति ब्रत धरै, जरा मरंन भौ संकट टरै ॥ 2 ॥
गुण सागर गोब्यंद गुण गाइ, अपनौं बिड़द बिसरि जिनि जाइ[2] ।
प्रणवंत नांमदेव संत सधीर, चरन सरन राखौ हरि नीर ॥ 3 ॥

145.

जे न भजैं नर नारांयणां।
ताकौ[1] मैं न करौं दरसनां ॥ टेक ॥
जांहि सवारे आवै सांझ,ते नर गिणियें पसुवा मांझ ॥ 1 ॥
जिनकै हरि नहीं अभिअंतरा, जैसे पसवा तैसे नरा[2] ॥ 2 ॥
जैसी संतौ विष की डरी, तैसी पर घर की सुंदरी ॥ 3 ॥

---

2. सोवै (992)।
143. पाठा०— 1. हम्मता ममता (पूना)।
144. पाठा०— 1. भरमत, 2. आपनौ बिरदै बिसर न जाई।
145. पाठा०— 1. तिनकौ, 2. जिनकै भीतरि है अंतरा, जैसे पसु तैसे ओइ नरा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर धनं पर दारा परहरी, तिनकै[3] निकटि बसै नरहरी ॥ 4 ॥
प्रणवंत नांमदेव नाका[4] बिना, नां सोहै बतीस लखिणां[5] ॥ 5 ॥

146.

आन न जांणौं[1] देवी न देवा।
जत जत जागण ततहिं तेरी सेवा ॥ टेक ॥
तू सुख साग्र आग्र दाता, तू ही मेरे प्रांण पिता गुर माता ॥ 1 ॥
नामौं भणैं मेरे सब कुछ सांई, मनसा बाचा दूसर नाहीं ॥ 2 ॥

147.

पांडे मोहि पढावहु हरी।
बिद्या अपणी राखहु[1] धरी ॥ टेक ॥
बारह अखिर की बारहखड़ी, हरि बिन पढिबे की आखड़ी ॥ 1 ॥
ररौ ममौं दोइ अखिरा, पारि उतारै भौ सागरा ॥ 2 ॥
हम तुम्ह पांडे कैसा बाद, रांम नांम पढि हैं प्रहिलाद ॥ 3 ॥
पतड़ा पोथी परहा[2] करौ, रांम नांम जपि दूतर तिरौ ॥ 4 ॥
थंभा मांहीं प्रगट्यौ हरी, नांमदेव कौ स्वामी नरहरी ॥ 5 ॥

148.

रांम नांम मेरे पूंजी धनां।
जा[1] पूंजी मेरौ लागौ मनां ॥ टेक ॥
यहु पूंजी है अगम अपार, अैसा कोई न साहूकार ॥ 1 ॥
साह की पूंजी आवै जाइ, कबहूं आवै मूल गवाइ ॥ 2 ॥
जाली जलै न काई खाइ, राजा डंडै न चौर ले जाइ ॥ 3 ॥
अलख निरंजन दीनदयाल, नांमदेव कै धन श्री गोपाल ॥ 4 ॥

149.

रांम नांम मैं प्यंड[1] पखाल।
मन नहीं लागै जपत गोपाल ॥ टेक ॥

---

3. ताकै, 4. ताके, नाकहि, 5. लषणा (पटि०), लखिना (सभा), नखना (गु०ग्रं०सा०)।
146. पाठा०— 1. भावै, आन न जानौं देव न देवा (घुमान), देवी देवा (पूना)।
147. पाठा०— 1. राखौ, 2. अलैगा (1059)।
148. पाठा०— 1. ता (गुमान, पंढर०)।
149. पाठा०— 1. पिंड (घुमान, पूना),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रांम नांम डूंगर सी सिला, धुबिया[2] धोबै अंतरि मला ॥ 1 ॥
बरणां आश्रम नांनां मती, नांमदेव नौं स्वांमीं कंवलापती ॥ 2 ॥

150.

हरि दरजी का मरम न पाया।
जिनि पहु बाग्गा खूब बनाया ॥ टेक ॥
पांनी का चित्र पवन का धागा, ता सीवंत मांस दस लागा ॥ 1 ॥
स्यौ स्यौ बाल मुकट बनि[1] आया, ये दोइ हीरा लाल लगाया ॥ 2 ॥
भगति मुकति का पटा लिखाया, पूरन पारब्रह्म पद पाया ॥ 3 ॥
आपै सींवैं आप पहिरावै, नृति[2] नांमदेव नांव धरावै ॥ 4 ॥

151.

दूधु पीउ गोबिंदे राइ।
दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ, नाही त घर को बापु रिसाइ ॥ टेक ॥
दूधु कटोरै गड़वै पानी, कपिल गाइ नामै दुहिआनी ॥ 1 ॥
सोइन कटोरी अंम्रित भरी, लै नामै हरि आगै धरी ॥ 2 ॥
एकु भगतु मेरे हिरदै बसै, नामे देखि नराइनु हसै ॥ 3 ॥
दूध पीआइ भगतु घरि गइआ, नामे हरि का दरसनु भइआ ॥ 4 ॥

152.

भले निंदउ भले निंदउ भले निंदउ लोगु।
तनु मनु राम पिआरे जोगु ॥ टेक ॥
मैं बउरी मेरा राम भतारू, रचि रचि ता कउ करउ सिंगारु ॥ 1 ॥
बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै, रसना राम रसाइनु पीजै ॥ 2 ॥
अब जीअ जानि ऐसी बनि आई, मिलउ गुपाल नीसानु बजाई ॥ 3 ॥
असतुति निंदा करै नरु कोई, नामे स्त्री[1] रंगु भेटल सोई ॥ 4 ॥

153.

जिउ रामु राखै तिउ रहीऐ रे भई।
हरि की महिमा किछु कथनु न जाई ॥ टेक ॥

---

2. धोबिया (पूना)।
150. पाठा०— 1. स्यौं, सुरवाल मुकट बनि आया, 2. निरत।
152. पाठा०— 1. श्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबहू खीरि खाड घीऊ न भावै, कबहू घर घर टूक मगावै।
कबहू कूरनु चने बिनावै ॥ 1 ॥
कबहू तुरे तुरंग नचावै, कबहू पाइ पनहीओ न पावै ॥ 2 ॥
कबहू खाटु सुपेदी सुवावै, कबहू भूमि पैआरु न पावै ॥ 3 ॥
भनति नामदेउ इकु नाम निसतारै, जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै ॥ 4 ॥

154.

हीनड़ी जाति मेरे जादभ राइआ।
छीपे के जनमि काहे कऊ आइआ ॥ टेक ॥
हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ, भगति करत नामा पकड़ि उठाइआ ॥ 1 ॥
लै कमली चलिओ पलटाइ, देहुरै पाचै बैठा जाइ ॥ 2 ॥
जिऊ जिऊ नामा हरि गुण उचरै, भगत जनां कऊ देहुरा फिरै ॥ 3 ॥

155.

पापी का घरु अगने माहि।
जलत रहै मिटबै कब नाहि ॥ टेक ॥
घर की नारि तिआगै अंधा, परनारी सिऊ घालै धंधा।
जैसे सिंबलु देखि सूआ बिगसाना, अंत की मार मूआ लपटाना ॥ 1 ॥
हरि की भगति न देखै जाइ, मारगु छोडि अमारगि पाइ।
मूलहु भूला आवै जाइ, अंम्रितु डारि लादि बिखु खाइ ॥ 2 ॥
जिउ बेस्वा के परै अखारा, कापर पहिरि करहि सींगारा।
पूरे ताल निहाले सास, वाके गले जम का है फास ॥ 3 ॥
जाके मसतकि लिखिओ करमा, सो भजि परि है गुर की सरना।
कहत नामदेउ इहु बीचारु, इन बिधि संतहु उतरहु पारि ॥ 4 ॥

156.

नामा सुलताने बाधिला।
देखउ तेरा हरि बीठुला ॥ टेक ॥
सुलतानु पूछै सुन बे नामा, देखऊ राम तुम्हारे कामा ॥ 1 ॥
बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ, नातरु गरदनि मारउ ठांइ ॥ 2 ॥
बादिसाह ऐसी किऊ होइ, बिसमिलि कीआ न जीवै कोइ ॥ 3 ॥
मेरा कीआ कछू न होइ, करि है रामु होइ है सोइ ॥ 4 ॥
बादसाहु चढिओ अहंकारि, गज हस्ती दीनो चमकारि ॥ 5 ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुदनु करै नामै की माइ, छोडि राम की न भजहि खुदाइ ॥ 6 ॥
न हउ तेरा पूंगडा न तू मेरी माइ, पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ ॥ 7 ॥
करै गजिंदु सुंड की चोट, नामा उबरै हरि की ओट ॥ 8 ॥
काजी मुलां करहि सलामु, इनि हिंदू मेरा मलिआ मानु ॥ 9 ॥
बादिसाह बेनती सुनेहू, नामे सर भरि सोना लेहु ॥ 10 ॥
माल लेहु तउ दोजकि परऊ, दीनु छोड़ि दुनीआ कऊ मरऊ ॥ 11 ॥
पावहु बेड़ी हाथहु ताल, नामा गावै गुन गोपाल ॥ 12 ॥
गंग जमुन जऊ उलटी बहै, तऊ नामा हरि करता रहै ॥ 13 ॥
सात घरी जब बीती सुणी, अजहु न आइओ त्रिभवन धणी ॥ 14 ॥
पाखंतण बाज बजाइला, गरुड़ चढ़े गोबिंद आइला ॥ 15 ॥
अपने भगत परि की प्रतिपाल, गरुड़ चढ़े आए गोपाल ॥ 16 ॥
कहहि त धरणि इकोडी करऊ, कहहि त ले करि ऊपरि धरऊ ॥ 17 ॥
कहहि त मुई गऊ देऊ जीआइ, सभु कोई देखै पतीआइ ॥ 18 ॥
नामा प्रणवै सेलम सेल, गऊ दुहाई बछरा मेलि ॥ 19 ॥
दूधहि दुहि जब मटुकी भरी, ले बादिसाह के आगे धरी ॥ 20 ॥
बादिसाहु महल महि जाइ, अऊघट की घट लागी आइ ॥ 21 ॥
काजी मुलां बिनती फुरमाइ, बखसी हिंदू मैं तेरी गाइ ॥ 22 ॥
नामा कहै सुनहु बादिसाह, इहु किछु पतीआ मुझै दिखाइ ॥ 23 ॥
इस पतीआ का इहै परवानु, साचि सीलि चालहु सुलितान ॥ 24 ॥
नामदेउ सभ रहिआ समाइ, मिलि हिंदू सभ नामे पहि जाहि ॥ 25 ॥
जउ अब की बार न जीवै गाइ, त नामदेव का पतीआ जाइ ॥ 26 ॥
नामे की कीरति रही संसारि, भगति जनां ले उधरिआ पारि ॥ 27 ॥
सगल कलेस निंदक भइआ खेदु, नामे नाराइन नाहीं भेदु ॥ 28 ॥

157.

सति सति सति सति सति गुरदेव।
झूठु झूठु झूठु झूठु आन सभ सेव ॥ टेक ॥
जऊ गुरदेउ त मिलै मुरारि, जऊ गुरदेउ त उतरै पारि।
जऊ गुरदेउ त बैकुंठ तरै, जऊ गुरदेउ त जीवत मरै ॥ 1 ॥
जऊ गुरदेउ त नामु द्रिडावै, जऊ गुरदेउ न दहदिस धावै।
जऊ गुरदेउ पंच ते दूरि, जऊ गुरदेउ न मरिबो झूरि ॥ 2 ॥
जऊ गुरदेउ त अंम्रित बानी, जऊ गुरदेउ त अकथ कहानी।
जऊ गुरदेउ त अंम्रित देह, जऊ गुरदेउ नामु जपि लेहि ॥ 3 ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जऊ गुरदेउ भवन त्रै सूझै, जऊ गुरदेउ ऊच पद बूझै।
जऊ गुरदेउ त सीसु अकासि, जऊ गुरदेउ सदा साबासि॥ 4॥
जऊ गुरदेउ सदा बैरागी, जऊ गुरदेउ पर निंदा तिआगी।
जऊ गुरदेउ बुरा भला एक, जऊ गुरदेउ लिलाटहि लेख॥ 5॥
जऊ गुरदेउ कंधु नही हिरै, जउ गुरदेउ देहुरा फिरै।
जऊ गुरदेउ त छापरि दई, जऊ गुरदेउ सिहज निकसाई॥ 6॥
जऊ गुरदेउ त अठसठि नाइआ, जऊ गुरदेउ तनि चक्र लगाइआ।
जऊ गुरदेउ त दुआदस सेवा, जऊ गुरदेउ सबै बिखु मेवा॥ 7॥
जऊ गुरदेउ त संसा टूटै, जऊ गुरदेउ त जम ते छूटै।
जऊ गुरदेउ त भउजल तरै, जऊ गुरदेउ त जनमि न मरै॥ 8॥
जऊ गुरदेउ अठदस बिऊहार, जऊं गुरदेउ अठारह भार।
बिन गुरदेउ अवर नहीं जाई, नामदेउ गुर की सरणाई॥ 9॥

158.

रंगीले जिहबा हरि कै नाइ।
सुरंग रंगीले हरि हरि धिआइ॥ टेक॥
रे जिहबा करउ सत खंड, जामि न उचरसि स्री[1] गोबिंद॥ 1॥
मिथिआ जिहबा अवरें काम, निरवाण पदु इकु हरि को नामु॥ 2॥
असंख कोटि अनपूजा करी, एक न पूजसि नामै हरी॥ 3॥
प्रणवै नामदेउ इहु करणा, अनंत रूप तेरे नाराइणा॥ 4॥

॥ राग कानड़ौ[1] ॥

159.

तूं मेरौ ठाकुर तूं मेरौ राजा, हौं तेरै सरनैं आयौ हो।
जस तुम्हारौ गावत गोब्यंद, इन लोगनि मारि उठायौ रे॥ टेक॥
आलम दुनी आवत मैं देखी, साइर पांडे कोपिला हो।
सुद्र सुद्र करि मारि[2] उठायौ, कहा करौं मेरे बाबुला[3] हो॥ 1॥

158. पाठा०— 1. श्री।
159. पाठा०— 1. कन्हेडा, कानडो, 2. मोहि, 3. बाबला,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राण गये जे मुकति होत है, सो सौ मुकतिन जांणैं कोई हो।
ए बाम्हण मोहि सुद्र कहत हैं, तेरी पैज[4] पिछौंडी होई हो ॥ 2 ॥
भई चहूं दिसि आचिरज भारी, अदबुद बात अपारा हो।
दास नांमां कौ भयौ दुवारौ, पंड़ित कौं पिछवारा हो ॥ 3 ॥

160.

द्रुबल गरीबा[1] रांम कौ।
हरि कौ दास मैं जन सेवग तेरा ॥ टेक ॥
आचार ब्यौहार जाप नहीं पूजा, अैसौ भगत आयौ सरनिला ॥ 1 ॥
नांमां भणै मैं सेवग तेरा[2], जनमि जनमि हरि तो संगिला[3] ॥ 2 ॥

161.

तुम्हारी क्रिपा[1] बिना न पाईये।
हो कांन्हा[2] न पांईये ॥ टेक ॥
भाव कलपतर भगति लता फल, सो फल रसाल कै देस देव[3] ॥ 1 ॥
नामौं भणैं केसवे तूं देसंतर लाहा, येणौं उपायैं तुझ भणीं जै ॥ 2 ॥

162.

तिहि गावै दास नांमां।
संत जननि के पुरवै कांमां ॥ टेक ॥
असपति नांमदेव तमकि बुलाया, बेगि पलंगले[1] आव रे।
सवरि सपेदी लैगी देवा[2], दरहालैं ले आव रे ॥ 1 ॥
अंबरीष प्रहिलाद प्रीछत[3], जस गावैं प्रभु तेरा।
सुंदर स्वामि कवल दल लोचन, प्रांन जीवन धन मेरा ॥ 2 ॥
अपने जन कौं दीन रदांना, दोऊ सनकाज नावै।
भगत जनन कौं जयौ दमोदर, पुनरपि जनमि न आवै ॥ 3 ॥
त्रिभुवन धनी सकल, अपूरन जसि भरि नांमदेव गावै।
सूकी सेज जलहि थैं निकसी, ले दीवानि पहुचावै ॥ 4 ॥

---

4. पैजि।

160. पाठा०— 1. दुरबल गरीब (1021), गरीबो (वा०), 2. दास तूमारा, 3. हरि तो गिला, हरि उरगिला (1021, वा०)।

161. पाठा०— 1. कृपा (घुमान, पूना), 2. राम, 3. वैसी देवा।

162. पाठा० - 1. पिलंग, 2. सब रस पेदी गलै गिंदवा (वा०), 3. परिछत (वा०)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

163.

ऐसो रांम राइ अंतरजामी।
जैसे दरपन माहि बदन पखानी ॥ टेक ॥
बसै घटा घट लीप न छीपै, बंधन मुकता जातु न दीसै ॥ 1 ॥
पानी माहि देखु मुखु जैसा, नामे को सुआमी बीठलु ऐसा ॥ 2 ॥

॥ राग मारू ॥

164.

राजा राम जपत को को न तरिओ।
गुर उपदेसि साध की संगति भगतु भगतु ताको नामु परिओ ॥ टेक ॥
चार मुकति चारै सिधि मिलि कै, दूलह प्रभु की सरनि परिओ।
मुकति भइओ चउहूं जुग जानिओ, जसु कीरति माथै छत्रु धरिओ ॥ 1 ॥
संख चक्र माला तिनकु बिराजित, देखि प्रतापु जमु डरिओ।
निरभउ भए राम बल गरजित जनम मरन संताप हिरिओ ॥ 2 ॥
अंबरीक कउ दीओ अभै पदु राजु भभीखन अधिक करिओ।
नउ निधि ठाकुरि दई सुदामै, ध्रूअ अटलु अजहू न टरिओ ॥ 3 ॥
भगति हेति मारिओ हरनाखसु, नरसिंघ[1] रूप होइ देह धरिओ।
नामा कहै भगति बसि केसव, अजहूं बलि के दुआर खरो ॥ 8 ॥

॥ राग मारू खमाइची ॥

165.

धनि दिहाड़ौ धनि घड़ी ए।
साधौ भाई गोब्यंद जी घरि आव्या ए॥ टेक ॥
चंदनि चौक पुरावि[1] ज्यौ ए, साधौ भाई पांच सखी मिलि र बधावा ए॥ 1 ॥
गगन मंडल म्हारौ बैसणौं ए, साधौ भाई बाजै अनहद तूरौ ए॥ 2 ॥
हरि जी आव्या म्हारै पांहुणां रे, साधौ भाई आज बधावौ पूरौ ए॥ 3 ॥
आंबरि लागी बादली ए, साधौ भाई झिरि मिरि बरिषै[2] मेहो ए॥ 4 ॥
गरीब नांमदेव हरि भज्या ए, साधौ भाई लोग हसेबा दीज्यौ ए॥ 5 ॥

---

164. पाठा०— 1. नरसिंह।
165. पाठा०— 1. पूराई, 2. बरसै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ राग प्रजिपौ ॥

166.

लागी जनम जनम नीं प्रीति।
चित नहीं बीसरौं[1] रे॥ टेक॥
जेन्है मुखड़ौ दीठै सुख थाइ, तेन्हैं कोई जाइ कहौ रे।
जासूं मन बांधी प्रीति अपार, अपर छन थई रह्यौ रे॥ 1॥
भर्‍यौ सरोवर लहर्‍यां जाइ, धायौ[2] नहीं पपीहड़ौ रे।
तेन्हैं घण बिन तृपति न थाइ, जोवौ तेन्हौं नेहड़ौ रे॥ 2॥
दोइ लख चंदल दूरि, कमोदनि बीगसै[3] रे।
जन नांमदेव नौं स्वांमीं, दयाल ते बेदना[4] लहै रे॥ 3॥

॥ राग कल्याण ॥

167.

नाचि रे मन राम कै आगैं।
ग्यांन बिचारि जोग बैरागैं॥ टेक॥
नाचै ब्रह्मा नचै यंद[1], सहंस कला नाचै रवि चंद॥ 1॥
रांम कै आगैं संकर नाचै, काल बिकाल अकालहि बाचै॥ 2॥
नारद नाचै द्वै[2] करि जोड़ि, सुर नाचैं तेतीसूं कोड़ि[3]।
भणत नांमदेव मनहि नचांऊं, मन के नचायैं परम पद पांऊं॥ 3॥

॥ राग केदारौ ॥

168.

माधौ कैसैं कीजै जोग।
करत जोग बहुत कठिनाई, तजि न सकौं या भोग॥ टेक॥

---

166. पाठा०— 1. बिसनू, 2. धापै (बसना, 16), 3. बिगसै (पटि०, सभा, पंढर), 4. बेदन (1021), वेदनी (पूना)।
167. पाठा०— 1. इंद, 2. दोइ, 3. कोटि (1059) तेतीसौं (पटि०)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं मेरै रहणी नही मेरै करणीं, बंध्यौ पंच बसि पोष।
नही मेरै ज्ञांन नहीं मेरे ध्यांनं, ब्यापै हरिष र सोक॥ 1॥
मैं अनाथ सुकृत हींनौं, तुम्ह थैं पर्यौ बिजोग।
भणत नांमदेव, हरि श्रणि[1] राखियौ, नहीं तौ हसि है लोग॥ 2॥

॥ राग मालीगोड़ा ॥

169.

हमारै गोपाल राजा गोपाल राजा।
और देव सौं[1] नाहीं[2] काजा॥ टेक॥
काहू कै लछिमी कोटि भंडारा, मेरे रांम कौ नांव अधारा॥ 1॥
काहू कै ह्वैगा पाइक हाथी, मेरे रांम नांम संगाती[3]॥ 2॥
श्रब[4] लोक जाका जस गाजा, नांमां का चित हरि सौं[5] लागा॥ 3॥

170.

जपि रांम महा मंत्र रांम महा।
रांम रमे रमि रांम महा[1]॥ टेक॥
महादेव उपदेसी गौरी, रांम नांम मंत्र लेस नि बौरी[2]॥ 1॥
जिहि मंत्र नारद धुवहि पढावा[3], सत संगति मिलि दासनि गावा[4]॥ 2॥
आदि गुरू रघुनाथ उधरणां, रावण कुंभकरण बसि करणां॥ 3॥
नांमौं भणैं रांम नांम पवित्र, रांम बिना नही मुक्ति दाता[5]॥ 4॥

171.

गुड़ मीठा रांम गुड़ मीठा।
जिनि लह्या[1] तिनि गुण[2] दीठा॥ टेक॥

---

168. पाठा०— 1. सरणि।
169. पाठा०— 1. सूं, 2. नाहिन, 3. संघाती, 4. सरब, 5. सूं।
170. पाठा०— 1. जपि राम नाम महा मंत्र, राम बिना नही मुकति अनंत्र, 2. राम नाम जपि रसनां बौरी, राम नाम जपु ले तू बौरी, 3. कू सिखावा, जो पद नारद ध्रू कूं सिखावा, 4. सुरनि सुमृति संतनि सुख पावा, 5. जन नांमदेव रांम नांम जपैला, चौरासी विष ऊतरि जैला, नामा भणई राम नाम पवित्रा, राम बीना नहीं मुगती अनंता (पंढर)।
171. पाठा०— 1. लाधा (घुमान), लाहा (992, 1059, 951, पंढर०), 2. गुन, पुन (पंढर),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैंननि पाया श्रवननि खाया, तृपति भई त्रिश्ना मधि[3] माया ॥ 1 ॥
पंच ऊख हनि[4] ज्ञांन गंडासी, कोल्हू ध्यांन धरौ तिहि पासी ॥ 2 ॥
पट कूंडी जब होइ निदोषी, सहज अनल गुड़ सोना होसी ॥ 3 ॥
गरवा सो गरवाई साजा, सो गुर[5] हुवा तिहूं पुरि राजा ॥ 4 ॥
नांमदेव प्रणवै कस न मिठाई, जहां जतन सुमिरण आई[6] ॥ 5 ॥

172.

रांम गोब्यंदा कमौदनी चंदा।
छिन छिन पान करै मकरंदा ॥ टेक ॥
जैसैं कमल मैं कुसमलताई[1], मधि[2] गोपाल परसि फिरि आई ॥ 1 ॥
अष्ट कमल[3] दल नांमदेव गावै[4], चरन कवल[5] काहे न पावै[6] ॥ 2 ॥

173.

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै।
राम बिना को बोलै रे ॥ टेक ॥
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे।
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥ 1 ॥
एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे।
प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकरु को दासा रे ॥ 2 ॥

174.

धनि धनि ओ राम बेनु बाजै।
मधुर मधुर धुनि अनहत गाजै ॥ टेक ॥
धनि धनि मेघा रोमावली, धनि धनि क्रिसन ओढै कांबली ॥ 1 ॥
धनि धनि तू माता देवकी, जिह ग्रिह रमईआ कवलापती ॥ 2 ॥
धनि धनि बन खंड बिंद्राबना, जह खेलै स्त्री[1] नाराइना ॥ 3 ॥
बेनु बजावै गोधनु चरै, नामे का सुआमी आनंद[2] करै ॥ 4 ॥

---

3. मद (घुमान, मठी (पंढर), 4. खहनी, द्रुम (पूना), 5. गुड, 6. सुमिरन बन आई।
172. पाठा०— 1. कुसमल ठाई (पंढर०), 2. मैं (पंढर०), 3. कंवल, 4. गाई (पंढर०), 5. चरन कंवल रज, 6. पावई (पंढर)।
174. पाठा०— 1. श्री नारायना, 2. आनंदु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

175.

मेरो बापु माधउ तू धनु केसौ[1] सावली ओ बीठुलाइ ॥ टेक ॥[2]
कर धरे चक्र बैकुंठ ते आए गज हस्ती के प्रान उधारीअले।
दुहसासन की सभा द्रोपती अंबर लेत उबारीअले ॥ 1 ॥
गौतम नारि अहलिआ तारीया जन केतक तारीअले।
ऐसा अधमु अजाति नामदेउ तउ सरनागति आईअले ॥ 2 ॥[3]

॥ राग सारंग ॥

176.

बदहु कीन होड माधउ मो सिउ।
ठाकुर ते जनु जन ते ठाकरु खेलु परिओ है तो सिउ ॥ टेक ॥
आपन देउ देहुरा आपन आप लगावै पूजा।
जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा ॥ 1 ॥
आपहि गावै आपहि नाचै आप बजावै तूरा।
कहत नामदेउ तूं मेरो ठाकुर जनु ऊरा तू पूरा ॥ 2 ॥

177.

दास अनिंन मेरो निज रूप।
दरसन निमख ताप त्रई मोचन परसत मुकति करत ग्रिह कूप ॥ टेक ॥
मेरी बांधी भगतु छडावै बांधै भगतु न छूटै मोहि।
एक समै मोकउ गहि बांधै तउ फुनि मोपै जबाबु न होइ ॥
मैं गुन बंध सगल की जीवनि, मेरी जीवनि मेरे दास।
नांमदेव जाके जीअ ऐसी, तैसो ताकै प्रेम प्रगास ॥ 2 ॥

---

175. पाठा०— ह० 1059 1. बाप मंझा तू धनि कैसो, 2. टेक का दूसरा चरण है—जब थै क्रिपा भई सतगुरु की, रिदया भीतरि दीठूला।
3. इसका दूसरा चरण है—
ऐक नांव थैं बीप्र अजामेल, दासी सूत पांवन करि लै।
ध्रू प्रहिलाद प्रतग्या पाली, जन जगदीस लधारी लै ॥ 2 ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

178.

भइया कोई तूलै रे रांम नांम।
जोग जगि[1] तप होम नेम ब्रत, ए सब कोनैं कांम॥ टेक॥
एक पलै सब बेद पुरांनां, एक पलै अरध नांमां।
तीरथ सकल अहंडै[2] दीन्हें, तऊ न होत समांनां॥ 1॥
भणत नांमदेव अंतरजांमीं, संतौ लेहु[3] बिचारी।
रांम नांम समि कोई न तूलै, तारण तिरण मुरारी[4]॥ 2॥

॥ राग मल्हार॥

179.

मो कउ तूं न बिसारि तू न बिसारि।
तू न बिसारे रामईआ॥ टेक॥
आलावंती इहु भ्रमु जो है, मुझ ऊपर सभ कोपिला।
सूदु सूदु करि मारि उठाइओ, कहा करउ बाप बीठुला॥ 1॥
मूए हुए जउ मुकति देहुगे, मुकति न जानै कोइला।
ए पंडीआ मो कउ ढेढ कहत तेरी पैज पिछंउडी होइला॥ 2॥
तू जु दइआलु क्रिपालु कहीअतु हैं अति भुज भइओ अपारला।
फेरि दीआ देहुरा नामे कउ पंडीअन कउ पिछवारला॥ 3॥

180.

गोब्यंद राखहु[1] चरननि[2] तीर।
जैसे तरवर पात परै झरि, बिनसै सकल सरीर॥ टेक॥
जब तृया[3] उद्र[4] कीया प्रतिपाला, ग्रंभ संकट दुख भीर।
ना रहै यहु बिनसि जावै, चलत मिटै नही पीर॥ 1॥

---

178. पाठा०— 1. जग्य, जज्ञ (सभा), जग (पटि०), 2. कै, 3. लेउ (पटि०, सभा), 4. तारणा तिरणा मुरारी (सभा)।
टि० —पूना और सर्वंगी (सरबंगी) में ये पंक्तियाँ और हैं—
नाद न बिंद रूप नहीं रेखां ताकौ धरिये ध्यांन।
तीनि लोक जाकै उद्र समाना, सिभूं पद नृब्रान॥ 2॥
180. पाठा०— 1. राखउ (घुमान, पूना), राखौ (सभा), 2. चरणन (सभा, पूना), 3. त्रिया, 4. उदर कीया (सभा),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसै भवंगम[5] पंख बिहूंनौ, नलनी जलै[6] बिन नीरा।
नांमदेव जन जंम की त्रास थैं, प्रांण धरै[7] नहीं धीरा॥ 2॥

॥ राग धनाश्री ॥

181.

कपटै नही मिलै रे, गोब्यंदौ गुण साग्र[1] गोपाल।
गोपी चंदन तिलक बनांवै, कंठिहु लावै माल॥ टेक॥
मन प्रतीति नहीं रे प्रांनी, औरन कौं संमझाइ।
लोकनि कौं बैकुंठ[2] बतावै, आपुन जमपुरि जाइ॥ 1॥
अनजांणत विष खाइये रे[3], अंधे अंधा हाथि।
देखत हीं कूवै पड़े रे, अंधौ अंधा साथि[4]॥ 2॥
जोग जगि जप तप तीरथ ब्रत[5], मन राखै इन पास[6]।
दांन पुनि धमृ दया दीनता[7], हरि की भगति उदास॥ 3॥
भजि भगवंत भगति भजि प्रांणी, छाडि अंनेरी आस।
बंरणां बरणी सुभ भजि करि, कौंण भया निज दास॥ 4॥
कोमल बिमल संत जन सूरा, करैं तुम्हारी आस।
तिन परि कृपा करौ तुम्ह केसो, प्रणवै नांमदेव दास॥ 5॥

182.

हो बाल[1] सनेही गोब्यंदा, अब जिनि छाडौं मोहि।
मैं तौसौं चित लाईया[2], मेरे और[3] न दूजा कोइ॥ टेक॥
तूं नृगुन[4] हौं गुन भरी, येकै[5] मंदिर बास।
येकै[6] पालिकै पौढते, अब क्यूं[7] भये उदास॥ 1॥
बड़ी सौकि[8] मेरी मरि गई, भयौ निकंटौ राज[9]।
अब हूं पीय की लाडिली, कबहूं न होइ अकाज[10]॥ 2॥

---

5. भुयंगम (सभा, पूना, पटि०), 6. जरै (1021, 1059), 7. धरत (घुमान, पूना)।
181. पाठा०— 1. सागर, 2. लोगनि कौं बैकूंठ, 3. जांणि बूझि विष खाया प्रांणी, 4. दीपग लीयें हाथि, 5. संसारी, 6. मन बाध्यो अहि पासी (सरबंगी), प्रनि पास सभा, (1021, बसना 16), 7. धरम नेम अर दया दीनता, हरि जी की भगति उदासो।
182. पाठा०— 1. बाल (सभा), म्हारौ बाल सनेही (पूना०), 2. लाइयौ (सभा), 3. म्हारै अवर (पूना), 4. निरगुण, निर्गुण (सभा, पूना), 5. एकहि, 6. एक (सभा), 7. क्यों (सभा, पूना), 8. सौति (सभा, पूना), 9. राजौ, 10. अकाजौ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेठ निमांनौं प्रहर्‌यौ[11], छांड़ि सुसर कौ हेत।
पुरिष पुरातन ब्याहियौ, कबहूं न होइ कुहेत ॥ 3 ॥
सासरड़ो प्रहर्‌यौ[12], पीहर लीयौ न्हालि[13]।
नांमदेव कौ साहिब मिल्यौ, भागी कुल की गालि[14] ॥ 4 ॥

183.

हमारै करता रांम सनेही।
काहे रे नर ग्रब[1] करत हौ, बिनसि जाइगी देही[2] ॥ टेक ॥
ऊंडी खणि खणि नींव दिवाई[3], ऊंचे मंदिर छाये[4]।
मारकंडे थैं कौंन बडौ है, तिण दे दिवस बुलाये[5] ॥ 1 ॥
मेरी मेरी कैरौं[6] करते, जरजोधन[7] से भाई।
बारह जोजन छत्र चलत सिरि, देही गीधनि खाई ॥ 2 ॥
श्रब सोवनीं[8] लंका होती, रांवण से अहंकारी[9]।
छाडि गये दरि बांधे हाथी, छिन मैं भये भिखारी[10] ॥ 3 ॥
दुरवासा सौं करी ठगौरी, जादौं सबै खपाये।
ग्रब प्रहारी है प्रभू मेरौ, नांमदेव हरि गुण गाये[11] ॥ 4 ॥

184.

तेरा नामु रुड़ो रूपु रुड़ो।
अति रंग सड़ो मेरो रामईआ ॥ टेक ॥
मारवाडि जैसे नीरु बालहा, बेलि बालहा करहला।
जिउ कुरंक निसि नादु बालहा, तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ 1 ॥
जिउ धरणी कउ इंद्रु बालहा, कुसम बासु जैसे भवरला।
जिउ कोकिल कउ अंबु बालहा, तिउ मेरे मनि रामईआ ॥ 2 ॥

---

11. परिहर्‌यौ, 12. परिहर्‌यौ, 13. न्हाल (1021), 14. गाल, म्हारी कुल उतारी गालि।

183. पाठा०— 1. गरबु, 2. झूठी देही, 3. गहरी करि कै नींव खुदाइ, 4. ऊंचे मंदिर छाये, 5. मारकंडे ते को अधिकाई जिनि त्रिण-धरि मूंड बलाए (गु०ग्रं०सा०), तिम सिरि द्यौस बलायै (पटि०, सभा, घुमान), तिण दे द्यौंस सब लाये (बसना, 16), 6. कैरउ, कौरव (1059), 7. दुरजोधन, 8. सरब सोइन, (गु०ग्रं०सा०), सरब सोने (पंढर), 9. अधिकाई, 10. कहा भइओ दरि बांधे हाथी खिन महि, 11. जन नामदेव आनंद गाई, कृपा करी जन अपने ऊपर, नामदेव हरि गुन गाये (पंढर, पूना), जस (पटि०, घुमान)।

टि० —घुमान में 6वीं पंक्ति के बाद दो अतिरिक्त पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—
बीस भुजा दस मस्तक होते अखर खर आज्ञाकारी।
सोई मार कियो धरती सम रावण सो अहंकारी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चकवी कउ जैसे सूरु बालहा, मानसरोवर हंसुला।
जिउ तरणी कउ कंतु बालहा, तिउ मेरे मनि रामईआ॥ 3॥
बारिक कउ जैसे खीरु बालहा, चात्रिक मुख जैसे जलधरा।
मछुली कउ जैसे नीरु बालहा, तिउ मेरै मनि रामईआ॥ 4॥
साधिक सिध सगल मुनि चाहहि, बिरले काहू डीठुला।
सगल भवण तेरी नामु बालहा, तिउ नामे मनि बीठुला॥ 5॥

185.

पहिल पुरसाबिरा, अथोन पुरसादमरा।
असगा अस उसगा, हरि का बागरा नाचै पिंधी महि सागरा॥ टेक॥
पहिल पुरीए पुंडरक बना, ताचे हंसा सगले जनां।
तृस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना॥ 1॥
नाचंती गोपी जनां, नईआ ते बैरे कंना, तरकु न चा।
भ्रमीआ चा, केसवा बचउनी अईए मईए एक आन जीउ॥ 2॥
पिंधी उभ कले संसारा, भ्रमि भ्रमि आए तुमचे दुआरा।
तू कुनु रे, मैं जी, नामा, हो जी, आला ते निवारणा जम कारणा॥ 3॥

---

185. पाठा०— दादू द्वारा की पांडुलिपि 'क' में यह छन्द पाठान्तर और भाषान्तर के साथ इस प्रकार दिया हुआ है—

॥ राग रामकली॥

अगय हल पुरसा गोरा।
अपोत पुरसा झोरा॥ टेक॥
(अचंभा देख्या पुरुष उजल अथ तिस पुरस की डोरी।)
हरता बाघ रा नाचै, पंथी मैं सागर जी।
(मारया काल प्रांण प्रांण)
पहल ये डुरपुर ए कवला, ताका हंसा सकल जनां।
(ब्रह्म देख्या पिड मैं बलिबंत सेत)
कृष्न के जनां, हरि हरि नाचंती नचनां॥ 1॥
(कृष्न के जना। नांम नाचि नाचना नाचै)
नाचंती गोपी जनां, नईया ते बैराग कान्हां।
(नाचै आत्मा, नौत्म बैराग परमेस्वर का)
तरक नंचा भूमियाचा, केशवे मतया ए मईंए।
(तर क्या नाच ना भ्रम का यम कै करै।)
अईए कल्याण जी जीभ कीले संसारा मैं।
(यूं भूल्या जी कीले संसार ते)
भ्रमि भ्रमि आयौ तुझ सो द्वारा॥ 2॥
तूं कोरे होजी नांमां हांजी आए तुम्ह सरनांगति जी॥ 3॥
(तू कौंण रे हो जी नांम है।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

186.

पाछे बहुरि न आवनु पावउ।
अंम्रित बाणी घट ते उचरउ आतम कउ समझावउ॥ टेक॥
दस बैरागनि मोहि बसि कीन्ही पंचहु का मिट नावउ।
सतरि दोइ भरे अंम्रित सरि बिखु कउ मारि कढावउ॥ 1॥
बजर कुठारु मोहि है छीनां करि मिंनति लगि पावउ।
संतन के हम उलटे सेवक भगतन ते डर पावउ॥ 2॥
इह संसार ते तब ही छूटउ जउ माइआ नह लपटावउ।
माइआ नामु गरभ जोनि का तिह तजि दरसनु पावउ॥ 3॥
इतु कर भगति करहि जो जन तिन भउ सगल चुकाई ऐ।
कहत नामदेउ बाहरि किआ भरमहु इह संजम हरि पाईऐ॥ 4॥

187.

मेरे माथै लागीले धूरि गोबिंद चरनन की।
सुरि नर मुनि जन तिनहू ते दूरि॥ टेक॥
पतित पावन माधउ[1] बिरदु तेरा।
धंनि ते वै मुनि जन जिन धिआइओ हरि प्रभु मेरा॥ 1॥
दीन का दइआलु माधौ गरब परहारी।
चरन सरन नामा बलि तिहारी॥ 2॥

॥ आरती॥

॥ राग धनाश्री॥

188.

कहा ले आरती दास करै।
तीनि लोक जाकी जोति फिरै॥ टेक॥
सात समंद जाकै चरन निवासा, कहा भयौ जल कुंभ भरै॥ 1॥
कोटि भांण जाकै नख की सोभा, कहा भयौ कर दीप फिरै॥ 2॥
अनंत कोटि जाकै बाजे बाजैं, कहा घंटा झणकार करै॥ 3॥

187. पाठा०— 1. माधऊ (पंढर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अठारह भार जाके बन माला, कहा भयौ कर पुहप धरै ॥ 4 ॥
चौरासी लख ब्यापक रांमां, केवल हरि जस गावै नांमां ॥ 5 ॥*

189.

आरती पतिदेव मुरारी।
चवर ढुलैं बलि जांउं तुम्हारी ॥ टेक ॥
चहु जुग आरती चहु जुगि पूजा, चहु जुगि रांम अवर नहीं दूजा ॥ 1 ॥
आरती कीजै अैसैं तैसैं, ध्रू प्रहिलाद करी सुख जैसैं[1] ॥ 2 ॥
आनंद आरती आतम पूजा, नामदेव भणैं मैरै देव न दूजा ॥ 3 ॥

॥ राग प्रभाती ॥

190.

बेधीअले गुपाल गोंसाई।
मेरा प्रभु रबिआ सरबे ठाई ॥ टेक ॥
मन की बिरथा मनु ही जानै कै बूझल आगै कही ऐ।
अंतरजामी रामु रबांई मैं डरु कैसे चहीऐ ॥ 1 ॥
मानै हाटु मानै पाटु मानै है पासारी।
मानै बासै नाना भेदी भरमतु है संसारी ॥ 2 ॥
गुर के सबदि एहु मन राता दुबिधा सहज समाणी।
सभो हुकमु हुकमु है आपे निरभउ समतु बीचारी ॥ 3 ॥
जो जन जानि भजहि पुरखोतमु ताची अबिगतु बाणी।
नामा कहै जग जीवनु पाइआ हिरदै अलख बिडाणी ॥ 4 ॥

---

188. टि० — * अधिकांश हस्तलेखों में यही पाठ मिलता है। एक मुद्रित पाठ में निम्न पंक्तियाँ और जुड़ी हुई हैं—
छप्पन भोग जाके नित प्रति लागें कहा भयो वैवेद्य धरे हो राम ॥
चार वेद जाके मुख की शोभा कहा भयो ब्रह्मा वेद पढ़े हो राम ॥
शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक नारद मुनि जाको ध्यांन धरे हो राम ॥
हिम मंदार जाको पवन झकोरैं कहा भयो सिर चँवर दुरे हो राम ॥
लख चौरासी बन्द छुड़ाये केवल हरि यश नामदेव गाये हो राम ॥

189. पाठा०— 1. चहुं दिसि देखै चहुं दिस धावै, चहुं दिस राम तहां मन लावै।
अरधै राम अरधै मधि रामा, पूरण सेइ सरै सब कामा ॥
(ना० का हि० सा०, वान, सभा, पंढर, पूना)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

191.

गोबिंदु गाजै सबदु बाजै।
आनन्द रूपी मेरो रामईया॥ टेक॥
आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु ताका अंतु न जानिआ।
सरब निरंतरि रामु रहिआ रवि ऐसा रूपु बखानिआ॥ 1॥
बावन बीखू बानै बीखे बासु ते सुख लागिला।
सरबे आदि परमलादि कासट चंदनु भैइला॥ 2॥
तुम्ह चे पारसु हम चे लोहा संगे कंचनु भैइला।
तू दइआलु रतनु लालु नामा साचि समाइला॥ 3॥

192.

जीअ की जोति न जानै कोई।
तै मै कीआ सु मालूमु होई॥ टेक॥
अकुल पुरख इकु चलित उपाइआ, घटि घटि अंतरि ब्रहमु लुकाइया॥ 1॥
जिअ प्रगासिआ माटी कुंभेउ, आप ही करता बीठुलु देउ॥ 2॥
जीअ का बंधनु करमु बिआपै, जो किछु कीआ सु आपै आपै॥ 3॥
प्रणवति नामदेउ इहु जीअ चितवै सु लहै, अमरु होइ सद आकुल रहै॥ 4॥

॥ राग आसा ॥

193.

सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है, गोबिन्द बिनु नहीं कोई।
सूतु एकु मणि सत सहंस, जैसे ओति पोति प्रभु सोई॥ टेक॥
एक अनेक बिआपक पूरन जत देखउ तत सोई।
माइआ चित्र बचित्र बिमोहित बिरला बुझत कोई॥ 1॥
जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिंन न होई।
इहु परपंचु पारब्रह्म की लीला बिचरत आन न होई॥ 2॥
मिथिआ भरमु अरु सुपन मनोरथ सति पदारथु जानिआ।
सुक्रित मनसा गुर उपदेसी जागत ही मनु मानिआ॥ 3॥
कहत नामदेउ हरि की रचना देखहु रिदै बीचारी।
घट घट अंतरि सरब निरंतरि केवल एक मुरारी॥ 4॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

194.

झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना।
कैसे मन तरहिगा रे संसार सागरु बिखै को बना॥ टेक॥
पार ब्रह्मु जि चीन्हसी आसा ते न भावसी।
रामा भगतह चेतीअले अचिंत मन राखसी॥ 1॥
छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला।
संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला॥ 2॥

॥ राग रामकली ॥

195.

रांम कोइ न किस ही केरा।
जैसे तरवर पंखि बसेरा॥ टेक॥
माइ न होती बापु न होता करमु न होती काइआ।
हम नहीं होते तुम नहीं होते कवनु कहां ते आइआ॥ 1॥
चंदु न होता सूरु न होता पानी पवनु मिलाइआ।
सासतु न होता बेदु न होता करमु कहां ते आइआ॥ 2॥
खेचर भूचर तुलसी माला गुर परसादी पाइआ।
नामा प्रणवै परम ततु है सतिगुर होइ लखाइआ॥ 3॥

॥ राग गूजरी ॥

196.

तूं हरि भजु मन मेरे पद निरबानु।
बहुरि न होइ तेरा आवन जानु॥ टेक॥
जौ राजु देहि त कवन बढ़ाई, जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई॥ 1॥
सभ तै उपाई भरम भुलाई, जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई॥ 2॥
सतगुरु मिलै त सहसा जाई, किसु हउ पूजउ[1] दूजा नदरि न आई॥ 3॥

---

196. पाठा०— 1. हऊ पूजउ (पंढर०, गु०ग्रं०सा०)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकै पाथर कीजै भाउ, दूजै पाथर धरी ऐ पाऊ।
जे ओहु देउ त ओहु भी देवा, कहि नामदेउ हम हरि की सेवा॥ 4॥

197.

कउणु कहै किणि बूझी ए।
रमईआ आकुलु री बाई॥ टेक॥
मलै न लाछै पारमलो परमलीओ बैठो री आई।
आवत किनै न पेखिओ कवनै जाणै री बाई॥ 1॥
जिउ आकासै पंखीअलो खोज निरखिओ न जाई।
जिउ जल माझै माछलो मारगु पेखणो[1] न जाई॥ 2॥
जिउ आकासै घड़अलो म्रिग त्रिसना[2] भरिआ।
नामे चे सुआमी बीठलो, जिनि तीनै जरिआ॥ 3॥

॥ राग तिलंग॥

198.

मैं अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा।
मैं गरीब मैं मसकीन तेरा नामु है अधारा॥ टेक॥
करीमां रहीमां अलाह तू गनीं।
हाजरा हजूरि दरि पेसि तू मनीं॥ 1॥
दरीआउ तू दिहंद[1] तू बिसीआर।
तू धनी देहि लेहि एक तूं दिगर को नहीं॥ 2॥
तूं दाना तूं बीनां मैं बीचारु किआ करी।
नामे चे सुआमी बखसंद तू हरी॥ 3॥

---

197. पाठा०— 1. पेखणौ, 2. तृसना।
198. पाठा०— 1. निहंद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

199.

हले यारां हले यारां खुसिखबरी।
बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जांउ, नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउ॥ टेक॥
कुजा आमद कुजा रफती कुजा मेरवी, द्वारिका नगरी रासि बुगोई॥ 1॥
खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल, द्वारिका नगरी काहे के मगोल॥ 2॥
चंदी हजार आलम एकल खानां, हम चिनी पातिसाह सांबले बरनां॥ 3॥
असपति गजपति नरह नरिंद, नामे के स्वामी मीर मुकंद॥ 4॥

॥ राग बिलावल॥

200.

राम नाम बिनु जीवनु मन हीना।
गिआन अंजन मो कउ गुरि दीना॥ टेक॥
सफल जनमु मो कउ गुर कीना।
दुख बिसारि सुख अंतरि लीना॥ 1॥
नामदेउ सिमरनु करि जानां।
जगजीवन सिउ[1] जीउ[2] समानां॥ 2॥

॥ राग गोंड॥

201.

ऐसे रामा ऐसे हेरउ।
राम छोडि चितु अनत न फेरउ॥ टेक॥
नाद भ्रमे जैसे मिरगाए, प्रान तजे वाको धिआनु न जाए॥ 1॥
जिउ मीना हेरै पसूआरा, सोना गढते हिरै सुनारा॥ 2॥
जिउ बिखई हेरै परनारी, कउडा डारत हिरै जुआरी॥ 3॥
जह जह देखउ तह तह रामा, हरि के चरन नित धिआवै नामा॥ 4॥

200. पाठा०— 1. सिऊ, 2. जीऊ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

202.

मोकउ तारि ले रामा तारि ले।
मैं अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला बाह दे॥ टेक॥
नर ते सुर होइ जात निमख मैं सतिगुर बुधि सिखलाई।
नर ते उपजि सुरग कउ जीतिओ[1] सो अवखध मैं पाई॥ 1॥
जहा जहा धूअ नारदु टेके नैकु टिकावहु मोहि।
तेरे नाम अविलंबि बहुतु जन उधरे नामे की निज मति एह॥ 2॥

203.

हरए नमसते हरए नमह।
हरि हरि करत नही दुखु जमह॥ टेक॥
हरि हरि करत मिटे सभि भरमा, हरि को नामु लै उत्तम धरमा।
हरि हरि करत जाति कुल हरी, सो हरि अंधुले की लाकरी॥ 1॥
हरि हरनाखस हरे परान, अजैमल कीओ बैकुंठहि थान।
सूआ पड़ावत गनिका तरी, सो हरि नैनहु की पूतरी॥ 2॥
हरि हरि करत पूतना तरी, बाल घातनी कपटहि भरी।
सिमरन द्रोपद सुत उधरी, गऊतम सती सिला निसतरी॥ 3॥
केसी कंस मथनु जिनि कीआ, जीअ दानु काली कउ दीआ।
प्रणवै नामा ऐसो हरी, जासु जपत भै अपदा टरी॥ 4॥

204.

हउ तउ एक रमईआ लैहउ।
आन देव बदलावनि दैहउ॥ टेक॥
भैरउ भूत सीतला धावै, खर बाहन उहु छार उडावै॥ 1॥
सिव सिव करते जो नरु धिआवै, बरद चढै डउरू ढमकावै॥ 2॥
महा माई की पूजा करै, नर सै नारि होइ अउतरै॥ 3॥
तू कहीअत हो आदि भवानी, मुकति की बरीआ कहा छपानी॥ 4॥
गुरमति राम नाम गहु मीता, प्रणवै नामा इउ कहै गीता॥ 5॥

---

202. पाठा०— 1. जीतिऊ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ राग बिलावलु गोंड ॥

205.

आजु नामे बीठलु[1] देखिआ।
मूरख को समझाऊ रे ॥ टेक ॥
पांडे तुमरी गाइत्री लोधे का खेतु खाती थी।
लै करि ठेगा टगरी तोरी लांगत लांगत जाती थी ॥ 1 ॥
पांडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवत देखिआ था।
मोदी के घर खाणा पाका वाका लड़का मारिआ था ॥ 2 ॥
पांडे तुमरा रामचंदु सो भी आवतु देखिआ था।
रावन सेती सरबर होई घर की जोइ गवाई थी ॥ 3 ॥
हिंदू अंन्हा तुरकू काणा, दुहां ते गिआनी सिआणा।
हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीत, नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीत ॥ 4 ॥

206.

भाई रे इन नैननि हरि पेखो[1]।
हरि की भक्ति साधु की संगति, सोई यह दिन धनि लेखो ॥ टेक ॥
चरन सोई जो नचत प्रेम से, कर सोई जो करै नित पूजा।
सीस सोई जो नवै साधु के, रसना और न दूजा[2] ॥ 1 ॥
यह संसार हाट कौ लेखा, सब कोई बनिज हिं आया।
जिन जस लादा तिन तस पाया, मूरख मूल गँवाया ॥ 2 ॥
आतम राम देह धरि आयो, तामें हरि को[3] देखो।
कहत नामदेव बलि बलि जैहौं, हरि भजि और न लेखो ॥ 3 ॥

207.

अस मन लाव रांम रसना।
तेरो बहुरी न होय जरा मरना ॥ 1 ॥
जैसे मृगा नाद लव लावै, बान लगे वहि ध्यान लगावै ॥ 2 ॥
जैसे कीट भृंग मन दीन्ह, आप सरीखे या[1] को कीन्ह ॥ 3 ॥
नामदेव भनै दासन दास, अब न तजौ हरि चरन निवास ॥ 4 ॥

---

205. पाठा०— 1. बीठुला।
206. पाठा०— 1. देखो, 2. रसना अवर न दूजा, 3. कूं।
207. पाठा०— 1. वा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ राग रामकली ॥

208.

तत्त कहन को रांम है, भजि लीज्यौ सोई।
लीला सिंध अगाध की, गति लखै न कोई॥
कंचन मेरु सुमेरु, हय गज दीजै दाना।
कोटि गऊ जे दान दे, नाहीं नांव समांनां॥
जोग जग्य तें कहा सरै[1], तीरथ ब्रत दाना[2]।
ओसै प्यास न भागि है, भजिए भगवांनां॥
पूजा करि साधू जनहिं, हरि को प्रनधारी[3]।
उन तैं गोबिंद पाइयै[4], वे परउपकारी॥
एकै मन एकै दसा, एकै ब्रत धरिये[5]।
नांमदेव नांव जिहाज है, भौ सागर तिरिये॥

209.

सावध सावध भज ले राजा, नही आवे ऐसी घड़ी जू॥ टेक॥
उत्तम नर तनु पाया रे भाई, गाफल क्यों हुवा दिवाने जू॥ 1॥
जिन्ने जन्म डारा है तुजकूं, बिसर गया उनका ध्यान जू॥ 2॥
फिर पस्तायेगा दगा पायेगा, निकल जायेगा अवसान जू॥ 3॥
क्या करना सो आज कर ले, फिर नहिं ऐसी जोडी जू॥ 4॥
हंस जायेगा पिंजरा पड़ेगा, तुज कैसी भूल पड़ी जू॥ 5॥
सुन्ने का मंदिर मेहेल बनाया, धन संपत नहिं तेरी जू॥ 6॥
मा बहन और जोरू लडके, सुख के खातर सारे जू॥ 7॥
अकेले आना अकेले जाना, सब झूठी माया पसरी जू॥ 8॥
लख चौरयांसी का फेरा आवेगा, तब चुपी बैठे बंदे जू॥ 9॥
फिरता फिरता जीव दमता है बाबा, कौन रखे तेरे तन कू जू॥ 10॥
जिस माय उदरी जन्म लीयेगा, तेरे संगत दुःख उनकू जू॥ 11॥
गरभी की यातना सुन ले रे भाई, नव मास बंधन डारे जू॥ 12॥
नहीं जगा हलने चलने कु बाबा, छुड़ाने कु कोई नहीं आवे जू॥ 13॥
आग लगी क्या देखत अंधे, काय के खातिर सोया जू॥ 14॥

---

208. पाठा०— 1. करै, 2. तीरथ असनांना, 3. पूजण कूं साधु जणां, हरि के अधिकारी, 4. इन संग गोब्रिंद गाइये, 5. हरि कौ ब्रत धरिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी बात सुन के नामा सावध हुआ, गुरु के पाव मिठी डारी जू॥ 15॥
मैं अनाथ दुबले शरण भये तुज कू, आब जो मेरी लाज राखी जू॥ 16॥

210.

ज्यों कोई वसुधा दान दे आवे, पूर्ण जज्ञ करे करावे।
तीरथ बरथ करे स्नान, नहीं नहीं हरि नाम समान॥ 1॥
ज्यो कोई ज्यावे[1] हीमालय गले, काशी करवत लेकर मरे।
दसवें द्वारे काढे प्राण, नहीं नहीं हरि नाम समान॥ 2॥
काया कष्टवे कलेवर जीवे, ना कुच खावे ना कुछ पीवे।
गगन मंडल मों जोग ध्यान, नहीं नहीं हरि नाम समान॥ 3॥
अगली पिछली बात बनावे, नेम धरम में मन छुपावे।
च्यारो वेद पढे कुरान[2], नहीं नहीं हरिनाम समान॥ 4॥
सदगुरु की जद कृपा भई, प्रेम भगद हरदे घर लाई।
कहै नामदेव भज भगवान, नहीं नहीं हरि नाम समान॥ 5॥

211.

जहां तुम तरुवर तहां मैं पंछी।
जहां तुम सरोवर तहां मैं मच्छी॥ टेक॥
जहां तुम गिरीवर ताहां हम मोरा, जहां तुम चंदा तहां मैं चकोरा॥ 1॥
जहां तुम दीवा तहां मैं बत्ती[1], जहां तुम पंथी तहां मैं साती॥ 2॥
बेल के पाती शंकर पूजा[2], नामदेव कहे भाव नहीं दूजा॥ 3॥

212.

हम तो भूले, ठाकुर जाने, तुम क्यौ भाई[1] झूठ दिवाने॥ 1॥
नाला अप आप सागर हुवा, काहे के कारण रोता है कुवा॥ 2॥
चंदन के साती लिंब हुआ चंदन, क्यों कर रोवे देखो ए हिंगन॥ 3॥
गुरु के मेहेर से नामा भये साधु, देखत रोने लगे, जन है भोंदु॥ 4॥

---

210. पाठा०— 1. च्यावे, 2. पुरान।
211. टि० —इस पद के एक पाठ में ऊपर की दो पंक्तियाँ हैं—
तुम बिनु धरि येक रहूं नहि न्यारा।
सुन यह केसव नियम हमारा॥
पाठा०— 1. ताहां मैं बाती, 2. जहां तुम शिव तहां मैं बेलपूजा।
212. पाठा०— 1. गाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

213.

भले बिराजे लंबकनाथ ॥ टेक ॥
धरणी पाय स्वर्ग लोग माथ, योजन भर के हाथ ॥ 1 ॥
शिव सनकादिक पार न पावे, अनगन सखा बिराजत साथ ॥ 2 ॥
नामदेव के आप ही स्वामी, कीजे मोही[1] सनाथ ॥ 3 ॥

214.

राम विट्ठला देव विट्ठला[1], हम तुमारे सेवक ॥ 1 ॥
बालक बेला माई विट्ठल बाप विट्ठल, जाती पाती गुरु गोत विट्ठल ॥ 2 ॥
ग्यान विट्ठल ध्यान विट्ठल, नामा का स्वामी प्राण विट्ठल ॥ 3 ॥

215.

राम नाम बीन और नहीं दूजा, कृष्ण देव की करी हू पूजा ॥ 1 ॥
राम ही माई राम ही बाप, राम बीना कुण ठाई पाप ॥ 2 ॥
संपती विपती राम ही होई, राम बिना कुण तारी है मोही ॥ 3 ॥
भणत नामा अमृत[1] सार, सुमरी सुमरी उतरे पार ॥ 4 ॥

216.

पारब्रह्म जे चित सी आसा ते न भाव सी, राम भगत चेतियले अचिंत मन रासी ॥ 1 ॥
कैसे मन तरेगा रे संसार सागर बिषै को बना, झूठी माया देख के भुला रे मना ॥ 2 ॥
सिंपी[1] के जन्म देला गुरुपदेश भला, संत के प्रसाद नामा हर से मिला ॥ 3 ॥[2]

217.

पंढरीनाथ विठाई बतावो मुजे पंढरीनाथ विठाई ॥ टेक ॥
माय बाप के सेवा करीये पुंडलीक भक्त सवाई।
बैकुंठ से विष्णु लाये खड़े कर कर बतलाई ॥ 1 ॥
चंद्रभागा बालबंट पर कबिरा धुम चलाई।
साधु संत की हो गई गर्दी भजन कुटाई खुब खाई ॥ 2 ॥

---

213. पाठा०— 1. मोहि।
214. पाठा०— 1. राम विट्ठला, हम तुम्हारे सेवक।
215. पाठा०— 1. नामदेव अम्रित।
216. पाठा०— 1. छीपी, छीपे, 2. संतह के परसादि नामा हरि भेटुला (पंढर०)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिगुणा में रेनु बेनु बजावे सागर का जवाई।
दही दुध की हंडी फुट गई भर-भर दुधया पाई॥ 3॥
नामदेव देव के गुरु शिखावें खेचरी मुद्रा गाई।
कृष्ण जी की बार-बार गावे हरिनाम बढ़ाई॥ 4॥

218.

तेरी हरी बिन कौन सहाय करेगो।
जे तूं हरि को नाम बिसरैगो, तो मरकट को अवतार धरैगो॥ टेक॥
क्रम डोरी बाजीगर केकर[1], खेंचत[2] घर घर बार फिरैगो।
ले लकुटि तन त्रास दिखावै, जन-जन के तूं पाय परेगो॥ 1॥
ज्यू कुलाल चक्री को फेरत, ऐसे तो किती बार फिरेगो।
भज भगवंत मुकति के दाता, नामदेव सरणै उबरेगो॥ 2॥

219.

आरती कीजे राजा राम रीझे।
भक्त करे जम जामी न दीजै॥ टेक॥
पहिली आरती पोप की माला, कालीनाग नाथ प्राण गुवाला॥ 1॥
दुसरी आरती देवकीनंदन, भक्त उधरण कंस नीकंदन॥ 2॥
तीसरी आरती जुग जुग पूजा, भक्त निरंजन और नहीं दूजा॥ 3॥
चवथी आरती त्रीभुवन माहे, गरुड वाहन गोपाल राये सोवे॥ 4॥
पांचवी आरती रामजी कु भावे, राम जी के गुण नामदेव गावे॥ 5॥

220.

तू सुख सागर नागर दाता, तू मेरे प्रारभ पिता अरु माता॥ 1॥
और न जानूं देवी देवा, अपना राम की करि हूं सेवा॥ 2॥
नामदेव कहै मोहि तारि गोसाई, व्याध बनचर भील की नांई॥ 3॥

---

218. पाठा०— 1. करम डोरी बाजीगर कै बसि, 2. नाचत।
टि० —इस पद की अंतिम चार पंक्तियाँ इस प्रकार भी मिलती हैं—
जूं हमाल सिरि बोझ बहत है लालच के संगि लागि मरैगो।
ज्यूं कुलाल चक्री कूं फेरै ऐसे तूं कई बार फिरैगो॥ 2॥
भजि भगवंत मुक्ति कै दाता, राम कह्या कछु ना बिगरैगो।
नांव प्रताप राखि उर अंतर, नामदेव सरणै उबरैगो॥ 3॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

221.

मैं को माधव मलमूत्रधारी, मैं कहां जानो सेवा तुम्हारी ॥ 1 ॥
तुम्हारी घर को भांडवी दावत, तुम्हारो घर को आदि कलागत[1] ॥ 2 ॥
नामदेव कहे देव नीके देवा, सुर नर पन्नग तुम्हारी सेवा ॥ 3 ॥

222.

राम विट्ठला, हम तुमहारे सेवक ॥ 1 ॥
बालक बेला माई विट्ठल बाप विट्ठल, जाती पाती गुरुगोत विट्ठल ॥ 2 ॥
ग्यान विट्ठल ध्यान विट्ठल, नामा का स्वामी प्राण विट्ठल ॥ 3 ॥

223.

माधो जी कहा करूं या मन कौ।
मन मैमत नहीं बस मेरौ बरजत हारयौ दिन कौ ॥ टेक ॥
स्वांति प्रमोधि लै घरि आऊं धीर पकरि बैठाऊं।
पीचै ही तै मतौ उपावै बहुरि न इहि घरि आऊं ॥ 1 ॥
अमृत झांडि विषै क्यूं ध्यावै करत आप मनि भायौ।
कहै सुनै की कछू न मानै अनेक बार समझइयो ॥ 2 ॥
कब लग तंत रहूं या मन कै जतन कीया नहीं जाई।
या अरदास करै जन नामौ, लीज्यौं राम राई ॥ 3 ॥

॥ राग टोड़ी ॥

224.

पाया पडौ दे पाया पडौ दे देवा रामा ॥ टेक ॥
जिमि जिमि रुचि जौ तिमि तिमि गोड।
कान्हा पुरवीले मनि चो कोड ॥ 1 ॥
तार डंडी करी, उभा रहई तुझै द्वारी।
बीनवै विष्णुदास नामा उपस्याम कीजै आम्हा ॥ 2 ॥

221. पाठा०— 1. आदि कलागत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

225.

मोर पिया बिलम्यो परदेस, होरी मैं कासौ खेलौं।
घरी पहर मोहिं कल न परतु है, कहत न कोउ उपदेस॥ 1॥
झरयो पात बन फूलन लाग्यो, मधुकर करत गुंजार।
हा हा करौ कंथ घर नाहीं, के मोरी सुनै पुकार॥ 2॥
जा दिन तें पिय गवन कियो है, सिंदुरा न पहिरौं मंग।
पान फुलेल सबै सुख त्याग्यो, तेल न लावों अंग॥ 3॥
निसु बासर मोहि नींद न आवै, नैन रहे भरपूर।
अति दारुन मोहिं सवति सतावै, पिय मारग बड़ि दूर॥ 4॥
दामिनी दमकि घटा घहरानी, विरह उठै घरघोर।
चित चातक है दादुर बौलै, वहि वन बोलत मोर॥ 5॥
प्रीतम को पतियां लिखि भेजौं, प्रेम प्रीति मसि लाय।
बेगि मिलो जन नामदेव को, जनम अकारथ जाय॥ 6॥

226.

रुखडी न खाइयो स्वामी, रुखडी न खाइयो।
हाथ हमारे घिरत कटोरी, अपना बांटा ले जाइयो॥ 1॥
दौडे दौडे जात स्वामी, रोटडियां मुख मांहि।
हम तौ दौडे पहुंच न सके, मिल लेहु गोसाइ॥ 2॥
घट घट बासी सर्व निवासी, पल में भेष बनाया।
कूकर ते ठाकुर ह्वै[1] प्रगटे, नामदेव दर्शन[2] पाया॥ 3॥

227.

नामा तूं हि तूं झूठा रे, तेरा पंथ झूठा रे।
अल्लाहि अलम का सांई, सोई गुप्त चेहरा रे॥ 1॥
मुसलमीन तो हंबी जाणी[1], नहीं राम कुतोली।
पांच बखत निमाजु गुजारी, मस्जित क्यूं नहीं बोली[2]॥ 2॥
वाच्छाव तू ही[3] तू दीवाना रे, तेरा तू हिं दीवाना रे।
गाईत्री तो हंबी जाणी, खेती वीराणा खाती॥
एक पाव तो छीन लिया है, तीन पाव पर चल जाती॥ 3॥

---

226. पाठा०— 1. भये, 2. दरसन।
227. पाठा०— 1. साहिब आनि, 2. महजब नहीं के बोली, 3. पादशहा नहीं दीवाना रे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामा तू हि बकरी काटी, मृगी काटी हलाल कीया कहता है।
मुरगी में सो अंडा निकला, हलाल कैसा होता है[4] ॥ 4 ॥
वाच्छाव बाबा आदम हंबी जाणे, ढबला नंदी आवे।
सीराल सेट का बेटा मारे, हराम खाना खावे ॥ 5 ॥
नामा तू ही झूठा रे ॥
उन ने मारा उन ने तारा, उन ने किया उधारा।
मुवा पोगंडा आब जीवावै, ऐसा राम हमारा पाच्छा[5] ॥ 6 ॥
दशरथ के दोनो बेटे, राम लछीमन भाई।
डेरा छांड कर जंगल जावे, जोरू अपनी गमाई ॥ 7 ॥
नामा तू हि जल ऊपर, फत्तर तारी[6], अहिल्या नारि उधारि[7]।
रावण मारा विभिषण थापा लंका बक्सी सारी ॥ 8 ॥
गोऊ बछरा दोनऊं काटे नामा आगे डारे।
नामदेव ने हाथ लगाया, बछरा पीवन लागे ॥ 9 ॥
अब तो भली बनी है जी, सबका धनी रामधनी है जी।
नामा वाच्याब सहज मिलै, सांचा झगडा उनका।
उंचा नीका कर कर देख्यो, सो ही ऊंचा नीचा ॥ 10 ॥

228.

हीन दीन जात मोरी पंढरी के राया।
ऐसा तुमने नामा दरजी काय कु बनाया ॥ 1 ॥
टाल बिना लेकर नामा देउल में गया।
पूजा करते ब्रम्हन उनौ ने बाहेर ढकाया ॥ 2 ॥
देवल के पिछे नामा अल्लक पुकारे।
निदर जिदर नामा उदर देउलहिं फिरे ॥ 3 ॥
नाना वर्ण गवा उनका एक वर्ण दूध।
तुम कहां के ब्रह्मन हम कहां के सूद ॥ 4 ॥
मन मेरो सुई तनो मेरा धागा।
खेचर जी के चरण पर नामा सिंपी लागा ॥ 5 ॥

229.

आ भडै रे नौआ आ भणै रे।
होति छोति कहि नहीं छीपा सूं, देवल मांही ना बडै रे ॥ टेक ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

4. हलाल कै नहीं होता है, 5. ऐसा राम मेरा, 6. पाषाण तारे, 7. चरन से शिला उधारी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तम लोग देहरे आया, च्यारूं वरण चा भडै रे ॥ 1 ॥
उठि भाई नामदेव बाहरि आव, ज्यौं पंडित वेद भणै रे ॥ 2 ॥
नामदेव उठि जब बाहरि आयौ, कैसौ नै कल न परै रे ॥ 3 ॥
देवल फिरि नामा दिसि भईया, पंडित सब पांवा पडै रे ॥ 4 ॥
दास नामदेव कौ ऐसा ठाकुर, पण राखै हरि सांकडै रे ॥ 5 ॥

230.

उठि रे नांमदेव बाहरि जाइ। जहां लोग महाजन बैठे आइ ॥ टेक ॥
बांभन बणीयां उत्तम लोग, नहीं रे नांमदेव तेरा जोग ॥ 1 ॥
बार बार सीधा कुण लेह, को छिपीया ढिग वैसण देह ॥ 2 ॥
हम तौ पढीया वेद पुरानां, तू कहां ल्यायौ ब्रह्म गियाना ॥ 3 ॥
नामदेव मनि उपरति धरी, हीन जाति प्रभु काहे मोरी करी ॥ 4 ॥
झाडि कबलीया चल्यौ रिसाइ, मठ कै पीछै बैठो जाइ ॥ 5 ॥
पगां घूंघरा हाथां तारी, नामदेव भगति करै पछि बारी ॥ 6 ॥
धज कंपी देवल धरहरया, नामदेव सनमुखि दूबारा फिरया ॥ 7 ॥
नामदेव नरहरि दरसन भया, बांह पकड़ि मिंदर मैं लीया ॥ 8 ॥
जैसी मनसा तैसी दसा, नामदेव प्रणवै बीसो बिसा ॥ 9 ॥

॥ राग पट नाराईण ॥

231.

पद निरखत किन जाई रे दिना[1]।
अब छिपा नाम नहीं मना ॥ टेक ॥
घट भरीले उदक बरोई[2], ऐसा तूं निहचल होई रे मना ॥ 1 ॥
जै तूं न मरस्य करस्य घाई, तौ तूं निमससि ठाईचा ठाई रे मना ॥ 2 ॥
नामा कहै सुख सुरग ही[3] नांही, सो सुख भगता[4] नाहीं रे मना ॥ 3 ॥

---

231. टि० —हस्तलेख 1059 में यह पद 'राग पट नाराईण' के अंतर्गत दिया हुआ है। एक पाठ में तीसरी पंक्ति चौथे स्थान पर और चौथी पंक्ति तीसरे स्थान पर दी गई है।
पाठा०— 1. मना, 2. चढाई, 3. सरगै, 4. संतनि (1059)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

232.

राम नीसाण बागा।
ताका मरम को जाणै भागा॥ टेक॥
बेद विवर्जिती भेद विवर्जिती, ज्ञान विवर्जिती शून्यं।
जोग विवर्जिती जुगती विवर्जिती, ताहा नहीं पाप पुण्यं॥ 1॥
सोग विवर्जिती भेख विवर्जित, डिंभ विवर्जित लीला।
कहै नामदेव आपहा आपही, व्याप सरीर सकला॥ 2॥

233.

रुंडा रांम जी सूं रंग लगाया रे।
सहजि रंग रंग आया रे॥ टेक॥
रै ममै की भांति लिखाई, हरि रंग में रैणी रचि आई॥ 1॥
प्रेम प्रीति का बेगर दीया, हरि रंग में मेरा मन रंगि लीया॥ 2॥
नामदेव कहै मैं हरि गुन गाऊं, भौ जल मांहि बहौरि नहीं आऊं॥ 3॥

234.

सहज बोलणे बोल बोलिजै।
पै अनुभौ बीना न नीपजै॥ टेक॥
राजहंस बाली कोण सी कवीला, सांगैइ मोरुला कवणै नाचवीला॥ 1॥
चंदन सीतल कोणै केला, पैलासी थाना डीट कोणै केला॥ 2॥
पहुप वास कोणै दीधली परिमल, सांगी मणिकास कोणै दीधली कीला॥ 3॥
सुरै अथी कोकीला, पै सीत बाना नई बैर साला॥ 4॥
अमृतास कवणै दीधलै गोडी, जिह्वा नींबडी बलतीच[1] वोबडी॥ 5॥
नामदेव भणै संत संगती फुडी, मै केसौ चरण निवडी॥ 6॥

235.

कुनूं क्रपा[1] तुझी[2] होइ ज्यौ आवरी।
विघन ब्याधी तैथै काल काई करी॥ टेक॥
एक बहावला महापुरी, बलसिया भीतरि।
जीवल होता तारूं जेन्है धरीला निज करी॥ 1॥

---

234. पाठा०— 1. बलतीस।
235. पाठा०— 1. कुनौ कृपा, 2. छल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकै धन उदैस भूतिला तास दिया सनमुख भेटिला।
निधनिया धौरी सुधनवंत[3] कैला ॥ 2 ॥
हरिणी पातली गुणबाण रेखिला।
सप्त सुनौ सरखै पारधी डंकिला ॥ 3 ॥
गाइका पाणधी बाध झपविला।
जीवल होता सींहो जेन्हे बाध निरदालीला ॥ 4 ॥
ऐसी अचरजै तुझी न कले बा देवा।
विस्नदास नामा बीनवै केसवा ॥ 5 ॥

236.

तैसी चूक लीजै रे जगजीवनां।
अनभव मिल्या बिना लखी न ऐसी कृस्ना ॥ टेक ॥
पारब्रह्मची गोडी नेणती बापुडी, पडीली ते साकडी वीषया संगै ॥ 1 ॥
सिलेस घातीले उसाचे वैरणे, तेच वीधेणे नेतियार साचै ॥ 2 ॥
कमलीणी दरदुरा एकै जै बिढारा, परिमल मधुकरा धीवणी गैला ॥ 3 ॥
थाना चया दुधा न होसी वरपड़ा अपुध सेवीता उचडा जनम गैला ॥ 4 ॥
नामा भणै तैसी चुकली तुझी तुझ देखता, अमृत सेविता चवै नौंणति ॥ 5 ॥

237.

तुम ती बरजाउं माई है, मुने देहुरे जाता।
राम नाम हमारे मन बैसे चीत चतुर्भुज राता ॥ टेक ॥
करम छांडि कुकर्म करूं तौ, तु बरजी है माई।
आदि पुरुष में सेइयो, जीइ ही यहु सीष्टी उपाई ॥ 1 ॥
माई कहई सुनी पुतरे, तु उबीग कस धरी सी।
जीहीर उपाई मेदनी सो चीत करसी ॥ 2 ॥
माता बीण बालीक की सौ की ससीहर वीण रैणी।
दीपक बीथा मंदीर की सौ त्यौ मैं क्रीसन बीडणी ॥ 3 ॥
कांहुं के मन क्युं बैसे, कांहुं के पार सुहावै।
नामा का चीत वीठली बैठा, छा यौ हरि गुण गावै ॥ 4 ॥

---

3. नीधनिया धन द्योनि धनाईत कैला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

238.

झिलिमिलि झिलिमिल नूरा रे[1]।
जहां बाजै अनहद तुरा रे॥ टेक॥
ढोल दमामां बाजै रे, तहां सबद अनाहद बाजै रे॥ 1॥
फिर रायां जोति प्रकासी रे, जहां आपै आप अविनासी रे॥ 2॥
जहा सूरिज कोटि प्रकासा रे, तहां निहचल नामदेव दासा रे॥ 3॥

239.

जागौ न बैरागी जोगी, यही अनोपमि बाणी जी।
झिलिमिलि झिलिमिलि होइ निरंतर, सो गति बिरलौ जाणी जी॥ टेक॥
राम बैराग म्हारै मंडल चूबै, कारण क्या भीजै जी।
निस अंधियारा भौ सब भागा, सुनि मैं सूता जागूं जी॥ 1॥
नारि न सारि तांत्य नहीं तूंबा, पत्र पवन न पाणी जी।
एकै आसन दोइ जन बैठा, रावल नैरौ हिताणी जी॥ 2॥
मनकरि हीरा तत करि कंथा, जम मनी परि जागूं जी।
भणत नामदेव अनहद जाचूं, बैकूंठा भिख्या मागूं जी॥ 3॥

240.

जपी रांम नांम नृ लै उरी।
जीणो चरण अहिल्या उधरी॥ टेक॥
राम नाम मेरे हिरदै लखी, राम बिना सब फोकट देखी॥ 1॥
जे बोलिये तो कहिये राम, अनेक बचन सो नाहीं काम॥ 2॥
नामा भणैं मेरे यही नाउं, राम नाउं की मैं बलि जाउं॥ 3॥

241.

नको नको रे संसार महा जड।
छांडी परपंच माहा कड॥ टेक॥
मला–मुत्रा चैया भांडई, तामई पांचई सई भांडई॥ 1॥
पांच महदभुत गुण त्रीवीधा, तामे भीन्न प्रकृति अखटंधा॥ 2॥
नामदेव भण वैणी माया, चौरयासी लख भरमाया॥ 3॥

---

238. पाठा०— 1. मुरारे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

242.

रसना रंगीलै हरि नाम।
लै हरि नाम सरै सब कांम॥ टेक॥
रसना है तूं बकबादणी, राम सुन रै क्यौ पापणी॥ 1॥
रसना तो पै मागूं दान, राम छांडि मति सुमरै आंन॥ 2॥
जप तप तीरथ कौणे काम, नामदेव कहै मोहि तारैगो राम॥ 3॥

243.

इन औसर गोबिंद भजि रे।
यह परपंच सकल बिनसैगे, माया का फंद न सजि रे॥ टेक॥
नांव प्रताप तिरे जठ जल मैं मांगत नांव कीयो हठ रे।
बिन सेवा बिन दान पुनि, बिन चाढि विमान सकल सझ रे॥ 1॥
तन सरवर एक हंस बसेत है ताहूं काल करत फंद रे।
नामदेव भणै निरंजन का गुन, राम सुमिरि पिंजरा सझि रे॥ 2॥

244.

नहीं ऐसो जनूम बार बार।
कहीं पूरब लै पुनि पाईयौ, मनिषा औतार॥ टेक॥
ग्रभ बास मै प्रतिपाल कीन्ही, ताहि सुमरि गंबार।
कहा उतर देहगौ, राजा राम कै दरबार॥ 1॥
बधत पल पल घटत छिन छिन जात न लागै बार।
तरवर सूं फल झडि पडै, बहौरि न लागै डार॥ 2॥
संसार सागर मंडी बाजी, सुरति कीन्हीं सारि।
मनिष जन्म का हाथि पासा, जीति भावै हारि॥ 3॥
संसार सागर विषम तिरणां, निपट उंडी धार।
सुरति निरति का बांधे भेरा, उतरिये लै पार॥ 4॥
काम क्रोध मद लोभ लालच, ताहि बंध्यौ संसार।
दास नामै जग जीति लीया, केवल नांव अधार॥ 5॥

245.

गाइ मन गोविंद गाइ रे गाइ।
तेरो हरि बिन जनम अकारथ जाइ॥ टेक॥
मनिषा जनम न बारंबार, तातै भजि लै रामपियार॥ 1॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रे मन गोविंद काहे न गावै, मनिषा जनम बहुरि नहीं पावै ॥ 2 ॥
छाडि कुटिलाइ हरि भजि मनां, या जीवड़ा का लागू धना ॥ 3 ॥
अब कै नामदेव भया निहाल, मिले निरंजन दीनदयाल ॥ 4 ॥

246.

गावैं तौ गाइ भावै मति गावै राम।
झूठा वाहि बदै बेकाम ॥ टेक ॥
पढै गुनै अरु कथै अनेक, बसतु भली पकडि भांडे छै ॥ 1 ॥
जब लग नाही हिरदै हेत, बीज बिना क्युं निपजै खेत ॥ 2 ॥
जिभ्या इन्द्री नाहीं सुद्ध, बांझ भणां क्यों निकसै दुध ॥ 3 ॥
नामदेव कहै इक बुधि बिचारि, बिनि परचै मति मरौ पुकारि ॥ 4 ॥

247.

अभिमान लीखा नर आयौ रे।
पर आत्म आत्म नहीं चीन्ही, नर वपु नांव धरायो रे ॥ टेक ॥
गरभवास मैं हुतौ दीनता, त्राहि त्राहि ल्यौ लायौ रे।
हा हा करत विसंभर आगै, गहि आपदा छुडावौ रे ॥ 1 ॥
अब रातौ तै बिषै बासना, संग तृस्नां कै धायौ रे।
गुन्हेगार गोविंद देव कौ, कबहूं रांम न गायौ रे ॥ 2 ॥
मैं हरि नांम अधार धार कै, सादू सरनि बतायौ रे।
नामदेव कहै समझि मन मूरिख, जौ समझै समझायौ रे ॥ 3 ॥

248.

ऐसे ही मना रे मेरे ऐसे ही मनां।
चलौ रे जहां साहिब अपना ॥ टेक ॥
ज्यू सापों सर ले ने जाइ, जल कोडर तो बिलगम जाइ ॥ 1 ॥
ज्यू पंथी पथ माही डरै, घर है दूरि रैनि जानि परै ॥ 2 ॥
बाल बुधि जैसे कोडी देह, रिधनां डर तौ सांस न लेह ॥ 3 ॥
ऐसे जारिम पऊ चरण करै, नामदेव कहै ताको कारिज सरै ॥ 4 ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

249.

तू मुझा मुंगा भी तुझा तुंगा।
तू मुझा कैसे डारसि देवा॥ टेक॥
कडवा की विष्टा पीपल उचिष्टा, धन चे रे निकटि गूचडा मैला॥ 1॥
सब जग जाइला पै भगत न जाइला, जनम जनम नामदेव निसान बजाइला॥ 2॥

॥ राग कनड़ा ॥

250.

हरि नांम अमृत पखालि मुखा थैं।
बहुत ते प्रांणीं किं करै रे॥ टेक॥
असत्याचा मल लागिले जिभ्या, तेन छूटती हरि नांव बिना॥ 1॥
(झूठ का मैल)
हरि कथा गंगव अस्नान जाला, नामइयाचा स्वामी केसी राजा हो॥ 2॥

॥ राग रामकली ॥

251.

हरि हरि दोन्यूं अखिरे उचारि।
अेरी[1] लटकि बिगारी॥ टेक॥
(अरु झूठ ब्रिगारि)
मना सेविया रे हरिनाम वोषदी, जेनै परमपद पावसीले।
सालि-पाल काइ सांगसी जम खडा, ले हरिनाम घडघडा॥ 2॥
अनेक वोषदी मेलवन का काडा, हरि नामै बोबडी फीटिल तुझी॥ 3॥
सोंझणियाला पारै दुरी, नामा भणै हरि बिजमंत्र उच्चारि॥ 4॥
(सुणावै हेला पुकारै ऊंचा) (नामदेव कहै यह मंत्र उचारी)

---

251. पाठा०— 1. अरु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ राग परज्यो ॥

252.

न होइ ज्यौ तीरथ व्रत अस्नान करिता[1], न होइ ज्यौ कबित परमोध रचीता।
न होइ ज्यौ सुघड पणै गाता, जेन्है होइ ज्यौ आत्मा, ते बेग लेच असे ॥ टेक ॥
न होइ ज्यौ जोग साधणै, न होइ ज्यो गिरासणै पावनै।
न होइ ज्यौ इंद्रिया दवणै, जेन्है होइ ज्यौ मने, ते बेगलेच असे[2] ॥ 1 ॥
न होइ ज्यौ आसन समाधि, न होइ ज्यौ अही कष्ट साधी।
न होइ ज्यौ पराकरम बुद्धि, जेन्है होइ ज्यो त्रिसुधी, ते बेगलेच असे ॥ 2 ॥
न होइ ज्यौ आकार नै आगमै, न होइ ज्यौ निरुपणे नृगमै।
न होइ ज्यौ षट करमे, जेन्है होइ ज्यो ब्रह्मै, ते बेगलेच असे ॥ 3 ॥
न होइ ज्यौ प्राण प्रचीती, न होइ ज्यो देवानी बिगती।
न होइ ज्यौ आत्म प्रचीती, जेन्है होइ ज्यो त्रिशुधी, ते बेगलेच असे ॥ 4 ॥
न जेन्है होइ ज्यौ सड़ दरसणै, न होइ ज्यौ सुचाल अंत:करणे।
न होइ ज्यौ अभाव हीणै[3], न होइ ज्यौ एकै केसवा बिनै बिस्नदास नामा बीनवै ॥ 5 ॥

॥ राग तिलंग ॥

253.

देखो यारो देखो लोको, इह क्या हुवा।
पिंजरे महि बोलता कहां गया सुवा ॥ टेक ॥
साचे साहिब का परवाना आया, नैरंगी महाल में रहण न पाया ॥
समानां कां प्राण प्रीतम कहाया, सभना रल मिल कांधे पर चाया ॥
या को तूं कहता जो मेरी मेरा, जला उणे कौ ले चले प्रीतम तेरा ॥
बाजीगर ने बाजी पाई, कला अपने हाथ रखी, लखी न जाई ॥
बाजी को जाने, जग सुखिया सोई, दावा बांधि नामा दुनिया सभ रोई ॥

---

252. पाठा०— 1. करीता, 2. न होइ ज्यौं गिरोसनैं पवनैं, न होइ ज्यौं इंद्रीया दव नें, 3. न होइ ज्यौ अहौ भाव हीणैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ राग बिलावल ॥

254.

टाली बाजैवा टाली बाजैवा।
(अनहद)
बाजे एके न उदासि मना ॥ टेक ॥
संसार विष्या पाती गहै काउडी, वाइली टाली गेला अंतराली ॥ 1 ॥
(पाप बोझ, बाज्या अनहद गई अंतराइ)
बिस्नदास नामइया तूंबाइली टाली, उडाला पाती के गेला अंतराली ॥ 2 ॥
(गुर प्रसादि नामदेव, उड़ि गया पाप, गई अंतराइ)

॥ आरती ॥
॥ राग सोरठ ॥

255.

बोवालने जाये परब्रह्म बोबालने जाये ॥ टेक ॥
कनक के तलीया आरती करीया, चंवर ढुले नंदलाल मुरलीया ॥ 1 ॥
गोपी गावे मंगल साला, कौस मारी घर आवे गोपाला ॥ 2 ॥
नामा प्रणवै दास तुम्हारो, पुनरपी जनम नीवारो हमारो ॥ 3 ॥

256.

उत्तरा आरती चरण मुरारे ॥ टेक ॥
करपुरका दीपला करपुरकी बाती, कपुर बरै दिन-रात मुरारे ॥ 1 ॥
खांड सरोजी और मेवा, लवंग सुपारी नारेल खोवा ॥ 2 ॥
कहत नामदेव बलि बलि जाऊं, बैकुठ जाऊं त बहुरी न जाऊं ॥ 3 ॥

257.

गोविंद गुना गोपाल गुना गायले रे गोविंद गुना।
ऐसो समय बहुरि नहिं पै है फिरि पछितैहै मेरे मना ॥
जिन तुमको तन मन धन दीन्हो नयन नासिका मुख रसना।
जाको रचत मास दस लागे ताहि न सुमिरे एक छिना ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालापन हंसि खेल गमाये तरुण भयो तब रूप घना।
बृद्ध भये पर आलस उपजे उठ गइ हाट कछू न बना॥
अधम तरे अधिकार भजन ते जे आये हरि शरणा।
ना मानो तो साखि बताऊं अजामील गनिका सदना॥
धन जौवन अंजुरी को जल जस घटत जात छिन पलहि पला।
अस जिय जानि भजो रघुनन्दन नामदेव आये हरि शरणा॥

258.

देवा तेरी भक्ति न छांडूं मुक्ति न भांगू हरि यश सुनहुं सुनाऊं।
रामकृष्ण अवतार मनोहर जन्म जन्म यश गाऊं॥
गंगा जल असनान कराऊं पीताम्बर पहिराऊं।
तुलसी आनि गोपालहिं पूजौं चंदन सरस चढाऊं॥
चुनि चुनि कलियां हार बनाऊं रघुवर उर पहिराऊं।
धूप दीप नैवेद्य आरती यहि विधि लाड़ लड़ाऊं॥
हरषि निरखि हरि के गुण गाऊं हाथन ताल बजाऊं।
भनत नामदेव सुनहु त्रिलोचन यहि विधि दास कहाऊं॥

259.

बिनती सुन जगदीश हमारी।
तेरो दास आस मोहिं तेरी, इत करो कान मुरारी॥
दीनानाथ दीन ह्वै टेरत, गाइहिं क्यों नहिं ज्यावो।
आछे सबै अंग है याको, मेरे यशहिं बढावो॥
जो कहु याके कर्मन में, नहिं ज़ीवन लिखो विधाता।
तौ नामदेव की आमुर्दा सों, होहु प्रभुहि तुम दाता॥

260.

राम रतन धन पाया माया।
बस्तु अमोलक दियो है गुरु ने माथे तिलक कराया।
राम नाम की भई विभूति जग में साह कहाया॥
देत लेत और खावत खरचत दिन दिन होत सवाया।
राज न दंडै चोर न लूटै धरनी धरे न जाया॥
ले प्रह्लाद खम्भ में बांधे अब तेरो कौन सहाया।
कहां तेरो राम बताओ मोहीं हाथ खड्ग झटकाया॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो में मो में खड़ग खम्भ में व्यापि रहे रघुराया।
खम्भ फोरि हिरनाकुश मारे नामदेव की राम सहाया॥

261.

जहां देखो तहां नरहरि नरहरि।
तेरी आरती गाऊं पतिदेव हरि हरि॥ टेक॥
नरहरि कहतां नरहरि पार उतारै, आरती करै जन छिनन विसारै॥ 1॥
नरहरि मीठा नामां आरती गावै, अनन्त भवन में जै जै थावै॥ 2॥

॥ भोग॥

262.

नंदनंदन जी को भोग लागे।
महा शंख धुनि घंटा बाजै॥
अमृत भोक्ता श्री यदुराई, छप्पन भोग श्री लक्ष्मी लाई।
सतिभामा जी जेंवन कीन्हों, हरि हलधर को नेवता दीन्हों॥
चंदन जल से भवन सिंचाये, सखा सहित हरि जेंवन आये।
दूध पाक पकवान मिठाई, छप्पन भोग जेंवें दोऊ भाई॥
छप्पन भोग छतीसों व्यंजन, रुचि रुचि सों जेंवें यदुनंदन।
साग पात जो जिनके होई, अमृत करि जेंवें हरि सोई॥
हरि जेंवें हरिजन यश गावें, ललिता विशाखा चंवर ढुरावें।
जन नामदेव द्वारे यश गावें, सो हरि कोई न वारो पावें॥

॥ शयन॥

263.

शयन करो नारायण देवा।
चरण पलोटों करौं हरि सेवा॥
शयन करो तुम अन्तर्यामी, मनसा वाचा करौं गुलामी॥
फूलन गैंदा मुक्ता सोहै, देखत पलंग नामदेव मोहै॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ राग रामकली ॥

264.

सजल जल नीर नदी सै डौला।
संघण घणवट अंगोला ॥ टेक ॥
(का एकठा डोला घण घण।)
तलि संसार बार सरोवरि नांमीं चा, र भरै पणिहारि घरोघर ॥ 1 ॥
(ऊपरि)
पातालि ढीकुली गगन कूवा, बाड़ी सींचता माली अतीत हूवा ॥ 2 ॥
नदी नव बहै नीभ ना भजो वौरी, आंबली चालै ते नाव भीतरी ॥ 3 ॥
(नांम काया देखो उलटी)
पाहौ एणौं जलै जग बूडाला, नांमौं सेवग साहिब चरणौं मुराना ॥ 4 ॥
(देखौ इति नीर तासीर) (चरणैं मिल्या)

साखियाँ

1.

अभिअंतरि नहीं भाव, नांम कहै हरि नांउं सूं[1]।
नीर बिहूंणीं नांव, क्यूं[2] करि तिरिये केसवा॥

2.

अभिअंतरि काला रहैं, बाहरि करैं उजास।
नांम कहै हरि नांव बिन, निहचै न्रक निवास॥

3.

अभिअंतरि राता रहै, ऊपरि[3] रहै उदास।
नांम कहै मैं पाईया, भाव भगति बिसवास[4]॥

साखी पाठ०— 1. सौं 2. कैसे 3. बाहरि 4. वेसास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4.

साह सिहाणौं जीव मैं, तुला चहुड्यौ प्यंड।
नांम कहै हरि नांव समि, तुलै न सब ब्रह्मंड॥

5.

ढिग ढिग ढूंढै अंध ज्यूं, चीन्हैं नांहीं संत।
नांम कहै क्यू पाइये, बिन भगता भगवंत॥

6.

तन तोल्या तौ क्या भया, मन नहीं तोल्या जाइ।
साच बिना सीझै नहीं, नांमा कहै समझाइ॥

7.

दांन पुंनि पासंग तुलै, अहंडै सब आचार।
नांम कहै हरि नांव संमि, तुलै न जग ब्यौहार॥

8.

बालपणै थैं[1] हरि भज्या, जग थैं[2] भये उदास[3]।
नांमदेव चंदन भया[4], सीतल सबद निवास॥

9.

जेता अंतर भगत सूं, तेता हरि सूं होई।
नांम कहै ता दास कूं, मुकति कहां सौं[5] होई॥

10.

यै पाया मंदिर फिरया, भगति न आई तोहिं।
नांम कहै हरि बसि भया,[6] परि मनि प्रतीति न होई[7]॥

---

1. व 2. तैं, 3. भये निरास (1059), रह्यौ उदास (1021), 4. भये (1059), भयौं (1021), 5. मुकति कहां थैं होइ, तै, 6. कीया, 7. परि संसा दूरि न होई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11.

बिन चींन्हें नहीं पाइये, कपटि सरै का[1] कांम।
नांम कहै नित पाइये, रांम जनां थैं[2] रांम॥

12.

नांम कहै रे प्रांणीया[3], नीदंण[4] कूं. कुछ नांहिं।
कौंण[5] भांति हरि सेइये, रांम सबन ही मांहिं॥

13.

समझ्या घट कौं यूं बणै, यहु तौ बात अगाध।
सिरजे[6] सूं नृबैरता[7], पूजण कूं ये साध॥

14.

नांमदेव भगत भगवंत ऐ कहै, बिरला चीन्है कोइ।
अंतरि कांती कपट की, ताथैं दीसैं दोइ॥

15.

नामां समझे भगत कूं, इहै बडा बमेक।
बाहरि मिलते सौं मिलै, अंतर सब सौं ऐक॥

16.

नांम कहै इस नाम सम, तुले न तोलै कोय।
सकल धरम यग्यादि दे, अधिक सबन तें सोय॥

17.

आन धरम अनसारिको, अनरुचि अति दुखवंत।
सब पारद क्यो बधि लियो, ऐसो भजन भगवंत॥

---

1. नहीं, 2. तैं, 3. प्रानीयां, 4. नींदण, 5. कौन, 6. सब्रहनि (पूना०), 7. निरब्रैरता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दार्थ

अंजन	=	1. काजल, 2. माया
अंबरीक	=	अंबरीष, अयोध्या का सूर्यवंशी राजा, जो विष्णु-भक्ति के लिए प्रसिद्ध था।
अकल	=	अल्लख, अलख
अकुल	=	कुल रहित, निम्न कुल का
अगई (अंगई)	=	अगेय
अजामलु	=	अजामिल, एक पापी जिसका विष्णु ने उद्धार किया था।
अधिपति	=	आधिपत्य, शासन, राज्य
अठारह भार	=	पृथ्वी पर उगने वाली अठारह प्रकार की वनस्पतियाँ
अड़वा	=	1. बिना बधिया किया हुआ पशु, 2. हठी
अड़वाथैं	=	व्यर्थ में
अणमड़िया	=	अनमढ़ा
अनभै	=	अनुभव
अनहत, अनाहद	=	अनाहत, हठयोग के अनुसार कुण्डलिनी ऊर्ध्वमुखी होकर षट्चक्रों को भेदती हुई जब ब्रह्मरंध्र में पहुँचती है, वहाँ जीवात्मा ब्रह्म रंध्र में झरते हुए अमृत का पान करती है। इसी अवस्था में योगियों को अनाहत नाद सुनाई पड़ता है।
अनिन	=	अनन्य
अबदालब	=	विराट रूप, साधु या फ़कीर जैसा रूप
अभेव	=	अभय
अयाना	=	अज्ञानी, मूर्ख
अरदास	=	विनती, प्रार्थना
अल्लक	=	ईश्वर
अलप	=	अल्प, थोड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवघट	=	कठिन
अवर	=	और
अस्वमेद	=	अश्वमेध, एक वैदिक कालीन यज्ञ, जिसे चक्रवर्ती सम्राट ही कर सकते थे। इसमें सभी प्रदेशों का भ्रमण करके लौटने वाले घोड़े को मारकर, उसकी चर्बी से हवन किया जाता था।
असगा	=	जो इसका है
अहंडै	=	वज़न, माप
आकास	=	ब्रह्म रंध्र
आकुल	=	अलख निरंजन
आखरि	=	अक्षर, बात
आडौ	=	नष्ट करना
आपा	=	अहंकार
आलम दुनी	=	जगत्
इकोड़ी	=	उल्टा करना
इजार	=	रस्सी, नाड़ा, डोरी
इड़ा	=	हठयोग के अनुसार बाईं नाड़ी
उंडी	=	गहरी
उग्रसैन	=	उग्रसेन, कंस के पिता
उदिक	=	जल
उलगूं	=	औलगणें, छोड़कर
उसगा	=	वह उसका है
ऊभी	=	खड़ी
एकट थाई	=	फिर से इकट्ठा करना
एकल माटी	=	एक ही मिट्टी से
एतलौं	=	इतना
एवड़ा, एहड़ा	=	इतना
औतरोगे	=	अवतरित होंगे
कंथ	=	कंत, पति
कांचली	=	केंचुल
कमल कोठरी	=	स्वच्छ हृदय
करवत	=	काशी (वाराणसी) का वह पौराणिक स्थल जहाँ श्रद्धालु मोक्ष के लिए प्राण त्यागते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करहला = ऊँट
कलंद्र = 1. कलंदर, 2. फक्कड़, 3. मुसलमान साधु
कलित्र = कलत्र, स्त्री
काइण पढ़िया = 1. विवाह करना, 2. निकाह पढ़ना, 3. कायत्व प्राप्त किया
काङ्ला = कंगाल
काडला = निकाला हुआ
काती = कैंची
क्रांती = परिवर्तन, क्रांति
काल्यन्द्री = कालिंदी, यमुना
कावडि = शरीर, देह
क्रितम = 1. कृत्रिम, 2. माया, 3. बनावटी
कीयले मेंक सरांहूं = 1. किले में बंद, 2. कीलों से जकड़ा हुआ, 3. कलियुग से त्रस्त
कुजा आमद = कहाँ से आए?
कुजा मेरवी = अब तक कहाँ थे?
कुजा रफ्ती = कहाँ जाओगे?
कुब्जा = कंस की कुबड़ी दासी। कृष्ण को चंदन लगाने पर कृष्ण ने लात मारकर उसका कूबड़ ठीक कर दिया था।
कुरंक = कुरंग, हिरण
कुरखेत = कुरूक्षेत्र
कुलह = टोपी
कुलाल = कुम्हार
कुसमल = 1. कश्मल, 2. गंदा, 3. पाप
कूकर = कुत्ता
कूडै = व्यर्थ
कूतम साहति = तर्क-वितर्क, मीन-मेख
कूरिम = कच्छप
कैरूं = कमलिनी
कोल्या येव्हडा मोतीड़ा = मछुआरे ने इतना बड़ा मोती देखा।
खुंदकारा = 1. संकेत, 2. सर्वशक्तिमान ईश्वर
खपनीं = 1. व्यय होना, 2. रिक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खसम	=	1. मालिक, 2. ईश्वर, 3. पति
खाना	=	1. खान, 2. बादशाह
खेचर	=	1. पक्षी, 2. नामदेव के गुरु-बिसोबा खेचर
खेचरी	=	आकाश में चलने की योग-सिद्धि
खैवे	=	पीछा करना
खौलि	=	1. क्षौर, 2. चंदन-लेप
गगन, गगन मंडल	=	1. आकाश, 2. ब्रह्म-रंध्र
गनिका > गणिका	=	पिंगला नामक वेश्या। अपने तोते को राम-नाम पढ़ाने से जिसका उद्धार हो गया था।
गरास	=	ग्रास
गरुड बार	=	1. विष उतारने वाला, 2. गारुड़ी
गरुड़ मंडल	=	मंदिर के सामने बना गरुड़-स्तम्भ
गाइत्री	=	गाय
गाफल	=	असावधान, भ्रमित
गालि	=	1. व्यर्थ, 2. सारहीन, 3. बकवास
गीधनि	=	गिद्धों ने
गूड़ी	=	1. गुड्डी, 2. पतंग, 3. आत्मा, 4. कुण्डलिनी
गोठि	=	1. गोष्ठी, 2. मैत्री
गोवलि घाट	=	अस्थायी मार्ग
गोस्ति > गोष्ठी	=	गोठि, गायों का समूह
घणेरी	=	अधिक
चक्री	=	चाक
चटरा	=	पाठशाला
चटिआ	=	विद्यार्थी
चन्द्र	=	1. चन्द्रमा, 2. हठयोग में इड़ा का प्रतीक
चरम नसाई हो	=	मेरा संपूर्ण अहं भाव नष्ट हो गया।
चत्रसाली	=	चित्रशाला
चत्रुमुखा	=	ब्रह्मा
चारयू मुकती	=	चारों प्रकार की मुक्ति (सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सयुज्य)
चिंडाली	=	चांडाल जैसा
चितारै	=	चारों तरफ
चिहुट्या	=	लगना, चिपकना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेरि > चेरी	=	दासी
चोघता	=	देखना
चोखा	=	1. अच्छा, 2. सुंदर
छंछारा	=	1. मंद, 2. धूमिल
छपइयो	=	छिपाना
छंदे तीन खेलो	=	1. तीन शब्दों का खेल, 2. तीन मिलकर खेलना अच्छा है।
जंगम	=	1. चलने वाला, 2. चल
जन	=	1. भक्त, 2. संत
जरजोधन	=	दुर्योधन
जलधर	=	तालाब या नदी
जलहरि	=	तालाब या नदी
जाइ न पेली	=	सही नहीं जाती है
जुहारि	=	याचना या प्रार्थना करना
जोइ	=	1. जोरू, 2. पत्नी
जोगेसुर	=	योगियों का नाथ
झाल	=	जाल
टंगरडी	=	टंगडी
टगमग	=	टकटकी लगाए
ठगदेउ	=	ठगराज
ठेगा	=	लकड़ी
डूंगर	=	पर्वत
डहकावै	=	1. बहकाना, 2. भ्रमित करना
डहकीला	=	1. ठगा जाना, 2. धोखा खाना
डाक > डाँक	=	1. डंका, 2. दुंदुभी
ढूका	=	1. ताक में बैठना, 2. घुसना, 3. छिपना, 4. संतुष्ट होना
दिहंद	=	रक्षक
दुहेली	=	1. कठिन, 2. कष्टदायक
दूतर	=	1. दुस्तर, 2. कठिन
दोजग	=	नरक
नटणीं	=	नर्त्तकी
नाका	=	नाक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटी	=	1. नटी, 2. कुटनी
नाद	=	अनाहत नाद
नावरी	=	केवट
निरंजन	=	1. निर्दोष, 2. निराकार ब्रह्म
निरबंध	=	1. असीम, 2. बहुत
निरभै	=	निर्भय
निरवा	=	समीप
त्रिबांण	=	निर्वाण, मोक्ष
नियारा	=	पृथक्
निवाज	=	नमाज
निसतरी	=	उद्धार
निसरनी	=	1. निसृत, 2. बाहर निकली हुई सीढ़ी
निहकामा	=	निष्काम या कामना रहित
निहचल	=	1. निश्चल, 2. अटल
निहाल	=	प्रसन्न
नीझर	=	तीव्र गति
नीपजै	=	पैदा होना
नीयरे	=	पास
नीरा	=	1. पानी, 2. आब
नीसांण	=	1. पहचान, 2. चिह्न, 3. वाद्य-यंत्र (नगाड़ा)
नृमल	=	निर्मल या स्वच्छ
प्यंड > पिंड	=	शरीर
प्यंड परे	=	मरने पर
पखांनां	=	पाषाण
पखाल	=	धोना
परवै	=	जलता है
पड़वणि	=	कमलिनी
पतिआइ	=	विश्वास
पतीजै	=	विश्वास करना
पनही	=	जूता या जूती
पयाणा	=	1. पाया हुआ, 2. लक्ष्य, 3. उद्दिष्ट
परतखि	=	प्रत्यक्ष, सीधे-सीधे
पसवा	=	पशु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पावैंगे	=	पाओगे
प्रणाइ	=	परिणय कराना
प्रस्य	=	परसि, स्पर्श
परतीति	=	प्रतीति, विश्वास करना
परदक्षिन	=	प्रदक्षिणा
परमोध्यौ	=	1. परमोधना, 2. प्रबुद्ध करना, 3. जगाना
परहरि	=	छोड़कर
परहा	=	1. परै, 2. दूर
परिघाठा	=	घटित हुआ
परिघाती	=	1. मार डालने वाला, 2. नष्ट कर देने वाला
परोहन	=	1. प्रवाह में बहना, 2. सवारी
पस्तायेगा	=	पछतायेगा
पसूआरा	=	1. कीड़े, 2. छोटी मछली, 3. जुआ खेलने वाला
पाटै सुत्रैं	=	रेशम के धागे में
पाताल	=	मूलाधार चक्र
पातिशाह	=	बादशाह
पातुरि	=	1. नर्त्तकी, 2. वेश्या
पारमलो	=	सुगंध
पालणि	=	पालना
पासी	=	बंधन या पाश
पाहुनडो	=	अतिथि
पिंगला	=	हठयोग के अनुसार दाईं नाड़ी
पिछोकडि	=	1. पिछवारे, 2. बाहर
पिंधी	=	रहट
पुतली	=	मूर्ति
पुरसादामरा	=	1. प्रथम पुरुष, 2. ईश्वर से उत्पन्न माया
पुरसाबिरा	=	1. प्रथम पुरुष, 2. ईश्वर
पुलंदरियै	=	1. दासी, 2. सौभाग्यशाली स्त्री
पूगड़ा	=	पुत्र
पूतना	=	बाल कृष्ण को मारने के लिए कंस द्वारा भेजी गई राक्षसी
पेखूं	=	देखना
पेटाबलू	=	1. पेटू, 2. ढोंगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेलीला = 1. अमान्य करना, उपेक्षा करना

पैआरू = पुआल

पैडी = सीढ़ी

फुनीग = नहीं आती है

फोकट = 1. मुफ्त, 2. व्यर्थ, 3. निस्सार

बंचिला = छोड़ना या त्यागना

बउरी = पागल

बखसंद = 1. क्षमाशील, 2. दाता, 3. मोक्ष देने वाला

बबक = 1. भावुक, 2. शुद्ध करने वाला

बमेक = विवेक

बरत = व्रत

बाइर = स्त्री

बाग्गा = वस्त्र विशेष

बागरा = वाटिका

बाजी जामण = जनम का खेल या क्रीड़ा

बापुरौ = 1. गरीब, 2. बेचारा, 3. तुच्छ, 4. नगण्य

बालहा = प्रिय

बसुमती > वसुमती = 1. पृथ्वी, 2. देश, 3. राज्य, 4. जमीन

बिआधि = व्याधि

बिगारी = बेगारी

बिझूका > विजूका = फसल की रक्षा के लिए बनाया गया मानवाकार पुतला

बिटाल्यौ = जूठा करना

बिसमिलि = वध की हुई

बिदुरु = विदुर, कौरवों के महामंत्री, पांडव-दूत के रूप में श्रीकृष्ण ने विदुर के घर साग (साधारण भोजन) खाकर भूख शांत की थी।

बिरिया = 1. समय, 2. बार

बिलानां = विलीन होना

बिषई = विषयी, विषय-वासना में लिप्त रहने वाला

बिषया = विषय-वासना

बिसिआर = चारों ओर फैलने वाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीठुला	=	1. विट्ठल, पंढरपुर में ईंट (विट) पर खड़ी (स्थल) बाल कृष्ण की प्रतिमा, 2. व्यापक ब्रह्म
बूठा	=	बूढ़ा, डूब गया
बीहूं-बीहूं	=	1. विट्ठल, 2. देखो देखो, 3. भयानक
बेनु	=	वीणा
बेरिया	=	बेला या समय
बेढ़ी	=	कारीगर, छान बनाने (छाने) वाला
बैरागर	=	व्रजाकर, हीरे की खान
बैसंदर	=	वैश्वानर, आग
बैस्नौ	=	वैष्णव
बोरै, बउरी	=	पागल
बोलि धूं	=	बोलूँगा या कहूँगा
भगरा	=	1. धोखेबाज, 2. भांग पीने वाला, 3. पागल
भर्तार	=	पति
भभीखन	=	विभीषण, लंकेश रावण का भाई, राम का भक्त
भवन	=	भुवन या संसार
भूचर	=	योग-मुद्रा
भेला	=	बेड़ा या नाव
भैचकि	=	डरकर या भयभीत होकर
भैला	=	1. विद्यमान, 2. भेंट, 3. छाया हुआ
भैसर	=	भैंस
भौवे	=	भव या संसार
मंझा	=	मेरा
मंत्र उपायौ	=	विचार-विमर्श किया
मंत्रावला	=	श्रेष्ठ मंत्र
मंदिर, मंदरि	=	1. देवालय, 2. गृह, 3. शरीर
मांडी	=	लिखकर या अंकित करके
मांडीअले	=	केन्द्रित
मांदल	=	विशेष वाद्य-यंत्र
मगोल	=	मंगोल, इतर शासक
मछर	=	मत्सर
मसकीन	=	1. लाचार, 2. विवश, 3. निर्धन, 4. विनम्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मसीत, मसीति	=	मस्जिद
महणारंभ	=	नाद
महियल	=	पृथ्वी
मांडवी	=	परोसी
माखन	=	1. दूध, 2. मक्खन
मारकंडे > मार्कण्डेय	=	एक ऋषि, जिन्होंने घर या कुटी न बनाकर, सिर पर तृण रखकर अपना समय व्यतीत किया था।
मूनै	=	मुझे
मैमंत	=	हाथी
मिथिआ	=	मिथ्या
मीना	=	मछली
मीर मुकुंद	=	मुक्ति देने वाले
मूली, मुरी	=	वह जड़, जिसे खिलाकर ठग अपने शिकार को बेहोश कर देते थे।
मेहेर	=	कृपा या दया
मैमत > मैमंत	=	1. मदमत्त, 2. गर्वीला
मोखि	=	मोक्ष
मोदी	=	परचूनिया, भंडारी
मोटा	=	1. बड़ा, 2. महान, 3. स्थूल
यंद्र	=	इन्द्र या देवराज
रांचिला	=	रंग गया
रांची	=	छिपती
रांडी	=	विधवा
रांदी	=	रांधना
रजबल	=	1. राज्य बल, 2. राज्य वैभव
रतन	=	1. परम सत्य, 2. रत्न
रूखड़ी	=	रूखी या घृत रहित
रूंडा	=	श्रेष्ठ
रूडो	=	प्रिय
रूढा	=	रुष्ट, अप्रसन्न
लांगत	=	लंगडाते
लटकी	=	झूठ
लाड लडै	=	प्यार करे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाधो	=	1. लाधना, 2. पाना, 3. प्राप्त करना
लाहके	=	छोड़कर
लिंब	=	नीम
लींगु	=	शिवलिंग
लोई	=	लोग
लोकांइ	=	निंदा करना, लोकापवाद
लौरू > लवरू	=	लवा पक्षी
वागा	=	वस्त्र सीना
विगोवै	=	व्यर्थ बिताना
विभौ	=	1. वैभव, 2. इन्द्र का पद
वेधिला	=	आकर्षित हुआ
वोडो	=	ओढ़ो
वोडो कंध	=	सहारा देना
श्रबेसुर	=	सर्वेश्वर, ईश्वर
श्रवननि	=	कानों से
षट् क्रम > षट् कर्म	=	1. शास्त्र विहित ब्राह्मणों के छह कर्त्तव्य (अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह); 2. छह तांत्रिक कर्म (मारण, उच्चारण, स्तंभन, वशीकरण, शांति, विदूषण); 3. योग संबंधी छह कर्म (धौती, वस्ती, नेती, त्राटक, नौलिक, कपाल भाती)
षट दरसन > षट-दर्शन	=	(न्याय, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा, वैशेषिक)
संडा मरका > शंडा मर्क	=	असुरों का गुरु, प्रह्लाद का शिक्षक
सांकडै	=	बंधन
सांडी	=	साँडनी या ऊँटनी
सगाई	=	संबंध
सपत पूरी	=	सप्त पुरी (पुरियाँ)—अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका और द्वारका। ये मोक्ष देने वाली मानी गई हैं।
सरजीव	=	सजीव
सरवगि	=	1. सर्वज्ञ, 2. सरावगी (जैन मतानुयायी)
सहनक	=	थाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहर विसहर	=	प्रत्येक स्थान पर
सहेटा	=	1. सप्रेम, 2. संकेत स्थल
साकत	=	शाक्त, शक्ति का उपासक
साखित	=	1. गिरा हुआ, 2. नष्ट, 3. पतित
साती	=	साथी, साथ
सायर	=	सागर
सावध	=	सावधानी से
सारंग	=	1. मृग, 2. नाना वर्ण, 3. रंजित
सिआम	=	श्याम, कृष्ण
सिंघच भोजनु	=	1. सिंह का भोजन, 2. हिंसा
सिंबल	=	सेमल
सींवनां	=	वस्त्र
सुदामा	=	कृष्ण का सहपाठी। श्रीकृष्ण ने राज-पाट देकर उसकी निर्धनता को दूर कर दिया था।
सुन्न, सुनि	=	शून्य, हठयोग के अनुसार कुण्डलिनी जाग्रत होकर जिस अंतिम चक्र में पहुँचती है उसे शून्य या ब्रह्म रंध्र कहते हैं।
सुन्ने	=	सोना
सुरता	=	श्रोता
सुरति, सुरती	=	1. काम क्रीड़ा, विहार
सुरत	=	1. ध्यान, 2. स्मृति, 3. समाधि
सुरही	=	1. गाय, 2. सुर ही, 3. सुगन्धि
सुत्रधारी	=	1. संचालक, 2. ईश्वर, 3. सूत्रधार
सूर्य	=	हठयोग में पिंगला नाड़ी का प्रतीक, 2. दिनकर
सेलमसेल	=	सोऽहं, सोऽहं
सेवग	=	सेवक
सोइन	=	स्वर्ण
हमचीं	=	हमारा
हमिता	=	अहं भाव
हरनाकसिब	=	हिरण्यकश्यप, असुरराज तथा प्रह्लाद का पिता, जिसका वध विष्णु ने नृसिंह रूप धारण करके किया था।
हरिकारी	=	औषधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंगन	=	हींग
हिंवालै	=	हिमालय
हींगल	=	1. हींग, 2. पारा व गंधक का रासायनिक मिश्रण
हिंगूलू	=	हींग, सोना

दादू द्वारा की पाण्डुलिपि क में दिए गए दो पदों के शब्दार्थ

पद-75

लटक्या	=	झूठा
मोती	=	मन
मंझै डोलैं	=	मांहिली आंखैं
छेली	=	आत्मा
बाघ	=	काल
न्यौल	=	मन
उड़त	=	उन्मनीं
पंख	=	परमेश्वर-प्रीति
पग	=	दृढ़ निश्चय
लौरू के पंख	=	मन
बबूल घीवडला	=	भाव-भक्ति
साखी	=	तन, मन, वृष बबूल का, दादू संषा सब दहै
संषा	=	सबद
सुनहां	=	संशय
मींडक	=	मन
सरप	=	संशय (शंका)
ब्रांट	=	ब्रह्म देश (दूसरा ब्रह्मांड)
गांझी	=	ज्ञान
दूध	=	राम-रस
चौदह लोक	=	मटका
झूठा जीव घड़नहार	=	गोविंद
कीड़ी	=	मनसा
पंख	=	प्रीति
डोलै	=	ब्रह्मांड
बाटी	=	सूर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साखी	=	दादू झूठा जीव है।
विष्नदास	=	गुरु उक्ति (अनभै वाणी)
छांगैं	=	कहैं
सांगीं	=	भेषधारी

पद-236

1.	तैसी चूकिली	=	अैसी चुपड़ी
2.	ची गौड़ी	=	की मिठाई
3.	नैणती	=	न जानै
4.	सांकडै	=	संकट
5.	सिले संघात लेवै	=	चाकी साथ ले
6.	साचे बैरणे ते विघने	=	आरबल पीसी तिस विघ्न
7.	नेतया रस साचे	=	न जाने यहु रस साचा
8.	कमलनी दुरदुरा ऐकै जुबिटा	=	कमल अरु मेढ़क का इकट्ठा
9.	पवमल मधुकर घिवन गैला	=	भंवर सूंघन लागा
10.	थानां चया़ दूधा न होसी बरपड़ा	=	थन का न होसी चाह
11.	असुध सेव्तां गूचड़ा जन्म गैला	=	सध्र पीव्रता चीचड़ा गया
12.	तुझी तुझ देखतां	=	तुझे ही देखकर
13.	अंमृत सेवितां च बिनैंणती	=	अमृत के साथ स्वाद न जानैं

□□

135466

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A		21.2.04
Cl		20-4-4
Cat		11
Ta		11
Fil		11
E.A		30-4-04
A		20-4-4

Recommended By डॉ. संतराम वैश्य

Entered ... Database
Signature with Date 19/6/04

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० गोविंद रजनीश

जन्म

10 सितंबर, 1938 को राजस्थान के वैर कस्बे में

शिक्षा

राजस्थान विश्वविद्यालय से एम०ए०
आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० और डी०लिट्०

सैंतीस वर्षों तक विश्वविद्यालयों में अध्यापन
1 जुलाई, 1999 को प्रोफेसर-पद से सेवानिवृत्त
इस दौरान उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा-सलाहकार तथा क० मुं० हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ के निदेशक रहे। जाने-माने साहित्यकार। तीस पुस्तकें प्रकाशित। पत्र-पत्रिकाओं के लिए नियमित लेखन

प्रमुख रचनाएँ

आलोचना

'समकालीन हिंदी कविता की संवेदना', 'साहित्य का सामाजिक यथार्थ', 'पुनश्चिंतन', 'समसामयिक हिंदी कविता : विविध परिदृश्य', 'रांगेय राघव का रचना-संसार', 'नयी कविता : परिवेश, प्रवृत्ति और अभिव्यक्ति'

संपादन

'रहीम ग्रंथावली', 'सत्यनारायण ग्रंथावली', 'रैदास रचनावली', 'नामदेव रचनावली', 'पंचामृत और पँचरँग', 'बखना रचनावली', 'हिंदी की आदि और मध्यकालीन फागु कृतियाँ'

लोकसाहित्य

'लोक महाकाव्य : आल्हा', 'हरदौल लोकगाथा', 'राजस्थान के पूर्वी अंचल का लोकसाहित्य', 'ब्रज की लोकगाथाएँ'

साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन लिट्रेचर' के छह खंडों के लिए लेखन

सहस्राब्दी विश्व हिंदी सम्मेलन, केंद्र सरकार, उ०प्र० सरकार, उ०प्र० हिंदी संस्थान, सत्यनारायण-स्मारक-समिति, आगरा विश्वविद्यालय तथा लोक परिषद् से सम्मानित एवं पुरस्कृत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible] प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar